Rs. 15

हिन्दी भाषियों की मासिक पत्रिका

क्रान्ति

सितम्बर 2010

- जिहाद, आतंकवाद और मुसलमान
  –अब्दुल हन्नान नदवी
- पारिवारिक जीवन कैसे बने सुखमय ?
  –उषा रानी अरोड़ा
- इन्सानियत का पैग़ाम और रमज़ान
  –विद्या प्रकाश
- आतंकवाद का नया सत्य
  –विश्व प्रताप भारती

Sham Bepari
Ph. : 2254132

DILKHUSH
Chicken Center

Halal live Chicken



Stall No.360,1st floor,(Above Mutton Stall No.1),
Mapusa Muncipal Market, Mapusa- GOA.

DILKHUSH
Mutton Stall



Halal Fresh Mutton
& Chicken Parts

Stall No.1
Mapusa Muncipal Market, Mapusa- GOA.

Asif Khan.: 9386665296, 9934417909,9308184606

PATNA CAR
A House of Latest Accessories

Latest Car's Stereo, Seat's Cover, Remote Central Lock
Body Cover & All Accessories Items

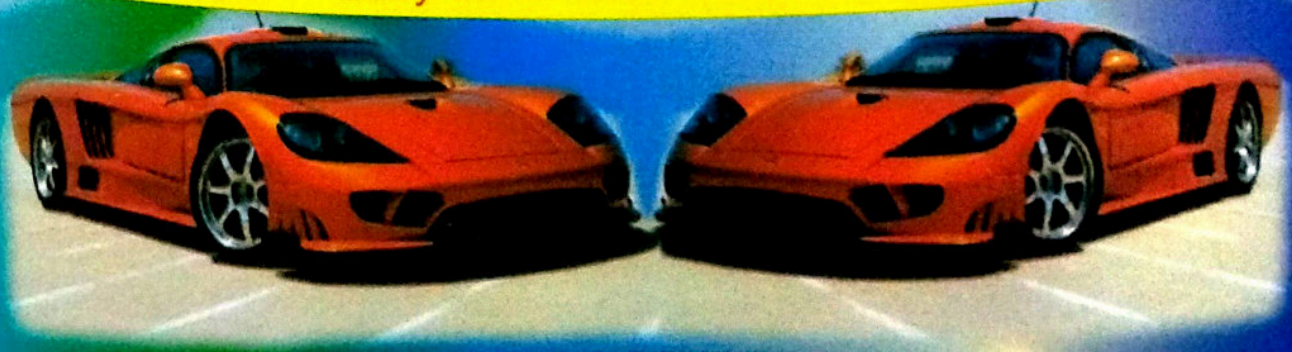

Opp. Chankya Cinema Hall, Exhibition Road, PATNA-1

आपकी आशाओं का सुन्दर प्रतिबिम्ब

हिन्दी भाषियों की मासिक पत्रिका

कान्ति

वर्ष 20 अंक 4 सितम्बर 2010

बराबर हो ही नहीं सकती भलाई और बुराई । तुम (मनुष्य की बुराई को) उस चीज़ से दूर करो जो उत्तम हो, फिर तुम क्या देखोगे कि तुम्हारे और जिसके बीच वैर था (वह ऐसा हो जाएगा) मानो वह कोई आत्मीय मित्र हो । (क़ुरआन)

संपादक

डॉ० मुहम्मद अहमद

अपने विचार, लेख, रचनाएं भेजने एवं संपादकीय मामलों के लिए लिखें–

संपादक, 'कान्ति' मासिक

डी-314, दावत नगर, अबुल फ़ज़्ल इन्कलेव

जामिया नगर, नयी दिल्ली–110025

ई मेल editorkanti@yahoo.com

* * *

ख़रीदार बनने, एजेंसी लेने, प्रचार-प्रसार एवं प्रबंधकीय मामलों के लिए लिखें–

प्रबंधक, 'कान्ति' मासिक

डी-314, दावत नगर, अबुल फ़ज़्ल इन्कलेव

जामिया नगर, नयी दिल्ली–110025

फोन–(011)–26949430

ई मेल kantimasik@gmail.com

सहयोग राशि

एक प्रति रु० 15/- विशेषांक रु० 25/-

वार्षिक रु० 160/-

दो वर्ष 300/- पांच वर्ष 700/-

सऊदी अरब और खाड़ी के देशों से–60 रियाल

यूरोप व अमेरिका से–25 US डॉलर

नोट–चेक / ड्राफ्ट 'मासिक कान्ति' के नाम से बनवाएं

ग़ज़ल

यही एक सबक़ दिया है मुझे मस्लके-वफ़ा ने
कि मैं जां को जां न समझूं जो तेरा कहा ना माने

तेरे इश्क़ के तक़ाज़े किसे जाएं हम बताने
कहीं मस्तियों के हीले कहीं होश के बहाने

भली रहनुमाइयां हैं भली नाख़ुदाइयां हैं
वही रुख़ क़रार पाया जो बता दिया हवा ने

उन्हें ज़ीनते-चमन[1] में कोई क्यों शुमार कर ले
अभी बर्क़[2] के भी क़ाबिल न हुए जो आशियाने

ब-ईं[3] इन्क़िलाबे-हरदम, बईं इर्तिक़ाए-पैहम[4]
तेरे नक़्शे-पा[5] से आगे न पहुंच सके ज़माने

उन्हें ग़म के मोड़ पर भी न ठहरने दे मुग़न्नी[6]
हदे-नश्शए-तरब[7] से तो गुज़र गये तराने ।

● **हफ़ीज़ मेरठी**

1. बाग़ की शोभा, वाटिका की सुन्दरता 2. बिजली 3. इसके बावजूद 4. लगातार तरक़्क़ी करते रहना 5. पद-चिन्ह 6. गायक 7. ख़ुशी के नशे की सीमा ।

प्रगति का झोंका

प्रगति का झोंका न जाने फिर किधर ले जाएगा ।
साथ में कुछ घरों के छप्पर मगर ले जाएगा ।।
धीरे-धीरे पी रहा है ये अंधेरा रोशनी ।
शाम तेरी सुबह तेरी दोपहर ले जाएगा ।।
फिर बने सागर के तट पर कुछ घरोंदे रेत के ।
सब्र कर कुछ देर में ही समन्दर ले जाएगा ।।
पंछियों को ये संदेशा मेरा यारो बोलना ।
तेरे ये सुरख़ाब के पर नोचकर ले जाएगा ।।
आग का दरिया हो जैसे आग होना 'ओम' अब ।
साथ अपने ये तेरा सारा शहर ले जाएगा ।।

ओम रायजादा
कटनी



कहां क्या है ?

ग़ज़ल	–हफ़ीज़ मेरठी	3
क़ुरआन ज्योति		5
रमज़ान के रोज़ों की अनिवार्यता (हदीस प्रभा)		6
आतंकवाद की हक़ीक़त (संपादकीय)		7
एक अहम प्रश्न (आपके पत्र)		8
कांच के टुकड़े	–श्रीकृष्ण सैनी	10
हज़रत मुहम्मद (सल्ल॰) के प्रिय साथियों की जनसेवा	–इरशाद आज़मी	11
हज़रत उम्मे दहदाह रज़ि॰ (नेकी के सिपाही)	–तालिब हाशमी	15
अनुपम व्यक्तित्व हज़रत मुहम्मद (सल्ल॰) का (उद्‌गार)		16
पारिवारिक जीवन कैसे बने सुखमय ?	–उषा रानी अरोड़ा	17
इन्सानियत का पैग़ाम और रमज़ान	–विद्या प्रकाश	21
आतंकवाद का नया सत्य (दृष्टिकोण)	–विश्व प्रताप भारती	22
साहित्य समाचार		23
पुस्तक समीक्षा		25
ग़ज़ल	–सैयद मुहम्मद असलम	25
जिहाद, आतंकवाद और मुसलमान	–अब्दुल हन्नान नदवी	26-27
चंगेज़ ख़ान और मुसलमान	–एहसान शौक़	31
उस्तरा (कहानी)	–विपिन बिहारी	35
धार्मिक आस्था के सार्वजनिक प्रदर्शन के नाम पर प्रदूषण	–विद्या प्रकाश	41
न्याय की समानता	–अबू मुहम्मद इमामुद्दीन रामनगरी	42
सम्मान के नाम पर हत्या		45
एंटीबायोटिक दवाओं के प्रति सावधानी बरतें (स्वास्थ्य चर्चा)		46
इंटरव्यू के समय ध्यान रखें (कैरियर)		47
डॉ॰ ज़ाकिर हुसैन (बालवीथी)		48

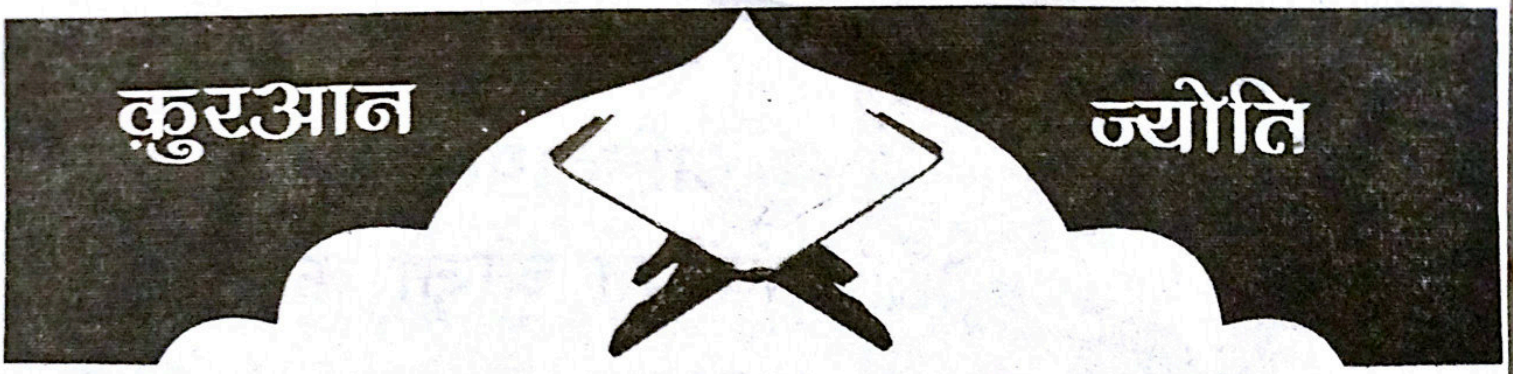

ऐ नबी, जब तुम इन लोगों के सामने कोई निशानी (अर्थात् चमत्कार) पेश नहीं करते तो ये कहते हैं कि तुमने अपने लिए कोई निशानी क्यों न चुन ली ?[151] इनसे कहो, "मैं तो केवल उस वह्य (प्रकाशना) की पैरवी करता हूं जो मेरे रब ने मेरी ओर भेजी है। ये विवेक की रोशनियां हैं तुम्हारे रब की ओर से और पथ प्रदर्शन एवं रहमत है उन लोगों के लिए जो इसे अपनाएं।[152] जब क़ुरआन तुम्हारे सामने पढ़ा जाए तो उसे ध्यान से सुनो, शायद कि तुम पर भी रहमत हो जाए।"[153]

–क़ुरआन, 7 : 203,204

151. इन्कार करनेवालों के इस सवाल में एक खुली व्यंग्य-शैली पायी जाती थी, अर्थात उनके कहने का मतलब यह था कि मियां जिस तरह तुम नबी बन बैठे हो, उसी तरह कोई चमत्कार भी छांटकर अपने लिए बना लाए होते, लेकिन आगे ज्ञातव्य हो कि इस व्यंग्य का जवाब किस शान से दिया जाता है।

152. अर्थात्, मेरा पद यह नहीं है कि जिस चीज़ की मांग हो या जिसकी मैं स्वयं ज़रूरत महसूस करूं उसे स्वयं गढ़कर पेश कर दूं। मैं तो एक रसूल हूं और मेरा पद केवल यह है कि जिसने मुझे भेजा है उसकी हिदायत पर अमल करूं। चमत्कार के बजाय मेरे भेजनेवाले ने जो चीज़ मेरे पास भेजी है, वह यह क़ुरआन है। इसके अन्दर विवेकपूर्ण रोशनियां मौजूद हैं और इसकी सबसे उभरी हुई विशेषता यह है कि जो लोग इसको मान लेते हैं, उनको जीवन का सीधा रास्ता मिल जाता है, और उनके सुचरित्र में अल्लाह की रहमत की निशानियां स्पष्ट दिखायी पड़ने लगती हैं।

153. अर्थात् यह जो तअस्सुब और हठधर्मी की वजह से तुम लोग क़ुरआन की आवाज़ सुनते ही कानों में उंगलियां ठूंस लेते हो और शोरगुल मचाते हो, ताकि न स्वयं सुनो और न कोई दूसरा सुन सके, इस नीति को छोड़ दो और ध्यान से सुनो तो सही कि इसमें शिक्षा क्या दी गयी है। हो सकता है कि इसकी शिक्षा को जान लेने के बाद तुम स्वयं भी उसी रहमत के हिस्सेदार बन जाओ जो ईमान लाने वालों को प्राप्त हो चुकी है। विरोधियों की व्यंग्यपूर्ण बात के जवाब में यह ऐसी सूक्ष्म व मधुर और मनमोहक प्रचार-शैली है कि इसकी विशेषता अवर्णनीय है। जो व्यक्ति प्रचार (तब्लीग़) की हिकमत सीखना चाहता हो वह अगर ध्यान दे तो इस जवाब में बड़ी शिक्षा पा सकता है।

इस आयत का अस्ल मक़सूद (अभीष्ट) तो यही है जो हमने ऊपर बयान किया है, लेकिन प्रासंगिक रूप से इससे यह आदेश भी निकलता है कि जब अल्लाह का कलाम पढ़ा जा रहा हो तो लोगों को अदब से ख़ामोश हो जाना चाहिए और ध्यानपूर्वक उसे सुनना चाहिए। इसी से यह बात भी निकलती है कि इमाम जब नमाज़ में क़ुरआन की तिलावत कर रहा हो तो नमाज़ियों को ख़ामोशी के साथ उसको सुनना चाहिए। लेकिन इस मसले में इमामों के बीच मतभेद पैदा हो गया है। इमाम अबू हनीफ़ा (रह०) और उनके लोगों का मत यह है कि इमाम चाहे ऊंचे स्वर में तिलावत करे या अपने मस्तिष्क में ख़ामोशी के साथ करे दोनों सूरतों में नमाज़ियों को ख़ामोश ही रहना चाहिए। इमाम मालिक (रह०) और इमाम अहमद (रह०) की राय यह है कि केवल ऊंचे स्वर में तिलावत की सूरत में नमाज़ियों को ख़ामोश रहना चाहिए, लेकिन इमाम शाफ़ई इस तरफ़ गये हैं कि दोनों सूरतों में नमाज़ियों को क़िरअत करनी चाहिए क्योंकि कुछ हदीसों के आधार पर वे समझते हैं कि जो व्यक्ति नमाज़ में सूरह फ़ातिहा न पढ़े, उसकी नमाज़ नहीं होती।

पवित्र क़ुरआन
को इंटरनेट पर पढ़िए
www.quranhindi.com

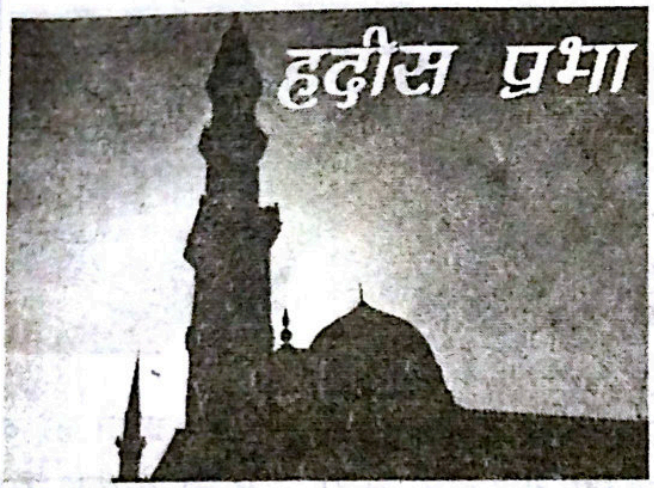

रमज़ान के रोज़े की अनिवार्यता और उनसे संबंधित चीज़ों का माहात्म्य

● हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि॰) से रिवायत है कि अल्लाह के रसूल (सल्ल॰) ने कहा : "गौरव का स्वामी प्रतापवान अल्लाह कहता है : आदम के बेटे (मनुष्य) का प्रत्येक कर्म उसके लिए है सिवाय रोज़े के, क्योंकि वह मेरे लिए है और मैं ही उसका बदला दूंगा, और रोज़ा ढाल है । अत: जब तुममें से किसी का रोज़े का दिन हो, तो न तो अश्लील बात ज़ुबान पर लाए और न शोर व हंगामा करे । अगर कोई उससे गाली-गलौज करे या लड़ाई पर आमादा हो तो रोज़ेदार यह कह दे कि मैं रोज़े से हूं । और उसकी क़सम जिसके हाथ में मुहम्मद (सल्ल॰) की जान है, रोज़ेदार के मुंह की बू अल्लाह की निगाह में मुश्क की बू से ज़्यादा बेहतर है । रोज़ेदार के लिए दो ख़ुशियां हैं जो उसे प्राप्त होंगी : जब वह रोज़ा खोलता है तो उसे ख़ुशी प्राप्त होती है और जब अपने रब से मिलेगा, तो उसे अपने रोज़े के कारण ख़ुशी होगी ।"

–बुख़ारी, मुस्लिम

ये शब्द बुख़ारी की रिवायत के हैं और उन्हीं की एक रिवायत में है : "वह अपने खाने-पीने और अपनी कामेच्छा को मेरे लिए छोड़ देता है । रोज़ा मेरे लिए है और मैं ही उसका बदला दूंगा और नेकी का बदला दस गुना मिलेगा ।"

मुस्लिम की एक रिवायत में है : "आदम के बेटे के हर कर्म का सवाब दस गुना से सात सौ गुना तक बढ़ाया जाता है । अल्लाह तआला कहता है : किन्तु रोज़े की बात और है क्योंकि वह मेरे ही लिए है और मैं ही उसका बदला दूंगा । वह अपनी कामेच्छा और अपने खाने को मेरे लिए छोड़ देता है । रोज़ेदार के लिए दो ख़ुशियां हैं : एक ख़ुशी तो रोज़ा खोलने के समय होती है और एक अपने रब से मुलाक़ात करते समय होगी । और उसके मुंह की बू अल्लाह की निगाह में मुश्क की बू से ज़्यादा बेहतर है ।"

● हज़रत सहल बिन सअद (रज़ि॰) से रिवायत है कि नबी (सल्ल॰) ने कहा : "जन्नत में एक द्वार है जिसे 'रैयान' कहते हैं । क़ियामत के दिन उसमें से रोज़ेदार प्रवेश करेंगे । उनके सिवा कोई और उससे प्रवेश न करेगा । कहा जाएगा : रोज़ेदार कहां हैं ? वे उठेंगे । उनके सिवा कोई और उससे प्रवेश न करेगा । फिर जब वे दाख़िल हो जाएंगे, तो उस द्वार को बन्द कर दिया जाएगा, फिर कोई उससे प्रवेश न करेगा ।"

–बुख़ारी, मुस्लिम

● हज़रत अबू सईद अल-ख़ुदरी (रज़ि॰) से रिवायत है कि अल्लाह के रसूल (सल्ल॰) ने कहा : "जो बन्दा एक दिन अल्लाह की राह में रोज़ा रखता है, तो अल्लाह उस दिन के बदले उसके चेहरे को अवश्य ही आग से सत्तर साल की यात्रा के फ़ासले तक दूर कर देता है ।"

–बुख़ारी, मुस्लिम

● हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि॰) से रिवायत है कि नबी (सल्ल॰) ने कहा : "जिसने रमज़ान का रोज़ा ईमान के साथ और सवाब के लिए रखा उसके पिछले गुनाह माफ़ कर दिये जाते हैं ।"

–बुख़ारी, मुस्लिम

आतंकवाद की हक़ीक़त

इसे विचित्र किन्तु सत्य कहेंगे । संघ के विचारक एवं लेखक श्री आर०एस० गोयल ने एक इंटरव्यू में यह स्पष्ट कर दिया है कि 'हिन्दुत्व' के लोग आतंक फैला रहे हैं और अजमेर, हैदराबाद और मालेगांव के बम धमाकों में उनका हाथ है । गोयल जी का यह वक्तव्य उस समय आया है, जब राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के एक अन्य विचारक एम०जी० वैद्य उर्फ़ बाबूराव वैद्य ने एक मराठी दैनिक में प्रकाशित एक आलेख में मीडिया में 'हिन्दू आतंकवाद' शब्द के लगातार बढ़ रहे इस्तेमाल पर चिंता ज़ाहिर की और यह अनर्गल आरोप भी मढ़ डाला कि देश में मुस्लिम मतदाताओं को लुभाने और हिन्दुओं को बदनाम करने के लिए 'हिन्दू आतंकवाद' शब्द का इस्तेमाल किया जा रहा है । एक ही संगठन से जुड़े लोगों के उक्त दोनों वक्तव्यों पर विचार किया जाए तो पहली बात यह सामने आती है कि दोनों वक्तव्य एक दूसरे के ख़िलाफ़ हैं । दूसरी बात यह निकलती है कि दोनों में से कोई एक ही सच है । चूंकि कई विस्फोटों और कांडों में हिन्दू आतंकी पकड़े जा चुके हैं और उनके ख़िलाफ़ जांच-प्रक्रिया या न्यायालयों में कार्यवाहियां चल रही हैं, इसलिए भी 'हिन्दू आतंकवाद' की वास्तविकता स्वपुष्ट हो जाती है ।

इस स्थिति में वैद्य जी जो कुछ लिखते हैं, वह महज़ वास्तविकता पर परदा डालकर हिंसक गतिविधियां जारी रखने के लिए है । 'हिन्दू आतंकवाद' का इतिहास पुराना है । देश की स्वतंत्रता के बाद यदि इस पर दृष्टिपात करें तो पाएंगे कि कई बड़ी आतंकी घटनाओं में इस आतंकवाद का पूरा हाथ रहा है । हम यहां कुछ घटनाओं पर सरसरी तौर पर एक नज़र डालने की कोशिश करेंगे । 1947 में लालकृष्ण आडवाणी के कराची स्थित आवास में जिनाह को मारने के लिए बम तैयार किया जा रहा था, तभी इसकी जानकारी सुरक्षा बलों को हुई और छापेमारी में आडवाणी के कई लोग पकड़े गये, जिन्हें सज़ा भी मिली । आडवाणी वहां से फ़रार होने में सफल रहे । इसी क्रम में मदनलाल पाहवा ने गांधी जी को टारगेट करके बम फेंका, हालांकि इसकी पुष्टि नहीं हो पायी है कि संघ से पाहवा का क्या रिश्ता था, लेकिन गांधी जी के हत्यारे नाथूराम गोडसे के बारे में सभी जानते हैं कि वह हिन्दू संगठन से जुड़ा हुआ था । स्वतंत्रता के बाद हुए हज़ारों साम्प्रदायिक दंगों में हिन्दू आतंकियों का हाथ रहा है, यहां तक कि गुजरात में जो मुसलमानों का संहार करने में हिन्दू आतंकियों ने सरकारी मशीनरी का भरपूर इस्तेमाल किया । बाबरी मस्जिद विध्वंस और उसके बाद की हिंसा में हिन्दू संगठन पूरी तरह लिप्त पाये गये ।

सनातन संस्था, अभिनव भारत, रामसेना आदि जो नवागंतुक आतंकी संगठन हैं, उनकी देशद्रोहक हिंसक गतिविधियों से अब सभी परिचित हैं । संघ, उसके उपांगिक संगठन विश्व हिन्दू परिषद और बजरंग दल की विध्वंस गतिविधियां भी ढकी-छिपी नहीं हैं । इन सभी के हिंसाचार से पूरा देश त्रस्त है । कंधमाल-कांड किसने अंजाम दिया ? इन्हीं आतंकियों ने अभी पिछले दिनों दिल्ली में 'हेडलाइंस टुडे' के कार्यालय पर हमला किया । साथ ही मुंबई में जी-24 के कार्यालय में तोड़फोड़ की । इन्होंने पिछले वर्ष सी०एन०एन०-आई०बी०एन० के कार्यालय पर हमला किया था । इसे विडम्बना ही कहेंगे कि इनके हिंसाचार पर पुलिस और सुरक्षा बलों के साथ-साथ प्रशासन भी समर्थनवादी रवैया अपनाता है । कभी-कभी तो ऐसा लगता है कि इन्हें प्रोत्साहित किया जा रहा है । आवश्यकता इस बात की है कि आतंकवाद को समूल नष्ट किया जाए और उसके प्रति नरमी न बरती जाए । आतंकवाद तो आतंकवाद होता है हिन्दू या मुस्लिम नहीं । अतः उलटबांसियों से काम न लेकर आतंकवाद की हक़ीक़त स्वीकार करनी चाहिए ।

एक अहम प्रश्न

आज देश में धर्म के प्रति लगाव पहले से ज़्यादा दिखायी देता है और लोग दिल खोलकर ख़र्च भी करते हैं । इतना ही नहीं अब पहले से ज़्यादा साधु-संत भी सभी सम्प्रदायों मे हो गये हैं जो समय-समय पर धर्मोपदेश देते हैं । इतना सब होने के उपरांत भी नैतिकता में वृद्धि नहीं हुई और ऐसा कोई अवसर नहीं गंवाना चाहते भले ही अनैतिक कार्य हो जिससे इसे धन की प्राप्ति होनी हो । सभी धर्म कहते हैं आपस में प्रेम-वात्सल्य, सौहार्द्र, भाईचारा रखा जाए, लेकिन समय आने पर होता है उल्टा । आख़िर ऐसा क्यों होता है, इस प्रश्न का उत्तर ढूंढ़ने से भी नहीं मिलता, क्योंकि उत्तेजना फैलाने वाले स्वयं हमारे धार्मिक नेता ही होते हैं । धर्म कहता है आपस में प्रेम रखना चाहिए परन्तु हमारे साधु-संतों में भी यह बात देखने को नहीं मिलती । ले-देकर सभी प्रकार के हमारे नेता फूट डालो और राज करो नीति पर चल रहे हैं । इस प्रकार की नीति का स्वाद हमने पहले भी चखा था और वर्तमान में भी चख रहे हैं, लेकिन फ़ायदा देश का नहीं होता । अत: सभी लोग मिलकर इस अहम प्रश्न पर संवाद करें और एक आचारसंहिता सुनिश्चित करें तो सभी का कल्याण निश्चित है।

घेवरचन्द गोदीका

किशनपोल बाज़ार, जयपुर

सराहनीय

हिन्दी भाषियों की मासिक पत्रिका 'कान्ति' का मई 2010 का अंक प्राप्त हुआ धन्यवाद । पत्रिका में समाहित सभी रचनाएं ज्ञानवर्धक व चिन्तनशील है । साहित्य की सेवा कर आप इस 'कान्ति' के माध्यम से समाज में ज्ञान की जो अलख जगा रहे हैं वह निश्चय ही सराहनीय है । समय के साथ-साथ 'कान्ति' समाज में एक क्रान्ति लाने का प्रयास करेगी, ऐसा मेरा विश्वास है । इसी अंक में पशुपति नाथ उपाध्याय, मुशर्रफ़ अली, विद्या प्रकाश, मुहम्मद अली शाह, डॉ॰ लतीफ़ अकबराबादी व मुहम्मद अहमद की रचनाएं मन भायी ।

मनोज कुमार खोलिया

ग्राम व क्षेत्र-मटेना, गरूड़, बागेश्वर-263641 (उत्तराखंड)

बढ़ती लूट-खसोट

'कान्ति' का अगस्त 2010 अंक पढ़ा । सभी रचनाएं श्रेष्ठ हैं । अभिराम सत्यज्ञ जयशील की कविता ''टूटी छत दूषित पानी'', संध्या वीरमानी की कविता ''ख़रीदा हुआ दूल्हा'' अच्छी लगी । घेवरचन्द गोदीका का पत्र ''समस्या का समाधान कैसे हो'' पढ़ा, पत्र में सही मुद्दा उठाया गया है ।

आज ग़रीब-ग़रीब होता जा रहा है और अमीर अमीर होता जा रहा है । दोनों के बीच की खाई चौड़ी होती जा रही है । इसे समय रहते रोकना होगा ।

लूट-खसोट और चोरी डाके की घटनाएं भी दिन प्रतिदिन बढ़ती जा रही हैं । महिलाओं के गले की चेन खींचने की घटनाएं आम हैं, अब तो लुटेरे इतने ढीठ हो गये हैं कि वे पुरुषों को भी नहीं छोड़ते ।

फ्रिज में रखा पानी
बर्फ़ बन जाता है
मन में रखा वैर
क्रोध बन जाता है ।

जो जीना चाहो वर्षों
सिगरेट कभी न पीना
सिगरेट कैंसर लाती है
शरीर को रोगी बनाती है ।

यशपाल जैन आदर्श

राजापार्क, जयपुर

रमज़ान की विशेषताएं

संपादकीय (अगस्त अंक 2010) में पढ़ा कि 'रमज़ान माह नेकी, भलाई, सहायता, सहानुभूति और सहनशीलता आदि का प्रशिक्षण मास है । भलाई और ईश्वरपरायणता का दायरा बहुत विस्तृत है ।

चन्द्रप्रकाश आर्य

आर्य निवास,

करनाल (हरियाणा)

महंगाई की समस्या

देश में महंगाई का बढ़ना अत्यधिक चिंता का विषय बन गया है । दैनिक खानपान की वस्तुओं में मूल्य वृद्धि से जनजीवन तो प्रभावित हो ही गया है, उसके उपभोग में आवश्यक गैस सिलेंडरों की मूल्य वृद्धियों ने भी हलकान कर दिया है । कुछ दिनों पूर्व गैस सिलेंडरों के मूल्य की अनुचित वृद्धि की गयी थी तथा मनचाहे समय की उपलब्ध ता पर सेवा शुल्क के रूप में 25-50 रुपये की पुन: अप्रत्यक्ष वृद्धि कर दी गयी । इससे स्पष्ट हो गया है कि सेवा शुल्क के अन्य माध्यमों में मनचाहे दिन तथा मनचाही तिथियों पर भी मूल्य वृद्धियां की जा सकती हैं । जबकि उपरोक्त वृद्धियों को रद्द कर गैस सिलेंडरों की उपलब्धता को अनिवार्य सेवा के अन्तर्गत लाया जाना चाहिए तथा निम्न संबंधित समस्याओं का निराकरण भी किया जाना चाहिए–● गैस सिलेंडरों की बुकिंग को भीड़ मुक्त किया जाना चाहिए ● ग्राहकों की 15-20 दिनों की प्रतिक्षा सीमा को घटाया जाए ● पारिवारिक सदस्यों के अनुसार 2-5 दिनों के पूर्व ही उसे सिलेंडर उपलब्ध कराया जाए ● कई बार ग्राहकों के दरवाज़े तक सिलेंडर पहुंचाने के बजाए उसकी कालाबाज़ारी कर दी जाती है तथा उसकी अनुपलब्धता जैसी मिथ्या जानकारी को दर्ज करा दिया जाता है ● सिलेंडरों के वितरण के समय अतिरिक्त राशि अवैध रूप से वसूली जाती है । अतएव इन कारणों को दूर कर बुकिंग तथा वितरण में होने वाली लापरवाहियों पर दंड निर्धारित किया जाना चाहिए ।

मलिक

नागपुर, महाराष्ट्र

सहिष्णुता बढ़े

राजनेता व राजनीतिक दल मानवीय रिश्तों को मज़बूत करने के लिए अपना जनाधार बढ़ाएं, व्यक्तिगत उठा-पटक से दूर रहकर ज़रूरतमंदों की समस्याओं को हल करें । विशेष तौर पर महिलाओं के उत्थान के लिए प्रयासरत रहें । हमें सद्भावना के साथ देश विरोधी ताक़तों का विरोध करना है । सुख, शांति और अहिंसा का पैग़ाम देकर अपनी संस्कृति और सभ्यता को क़ायम रखना है । सामाजिक जीवन की सबसे बड़ी समस्या यह है कि व्यक्ति अनेक लोगों के साथ रहता है वह कमियों को और विशेषताओं को सहन नहीं कर पाता सहिष्णुता का विकास शक्ति का विकास है । हमारा मौलिक चिंतन इतना कम हो चुका है कि हम कोई संकल्पना विकसित नहीं कर पा रहे हैं । धर्म के नाम पर गुंडागर्दी और दादागीरी नहीं करना चाहिए । पुलिस एक्ट को बदलना चाहिए क्योंकि यह फ़िरंगियों का क़ानन है ।

डॉ॰ एस॰एम॰ शफ़ी

सतना, म॰प्र॰

इस्लाम-परिचय

हिन्दी वेबसाइटें

www.islamdharma.org
www.islamicwebdunia.com
www.islamic-videos.com

देश का दुश्मन भ्रष्टाचार

हमारे देश में भ्रष्टाचार तेज़ी से फैल रहा है, संसद विधानसभाएं, नौकरशाही, मीडिया यहां तक कि अदालतें भी भ्रष्टाचार से नहीं बची हैं । मधु कोड़ा, मायावती, बंगारू लक्ष्मण, जार्ज फार्नांडीस, सुखराम, पी॰डी॰ दिनाकरण, सुमित्र सेन, डॉ॰ केतन देसाई जैसे भ्रष्टाचारी लोग करोड़ों-अरबों की जायदाद के मालिक बन बैठे । विभिन्न राजनीतिक दलों के नेता और मंत्री भ्रष्टाचार में लिप्त हैं ।

भ्रष्टाचारियों को कड़ी सज़ा मिलनी चाहिए । चीन में 14 अप्रैल को दो बड़े सरकारी अधिकारियों को भ्रष्टाचार में लिप्त पाये जाने पर मौत की सज़ा दी गयी । भ्रष्टाचार विशेषकर उच्च स्तर का लोकतंत्र ही नहीं पूरे देश एवं समाज को बरबाद कर देगा । देश की एकता और अखंडता ख़तरे में पड़ जाएगी । सख़्त सज़ाएं ही भ्रष्टाचार पर क़ाबू पाने में सहायक हो सकती हैं । सख़्त सज़ाओं के भय के साथ एक ईश्वर में आस्था और कर्मों के अनुसार प्रतिफल मिलने का दृढ़ विश्वास, भ्रष्टाचार को समाप्त करने में सहायक हो सकता है ।

हसनैन कैफ़

भंडारा, महाराष्ट्र

चलो शिक्षित बनें

पढ़ाते चलो...पढ़ते चलो...बढ़ते चलो रे...
देशवासियों को शिक्षित बनाते चलो रे...
सभी को शिक्षित बनाएं
साक्षरता के दीप हम जलाएं
शिक्षा की रोशनी फैलाएं
शिक्षा हमें है बहुत प्यारी...शिक्षित बनेगी जनता सारी...
पढ़ते चलो...पढ़ते चलो...बढ़ते चलो रे....

देशवासियों को शिक्षित बनाते चलो रे...
अज्ञान को हम मिटाएं
ज्ञान के फूल हम खिलाएं
शिक्षा का सुगंध हम फैलाएं
शिक्षा है बहुत ज़रूरी...वरना बढ़ेगी पल-पल लाचारी...
पढ़ाते चलो...पढ़ते चलो...बढ़ते चलो रे...
देशवासियों को शिक्षित बनाते चलो रे...
अक्षर से अक्षर सीखते जाएं...
शब्दों से शब्द जोड़ते जाएं...
वाक्यों से मधुर गीत गाएं...
शिक्षित होंगे सब नर-नारी...दुनिया देखती रह जाएगी सारी...
पढ़ते चलो...पढ़ते चलो...बढ़ते चलो रे...
देशवासियों को शिक्षित बनाते चलो रे...

संध्या वीरभानी सुभेदार
बैंक स्ट्रीट, हैदराबाद

'भारत में इस्लाम' पर एक सुझाव

मैं 'कान्ति' मासिक पत्रिका के साथ-साथ साप्ताहिक 'कान्ति' का भी पाठक हूं । पत्रिका में कुछ माह पूर्व प्रकाशित धारावाहिक लेख 'भारत में इस्लाम' जिसे इरशाद अली ख़ान जी ने प्रस्तुत किया था, पढ़ने का मौक़ा मिला । यह प्रस्तुति किसी पं॰ सुन्दर लाल जी की मूल किताब "भारत में अंग्रेज़ी राज" से संकलित है ।

गुज़ारिश है कि मैंने पं॰ सुन्दर लाल जी की इस पुस्तक को बहुत ढूंढ़ा, मगर नहीं मिल सका । अगर सुन्दर लाल की किताब कहीं उपलब्ध हो तो कृपया संपर्क साधन उपलब्ध कराएं । दूसरी बात यह कि इरशाद अली ख़ान साहब के द्वारा प्रस्तुत धारावाहिक को संकलित कर प्रकाशित करें तो मुझ जैसे दूसरे पाठकों के लिए अनमोल उपहार साबित होगा ।

शकीलुर्रहमान
शाहीन बाग़, नयी दिल्ली-25

पाक के बाढ़ पीड़ितों को सहायता

विश्व बैंक ने बाढ़ प्रभावित पाकिस्तान के लिए 90 करोड़ डॉलर (क़रीब 42 अरब रुपये) की वित्तीय मदद देने का फ़ैसला किया है । पाकिस्तान में आयी इस प्राकृतिक आपदा से एक करोड़ 40 लाख लोग प्रभावित हुए हैं, जबकि क़रीब 1700 लोगों की जान चली गयी है । बाढ़ से क़रीब 46 अरब रुपये की फ़सलें नष्ट हो गयी हैं ।

कांच के टुकड़े

मेरी ख़ातिर न था कुछ तेरे हाथ में
कांच के चंद टुकड़े थे सौग़ात में ।
कांच का जिस्म था कांच का दिल मिला
कांच के ख़ाब का सिलसिला-सिलसिला ।
आइनों से मेरा दिल सजाया गया ।
एक आलम खड़ा था मेरी घात में
सब थे पत्थर उठाए हुए हाथ में ।
एक तेरे हाथ में कोई पत्थर न था ।
भीड़ में एक तू ही सितमगर न था ।
तुझको देखा तो दिल मुतमईं हो गया
अपने जीने का कुछ-कुछ यक़ीं हो गया ।
फिर एकाएक तेरे हाथ ऊपर उठे
जिनमें गुल की जगह सिर्फ़ ख़ंजर ही थे ।
टूटकर कांच का दिल बिखरने लगा
एक दरिया चढ़ा था उतरने लगा ।
कांच के चूर पैरों में चुभने लगे
ख़ाब के सब दिये जल के बुझने लगे ।
पांव में ज़ख़्म है फिर भी चलता तो हूं
गिर के पैहम ज़मीं पर संभलता तो हूं ।
दर्द का, ज़ख़्म का, ज़िन्दगी नाम है
आशिक़ी का यही एक इनआम है ।

-श्रीकृष्ण सैनी
कैथ माजरी, अम्बाला शहर

धन के लिए पुत्री की बलि चढ़ायी

धन लोलुपता किसी परिवार पर इस क़दर हावी हो सकती है कि वह नरपिशाच हो जाए, इसका ज्वलंत प्रमाण लहरपुर थाना क्षेत्र के कुसेपा गांव में गत दिनों देखने को मिला । धन के लालच में यहां के एक परिवार के लोगों ने पुत्री की ही बलि चढ़ा दी । इस घटना की भनक जब दूसरों को मिली, तो वे भाग गये । घटना की जानकारी पाकर एस॰पी॰ ज्योति नरायन मौक़े पर पहुंचे और फ़रार परिवारजन तथा तांत्रिक को गिरफ़्तार करने के निर्देश दिये हैं ।

कुसेपा निवासी श्रीकृष्ण यादव आर्थिक तंगी से जूझ रहा था । उसके पास तीन-चार बीघा ज़मीन थी । वह मज़दूरी कर परिवार का भरण-पोषण करता था । इसी बीच उसकी मुलाक़ात लखीमपुर खीरी के ईशा नगर थाना क्षेत्र के ग्राम कुर्री निवासी तांत्रिक शिवकुमार से हुई ।

हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) के प्रिय साथियों की जनसेवा के सुनहरे पृष्ठ

❖ इरशाद आज़मी

इस्लामी राज्य के दूसरे ख़लीफ़ा हज़रत उमर (रज़ि०) थे । आपका जीवन अत्यंत साफ़-सुथरा, निर्मल और निखरा हुआ था । आप बहुत ही सदाचारी और मानवता के प्रतीक थे । जनता की सेवा तथा उसकी भलाई व कल्याण के लिए आप हर समय तत्पर रहते थे । ईशभय और परलोक के भय से रोते-रोते आपकी दाढ़ी भीग जाती थी । कभी-कभी रोते समय आपकी हिचकी भी बंध जाती थी । ख़लीफ़ा बनने के बाद आप रात को नगर तथा नगर के बाहर गश्त किया करते थे, ताकि राज्य की जनता आराम से सो सके और उन्हें कोई कष्ट न हो ।

एक रात हज़रत उमर (रज़ि०) गश्त पर निकले तो आपने देखा कि एक ख़ेमा है, उसके दरवाज़े पर एक व्यक्ति चिंतित बैठा है और ख़ेमे में से एक औरत के रोने की आवाज़ आ रही है । आप उस ख़ेमे के पास गये और उस व्यक्ति से उस औरत के रोने का कारण पूछा । उसने झिड़क कर कहा कि तुमसे क्या मतलब, अपना रास्ता देखो । आपने दोबारा कहा कि भाई मैं इसलिए पूछ रहा हूं कि हो सके तो मैं तुम्हारी कोई सहायता कर सकूं । उसने कहा कि मेरी बीवी को बच्चा पैदा होने वाला है, उसी तकलीफ़ से रो रही है ।

यह सुनकर आप घर गये और अपनी पत्नी को साथ ले आये और उस व्यक्ति से कहा कि मित्र यह मेरी पत्नी है, आज्ञा हो तो वह ख़ेमे के अन्दर जाए । उसने अनुमति दी, तो वे ख़ेमे के अन्दर चली गयीं । थोड़ी देर के बाद अन्दर से आवाज़ आयी, "अमीरुल मोमिनीन ! अपने मित्र को बधाई दीजिए, बेटा पैदा हुआ है ।" उस व्यक्ति को जैसे ही मालूम हुआ कि आप ख़लीफ़ा हैं तो वह बहुत घबराया । अपने किये गये व्यवहार पर लगा क्षमा मांगने । परन्तु आपने कहा कि कोई बात नहीं, जनता की सेवा तो हमारा कर्तव्य है । इतना कहकर आप अपनी पत्नी को लेकर घर चले आये ।

इस्लामी जगत के इतने बड़े शासक होने के बावजूद यह आश्चर्य होता है कि आपका जीवन कितना सरल व साधारण था । सरकारी कोष से केवल दो जोड़ी कपड़े लेते । एक जाड़े के मौसम में और दूसरा गर्मी के मौसम में । बाल-बच्चों के गुज़ारे के लिए औसत दर्जे का वज़ीफ़ा लेते थे । आपका खाना इतना सादा होता था कि कुछ लोग आपके साथ खाना पसन्द न करते थे । आपके शरीर पर जो कपड़ा था उसमें 14 पैबन्द लगे थे, जिनमें कुछ चमड़े के थे ।

एक रात की घटना है कि इस्लामी जगत के सच्चे सेवक, जनता के सच्चे हितैषी हज़रत उमर (रज़ि०) रात के समय गश्त पर निकले । रात बहुत अंधेरी थी । आपके साथ आपका सेवक असलम भी था । रात में दूर से जलती हुई आग दिखायी दी । आप अपने दास के साथ वहां पहुंचे, तो क्या देखते हैं कि एक औरत है, उसके कई बच्चे हैं, जो रो रहे हैं और हांडी आग पर चढ़ी है । हज़रत उमर (रज़ि०) निकट जाकर पूछते हैं कि यह बच्चे क्यों रो रहे हैं ? उस औरत ने कहा कि हमारा क़ाफ़िला आगे बढ़ गया है, इसलिए मैं यहीं पर रात काट रही हूं । ये बच्चे भूख से रो रहे हैं ।

हज़रत उमर (रज़ि०) ने फिर पूछा कि इस हांडी में क्या पका रही हो ? उस औरत ने कहा कि इस हांडी में केवल पानी है, ताकि हांडी को देखकर बच्चे चुप हो जाएं और सो जाएं । यह सुनते ही हज़रत उमर (रज़ि०) और आपके सेवक असलम दोनों बैतुलमाल की ओर तेज़ी से चल पड़े । अनाज के गोदाम में पहुंचकर एक बोरी आटा और खाने-पीने का कुछ दूसरा सामान लिया और अपने सेवक असलम से कहा कि मेरी पीठ पर लाद दो । असलम ने कहा कि नहीं ! मैं यह सामान उठाकर ले चलूंगा । हज़रत उमर (रज़ि०) ने कहा

कि अरे असलम ! क़ियामत के दिन भी मेरे गुनाहों को लादेगा ? इसलिए यह सामान मेरी पीठ पर उठा दे । हज़रत उमर (रज़ि॰) अपनी पीठ पर आटे की बोरी लादे हुए अपने सेवक असलम के साथ उस औरत और उसके बच्चे के पास पहुंच गये ।

वहां पहुंचकर आटे की बोरी सामने रख दी और सालन को हांडी में डाल दिया । आपने फ़रमाया कि ऐ अल्लाह की बन्दी, तुम हट जाओ, मैं पका देता हूं । यह कहकर आप आग फूंकने लगे और आटा गूंथकर रोटी पकाने लगे । असलम कहते हैं कि मैं अपनी आंखों से देख रहा था कि धुंआ आपकी दाढ़ी से निकल रहा था । पकाने के बाद आपने कहा कि बच्चों को खिलाओ, जब बच्चे अच्छी तरह खा चुके, तो आप अपने सेवक के साथ वहां से चल दिए । औरत दुआएं देने लगी, अल्लाह आपका भला करे । आप ही को अमीरुल मोमिनीन होना चाहिए । आपने कहा कि कोई बात नहीं, जब तुम सुबह अमीरुल मोमिनीन के पास आओगी, तो वहां मुझे पाओगी । यह था दो शक्तिशाली राज्यों का विजय करने वाला और सम्पूर्ण इस्लामी साम्राज्य का सम्राट । क्या आपके जीवन-चरित्र की एक-एक घटना हमारी समस्याओं का समाधान करने के लिए काफ़ी नहीं है ? हां, बिल्कुल है । मगर स्वार्थपरता और खुदग़र्ज़ी ने हमारे दिल पर अधिकार जमा लिया है । अपने सुख के अतिरिक्त किसी के सुख की हमें कोई चिंता नहीं । हमारे अन्दर जनसेवा, मानवसेवा और परोपकार की भावना कम हो चुकी है ।

हबीबे किबरिया हज़रत मुहम्मद (सल्ल॰) के सहाबा किराम की जनसेवा, आतिथ्य सत्कार बेमिसाल थीं । आपके सहाबा हज़रत अबू तलहा (रज़ि॰) ने आतिथ्य-सत्कार का जो उदाहरण पेश किया, उसे इतिहास कभी भुला नहीं सकता । वे एक सच्चे जनता के सेवक थे । घटना इस प्रकार है कि शाम का समय था । आप (सल्ल॰) का दरबार लगा हुआ था । उसी समय एक ग़रीब व भूखा व्यक्ति दरबार में हाज़िर हुआ । उसने अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल (सल्ल॰), मैं भूखा हूं, मुझे कुछ खिलाइए । आप (सल्ल॰) ने घर में पूछा कि क्या कुछ खाना है ? जवाब मिला कि पानी के अतिरिक्त कुछ नहीं है ।

जवाब सुनकर मानवता उपकारक (सल्ल॰) बड़ी चिंता में पड़ गये । तभी कुछ सोचकर आपने अपने सहाबा की तरफ़ देखकर कहा कि कोई है, जो मेज़बानी का सौभाग्य हासिल करे और इस भूखे को खाना खिलाए। यह सुनकर एक सहाबी जिनका नाम अबू तलहा (रज़ि॰) था, वे उठे और आप (सल्ल॰) से आज्ञा लेकर मेहमान को अपने घर लाए ।

जनता के सच्चे सेवक ने घर में अपनी बीवी से पूछा कि क्या खाना तैयार है ? बीवी ने कहा कि अरे आज इतने सवेरे कैसे भूख लग गयी, ख़ैरियत तो है ? बीवी ने आश्चर्यचकित होकर पूछा । आपने पूरी घटना बीवी को

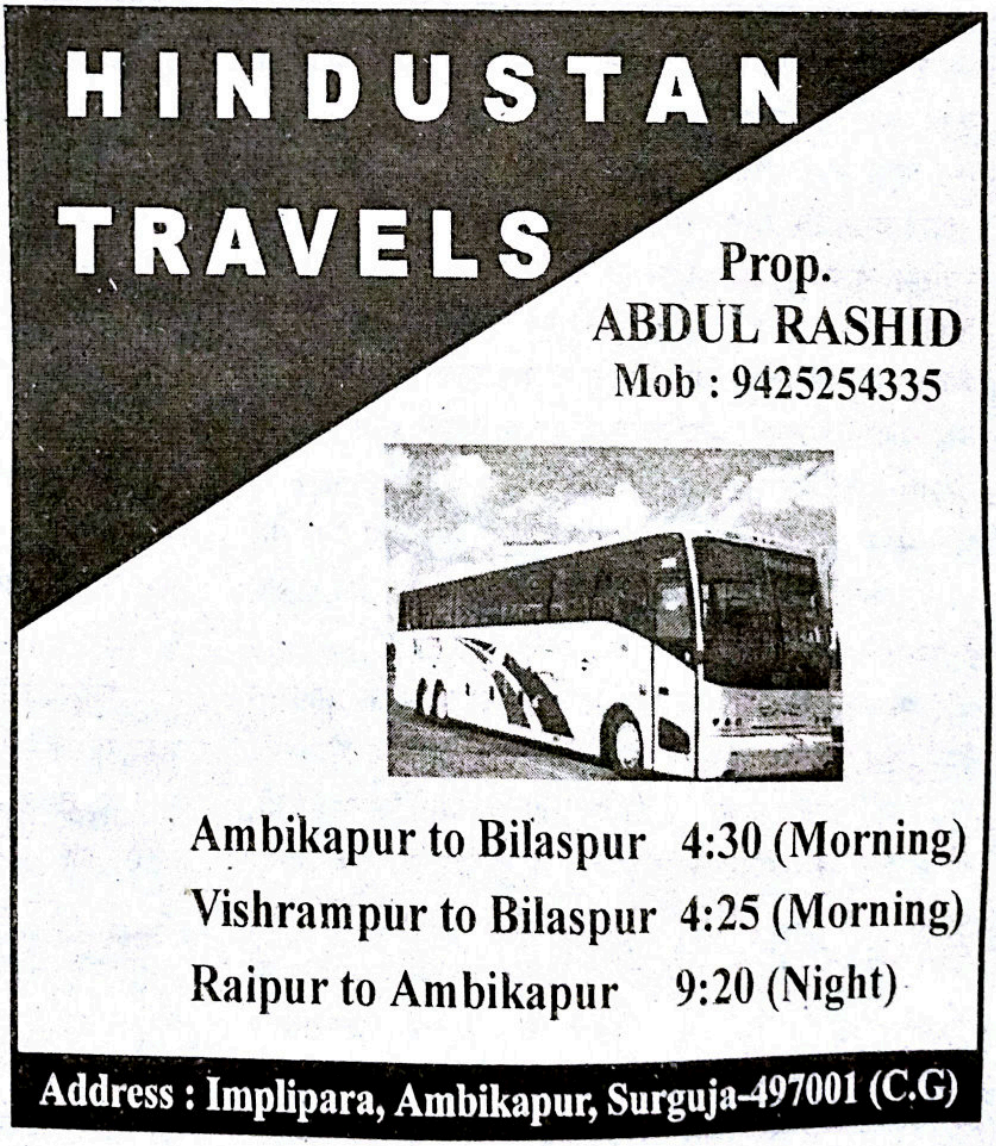

बतायी । इस पर उनकी बीवी ने कहा कि घर में तो केवल एक ही आदमी का खाना है, जबकि आपको मेहमान का साथ देना है । अबू तलहा ने कहा कि तुम इस बात की फ़िक्र न करो, मेरे दिमाग़ में एक अच्छी तरकीब आ गयी है । बीवी ने पूछा कि वह क्या ? आपने कहा कि जब हम दोनों खाना खाने बैठें तो तुम बत्ती बुझा देना । बीवी ने कहा कि ठीक है मैं समझ गयी, अच्छी तरकीब है ।

कुछ देर बांद जब बच्चे सो गये, तो खाना परोसा गया और दस्तूर के अनुसार दोनों खाना खाने दस्तरख़्वान पर बैठे । खाना शुरू करने के बाद चिराग़ बुझा दिया गया और तब हज़रत अबू तलहा (रज़ि॰) खाने तक अपना हाथ ले जाकर ऐसे ही झूठ-मूठ खाना खाने जैसी आवाज़ करके यह ज़ाहिर करने लगे कि वे खाना खा रहे हैं । इस प्रकार मेहमान ने पेट भर खाना खा लिया और मेजबान हज़रत अबू तलहा (रज़ि॰) ने इसे अपना बहुत बड़ा सौभाग्य समझ कर संतोष की सांस ली ।

आप (सल्ल॰) के प्यारे साथियों ने मानव सेवा, जनसेवा के अतिरिक्त त्याग, कुरबानी, परोपकार, मानव समानता का जो अनुपम नमूना हमारे समाज के सामने पेश किया है, वह अलौकिक व अद्वितीय है ।

आज हम देखते हैं कि हमारे समाज में मानव सेवा की एक आम धारणा यह पायी जाती है कि हम व्यक्तिगत रूप से जनसेवा का कोई कार्य करें । किसी भूखे को खाना खिला दें, किसी नंगे को कपड़ा पहना दें, किसी लाचार व विवश इन्सान की कुछ मदद कर दें, निस्संदेह यह भी एक सेवा है, लेकिन इतने को पर्याप्त समझना और उस पर संतुष्ट हो जाना किसी भी रूप से सही नहीं ठहराया जा सकता है । इतना तो वे ज़ालिम व निर्दयी भी करने पर विवश हैं, जो लोगों का ख़ून चूसते हैं और उनकी सूखी हड्डियों पर अपने लिए विलासिता का महल खड़ा करते हैं । आपको तो उनके सभी मामलों और समस्याओं को अपनी समस्या बनानी होगी । उनके उपाय सोचने होंगे और उन उपायों को काम में लाने के लिए सामूहिक शक्ति लगानी होगी । हमें समाज में फैली हुई बुराइयों को ख़त्म करना होगा । लोगों के अन्दर मानवसेवा और जनसेवा तथा परोपकार की भावना को जगाना होगा, तभी जाकर सद्समाज का निर्माण संभव होगा ।

ईशदूत हज़रत मुहम्मद (सल्ल॰) ने इरशाद फ़रमाया, "क़सम है उसकी, जिसके हाथ में मेरी जान है, तुममें से कोई मोमिन नहीं, जब तक कि ऐसा न हो कि वह अपने भाई के लिए वही पसन्द करे, जो अपने लिए पसन्द करता है ।" (बुख़ारी, मुस्लिम)

जनसेवा और मानवसेवा से भरे हुए इस्लामी इतिहास के ये सुनहरे पन्ने हैं । इस पृथ्वी पर कुछ ऐसे शासक रह चुके हैं, जिनका एक-एक पल ईश्वर की याद में व्यतीत होता था, जो अपने हर काम के लिए ईश्वर के सम्मुख उत्तरदायी थे । जनसेवा को अपना परमकर्तव्य समझते थे । अपने परिवार का हक़ अदा करते हुए जनता की सेवा हेतु अपना तन, मन, धन, सब कुछ न्योछावर करने के लिए हरदम तत्पर रहते थे । आज समाज में ऐसे ही लोगों की ज़रूरत है, जो सच्चे मन से जनता की सेवा कर सकें ।

संदर्भ

1. "हज़रत मुहम्मद (सल्ल॰) : सबके लिए" (डॉ॰ मुहम्मद अहमद, मधुर संदेश संगम, नयी दिल्ली-25)
2. "मानवता उपकारक हज़रत मुहम्मद (सल्ल॰)", (अबू मुहम्मद इमामुद्दीन रामनगरी, मधुर संदेश संगम, नयी दिल्ली-25)
3. "कुरआन की शीतल छाया", (डॉ॰ मुहम्मद ज़ियाउर्रहमान आज़मी, मधुर संदेश संगम, नयी दिल्ली)

मारूफ़
शू पैलेस
जी॰ई॰ रोड, बस स्टैंड, बी॰एम॰वाई॰
चरौदा, दुर्ग (छत्तीसगढ़)
फ़ोन : 0788-6534786

मक़सूद भाई मोबाइल : 9406090786
एस॰के॰ इंटरप्राइजेज
होल सेल शू मर्चेन्ट
अलंकार कम्पलेक्स के निकट
कैम्प-2, भिलाई, (छत्तीसगढ़)
फ़ोन : 0788 6535786

अनाथ लड़कों की पुकार

VOICE OF ORPHAN BOYS

यतीमख़ाना इस्लामिया (गया)

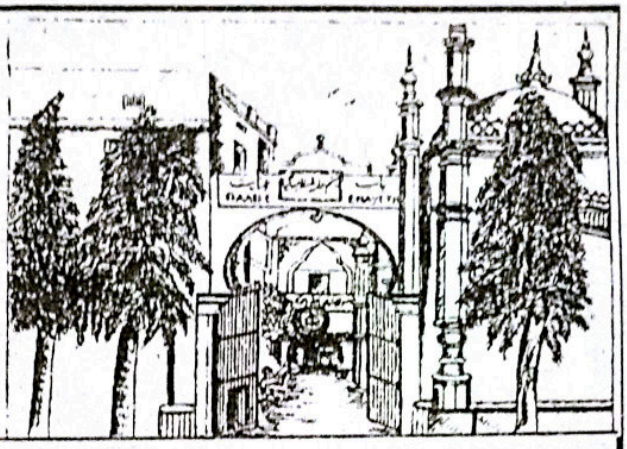

एक परिचय

● दीनी और असरी शिक्षा की अपनी तरह की जानी-मानी रिहाइशी पाठशाला ● 93 वर्षों की सेवाएं ● बहुत से विभाग ● शिक्षा के पड़ाव : प्राथमिक से मैट्रिक तक ● हिफ़्ज़ का विभाग : हिफ़्ज़ के साथ-साथ मैट्रिक ● हर वर्ष बिहार स्कूल बोर्ड परीक्षा का 100 प्रतिशत रिज़ल्ट ● पत्राचार शिक्षा 2010-2011 के सत्र के लिए 11वीं, 12वीं और बी॰ए॰ में प्रवेश जारी ● कंप्यूटर की भी शिक्षा ● किफ़ाला स्कीम के तहत एक अनाथ छात्र पर वार्षिक ख़र्च 8000/- रुपये प्रति वर्ष ● कुल वार्षिक ख़र्च 14 लाख से अधिक ● आमदनी का स्रोत : मुस्लिम अवाम के चन्दे ● 125 अनाथ बच्चे जिनका पूरा ख़र्च इदारा ही उठाता है ।

● जिस रूप में संभव हो मदद करके अल्लाह से बड़ा इनाम प्राप्त करें–उदाहरण के लिए ● ज़कात ● सदक़े ● अतिया ● पैदावार की ज़कात ● क़ुरबानी की खाल ● एक अनाथ बच्चे का वार्षिक ख़र्च ● अपने या किसी बुज़ुर्ग के नाम पर कमरा या हॉल बनवाना आदि ।

● याद रखें यहां हर वर्ष ऑडिट (Audit) भी कराया जाता है । आप खुद यतीमख़ाना इस्लामिया पहुंच कर बराबरी का व्यावहारिक नमूना अपनी आंखों से देखें कि किस प्रकार अनाथ और मां-बाप वाले बच्चे मिल-जुलकर रहा करते हैं ।

यह इदारा आप से उदार सहायता की अपील करता है ।

नोट : यह इदारा विदेशी मुद्रा के क़ानून FCRA के तहत भी रजिस्टर्ड है ।

अब आप विदेश से BANK A/c No. 300402010000187

BANK CODE NO. UBININBBJAM,

UNION BANK OF INDIA (MAIN BRANCH, GAYA)

.....में अपनी रक़म भेज सकते हैं.....

चेक या ड्राफ्ट पर केवल यह लिखें–THE GAYA MUSLIM ORPHANAGE

.....चेक, ड्राफ़्ट, मनीऑर्डर या ख़त भेजने का पता.....

Hon. SECRETARY. THE GAYA MUSLIM ORPHANAGE

At+P.o : CHERKI-824237, Distt : GAYA (BIHAR) INDIA

BANK A/C NO. : 10581, UNION BANK OF INDIA (MAIN BRANCH, GAYA)

CORE BANKIN G A/C NO.: 300402010010581

☎ 0631-2734428 ● Mobile : 9955655960

E-mail : gmocde@yahoo.co.in, Website : www.gmogaya.com

अध्यक्ष
डॉ॰ फरासत हुसैन

नाजिम
डॉ॰ मुहम्मद एहतिशाम रसूल

हज़रत उम्मे दहदाह (रज़ि॰)

❖ तालिब हाशमी

हज़रत उम्मे दहदाह (रज़ि॰) मशहूर सहाबी हज़रत अबू दहदाह साबित बिन वहदाह अंसारी (रज़ि॰) की पत्नी थीं। अबू दहदाह (रज़ि॰) जंगे उहुद में शहीद हुए। दोनों पति-पत्नी ईमानी जोश और इख़्लास अमल की दृष्टि से अपनी मिसाल आप थे।

हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद (रज़ि॰) से उल्लिखित है कि जब सूरह अल-हदीद की यह आयत नाज़िल हुई : "कौन है जो अल्लाह को क़र्ज़ दे, अच्छा क़र्ज़ कि वह उसे उसके लिए कई गुना कर दे। और उसके लिए सम्मानित प्रतिदान है।" (क़ुरआन, 57:11) तो हज़रत अबू दहदाह (रज़ि॰) अल्लाह के रसूल (सल्ल॰) की सेवा में उपस्थित हुए और कहा : "ऐ अल्लाह के रसूल (सल्ल॰), क्या अल्लाह तआला हम से क़र्ज़ चाहता है ?"

आप (सल्ल॰) ने फ़रमाया : "हां, ऐ अबू दरदाह (रज़ि॰)"। हज़रत अबू दरदाह (रज़ि॰) ने कहा, "ऐ अल्लाह के रसूल (सल्ल॰)! ज़रा अपना मुबारक हाथ मुझे दिखाइये।" आप (सल्ल॰) ने अपना मुबारक हाथ उनकी तरफ़ बढ़ा दिया। उन्होंने आप (सल्ल॰) का मुबारक हाथ अपने हाथ में लेकर कहा : "ऐ अल्लाह के रसूल (सल्ल॰)! मैं अपना बाग़ अल्लाह तआला को क़र्ज़ देता हूं।" वह बाग़ जिसे हज़रत अबू दहदाह (रज़ि॰) ने हक़ के रास्ते में सदक़ा कर दिया था, उसमें खजूर के 600 पेड़ थे। उसी में उनका घर था और वहीं उनके बाल-बच्चे रहते थे। आप (सल्ल॰) से यह बात करके वह सीधे अपने घर पहुंचे और अपनी पत्नी उम्मे दहदाह (रज़ि॰) को पुकार कर कहा : "दहदाह की मां! बाहर आ जाओ। मैंने यह बाग़ अपने रब को क़र्ज़ दे दिया है।"

यह सुनकर हज़रत उम्मे दहदाह (रज़ि॰) बोल उठीं : "दहदाह के अब्बू! आपने नफ़ा का सौदा किया है।"

यह कहकर वह अपना सामान और बच्चे को लेकर बाग़ से बाहर आ गयीं।

एक और रिवायत में जो हज़रत अनस बिन मालिक (रज़ि॰) से उल्लिखित है, इस घटना को कुछ दूसरी सूरत में बयान किया गया है।

वे कहते हैं कि एक व्यक्ति आप (सल्ल॰) की सेवा में उपस्थित हुआ और कहा : "ऐ अल्लाह के रसूल (सल्ल॰)! मैं अपने घर की दीवार उठाना चाहता हूं। बीच में अमुक व्यक्ति के खजूर का पेड़ है। यदि आप उससे कह दें कि वह पेड़ मुझे दे दे तो मैं अपनी दीवार की टेक उससे लगाकर दीवार को आसानी से पूरा कर सकूंगा।"

आप (सल्ल॰) ने उस आदमी से कहा कि : "तुम अपना वह पेड़ उसको दे दो, उसके बदले में अल्लाह तआला तुम्हें जन्नत में खजूर का पेड़ अता फ़रमाएगा।"

वह आदमी अपना पेड़ देने में आना-कानी करने लगा। हज़रत अबू दहदाह (रज़ि॰) को जब यह पता चला तो वे उस व्यक्ति के पास पहुंचे और उससे कहा कि तुम अपना खजूर का पेड़ मुझे दे दो और उसके बदले में मेरा खजूर का पूरा बाग़ ले लो। उसने यह बात स्वीकार कर ली। उसके बाद हज़रत अबू दहदाह (रज़ि॰) आप (सल्ल॰) की सेवा में उपस्थित हुए और कहा : "ऐ अल्लाह के रसूल (सल्ल॰)! मैंने उस आदमी से वह खजूर का पेड़ अपने बाग़ के बदले में ख़रीद लिया है। यह मैं आप (सल्ल॰) की नज़र करता हूं। आप उसे उस ज़रूरतमंद को दे दीजिए। यह सुनकर आप (सल्ल॰) बहुत ख़ुश हुए और कई बार फ़रमाया : "अबू दहदाह (रज़ि॰) के लिए जन्नत में खजूर के कितने बड़े और भारी ख़ोशे हैं।"

उसके बाद हज़रत अबू दहदाह (रज़ि॰) अपनी पत्नी के पास पहुंचे और उनसे कहा, "ऐ दहदाह की मां! इस बाग़ से निकल चल। मैंने इस बाग़ को जन्नत के खजूर के एवज़ बेच डाला है।" पत्नी ने कहा, "यह तो बड़ा नफ़ामंद सौदा है।" हज़रत उम्मे दहदाह (रज़ि॰) के बारे में मज़ीद हालात मालूम नहीं हैं। केवल इतना पता चलता है कि हज़रत अबू दहदाह (रज़ि॰) ने सुलह हुदैबिया के बाद वफ़ात पायी तो अपने पीछे कोई औलाद नहीं छोड़ी। संभवत: उम्मे दहदाह भी उनकी ज़िन्दगी में वफ़ात पा चुकी थीं क्योंकि आप (सल्ल॰) ने हज़रत अबू दहदाह (रज़ि॰) का तरका उनके भांजे हज़रत अबू लबाबा अंसारी (रज़ि॰) को दिया।

अनुपम व्यक्तित्व है हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) का

आधुनिक युग में कुछ लोग सस्ती लोकप्रियता पाने के लिए धर्म और महापुरुषों के विषय में अनर्गल प्रलाप करना आरंभ कर देते हैं । ख्याति तो बड़े परिश्रम से मिलती हैं, किंतु कुख्याति बड़ी जल्दी प्राप्त हो जाती है । बस कुख्याति को अपनी प्रसिद्धि का हथियार बनाया जा रहा है । यह प्रकृति का नियम है जो किसी वस्तु के विषय में नहीं जानता है, उसकी निन्दा अवश्य करता है जैसे जंगली भीलनी मुक्ताओं के हार को त्याग कर मूंजे का हार पहन लेती है ।

बहुत अफ़सोस होता है कि पैग़म्बरे इस्लाम हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) के विषय में पूर्ण ज्ञान न होने के कारण कुछ लोग बिना सिर-पैर की बातें करके झूठी लोकप्रियता हासिल करना चाहते हैं । दुनिया में मुहम्मद साहब ही ऐसे हुए हैं जिन्होंने अपना फ़ोटो तक नहीं बनने दिया । हर किसी की यही इच्छा होती है कि युग-युगों तक उसकी यादगारी चलती रहे और लोग उसकी फ़ोटो की पूजा करें । लोकेषणा का इससे ज़्यादा त्यागी कौन होगा ? केवल मुहम्मद साहब ही दुनिया में ऐसे हैं । मानवता के परम हितैषी मुहम्मद साहब जानते थे कि यदि उन्होंने अपनी फ़ोटो बनवा दी तो कालान्तर में ख़ुदा के स्थान पर उनकी पूजा होने लगेगी और सच्चे निराकार परमात्मा को भूलकर फिर मूर्तिपूजा के आडंबर में लोग फंस जाएंगे कितनी उच्च भावना थी आप (सल्ल०) की ! जब मुहम्मद साहब का दुनिया में फ़ोटो ही नहीं है तो उसका कार्टून बनाना अज्ञानता के अलावा और क्या हो सकता है ? ऐसी गुस्ताख़ी के लिए कठोर सज़ा दी जानी चाहिए । कभी-कभी बड़े-बड़े विद्वान अज्ञानतावश ग़लतियां कर देते हैं जैसे कबीरदास जी ने मुसलमानों के लिए कहा है–

काकर पाथर जोड़ के मस्जिद लई बनाय ।
ता चढ़ि मुल्ला बांग दे क्या बहिरा हुआ खुदाय ।

मस्जिदों से जो अज़ान दी जाती है वह ईमान वालों को सूचना देने के लिए है कि नमाज़ का समय हो गया है । नमाज़ पढ़ने हेतु मस्जिद आएं । इसलिए ख़ुदा का इससे बहरा होने का क्या मतलब ? ख़ुदा की इबादत तो नमाज़ से की जाती है । नमाज़ का अर्थ बड़ा सारगर्भित है ।

डॉ० जसवीर आर्य
डायरेक्टर, क्राइम फ्री इंडिया ब्यूरो, नयी दिल्ली

Jamaat-e-Islami Social Service Society (Regd), Gaya

The Society is in service in the field of education, health and Islamic understanding for the last 34 years. Our resources are limited, our task is tremendous. We seek your co-operation in the following activities:-

1. **IQRA PUBLIC SCHOOL :** Besides 800 paying students, about 150 poor or orphan girls & boys are provided free education upto Matriculation with Islamic Carriculam.
2. **MILLAT HOSPITAL :** Every year about 15000 poor & needy patients are provided with free medical treatment & medicine besides other services.
3. **INTEREST-FREE SOCIETY :** Provides short-term loan without interest to needy people.
4. **ISLAMIC INFORMATION CENTRE :** Established at Bodh-Gaya, where lakhs of foreigners visit every year during Nov - March. The Centre provides reading materials on Islam, distributes Islamic literature and invites interested visitors for discussion besides inter-faith dialogue on regular basis.

Kindly send your cheque/draft in favour of the Society

(Q. Hoda) Chairman — *(Prof. M. B. Zaman)* Secretary

JISSS, Millat Campus, Leitch Road, Gaya-823001

पारिवारिक जीवन कैसे बने सुखमय ?

■ उषा रानी अरोड़ा

हम सभी कितने सौभाग्यशाली हैं कि हम सभी को ईश्वर द्वारा प्रदत्त उपहार जीवन प्राप्त है । वह जीवन जिसे हम चाहें तो सद्गुणों की खान बना सकते हैं या भौतिकता में लिप्त कर सकते हैं । जीवन रूपी माला में प्रभु प्रेम व ज्ञान के मोती पिरो सकते हैं । चाहें तो उसे निरर्थक बना सकते हैं । पर अक्सर देखने को मिलता है कि मानव जीवन पाकर भी मानव अपनी राह से भटक गया है, भूल गया है कि प्रभु ने संसार में क्यों भेजा, किस लिए भेजा, और हमारा लक्ष्य क्या है ? अब प्रश्न यह उठता है कि मानव ऐसा अनभिज्ञ क्यों हो गया, इसके लिए मेरा विचार है कि वह पीढ़ियों का अंतराल को मिथ्या सिद्ध करने से विमुख हो गया है । तभी उसका जीवन एकात्मभाव से रहित आपसी द्वेष-भाव की अग्नि में झुलस रहा है । भय, संशय, घृणा, विभाजन, वैमनस्य, हिंसा, भ्रष्टाचार जैसे पूर्वाग्रहों का शिकार हो रहा है । आध्यात्मिक एवं भौतिक कल्याण की संभावनाओं से वंचित हो रहा है । इन सब का मुख्य कारण है हमारा परिवार जो धरती पर मानव अस्तित्व की सर्वप्रथम एवं सर्वोत्तम इकाई है । इन्सान इस धरती पर जीना सर्वप्रथम परिवार से सीखता है साथ ही परिवार ही उसकी सर्वप्रथम पाठशाला है जो जीवन के अंत तक क़ायम रहती है । पारिवारिक जीवन का मानव समुदाय पर सीधा तथा सर्वोच्च प्रभाव पड़ता है । इस संदर्भ में पारिवारिक जीवन के प्रति सतर्क एवं ज़िम्मेदाराना रुख़ इस पृथ्वी पर मानव जीवन का प्राणदायी हल है ।

पहले परिवार संयुक्त होते थे तथा जीवन की मानसिक समस्याओं ने मानव को पूरी तरह घेरा नहीं था. लेकिन वर्तमान जीवन में मानव विभिन्न प्रकार की सांसारिक भौतिक एवं मानसिक उलझनों की जकड़न में जकड़ गया है । परिपक्वता के अभाव में मनुष्य अमानवीय तरीक़ों से इन समस्याओं का कमज़ोर समाधान पाने की कोशिश कर रहा है फिर पीढ़ियों का अंतराल एक ऐसी समस्या है जो वर्तमान मानव के जीवन की आवश्यकताओं को अपरिपक्व तरीक़े से पूरा करने को प्रेरित कर रहा है । जो मनुष्य के पारिवारिक जीवन को खोखला कर रही है जबकि सुखी-संपन्न परिवार ही मानव जीवन की समृद्धि है ।

आज हम सभी इस सत्य को नकार नहीं सकते कि दिन-प्रतिदिन पीढ़ियों का अंतराल बढ़ता चला जा रहा है और इसी अंतराल ने मानव के सुखी-संपन्न शांत जीवन को विभिन्नता के द्वार पर लाकर खड़ा कर दिया है पर ज़रा हम सोचें ऐसा क्यों हो रहा है इसके लिए मेरे कुछ सुझाव नीचे दिये गये हैं–

अच्छी शिक्षा का अभाव

पहले ज़माने में लोगों की संतान ज़्यादा हुआ करती थी और वे खानपान को ज़्यादा महत्व देते थे और शिक्षा पर कम । आज मानव शिक्षा के प्रति सजग हो गया है । उसे समझ आ गयी है कि माता-पिता होने के नाते अपने बच्चों को शिक्षित करना उनके कंधों पर बहुत बड़ी ज़िम्मेदारी है । साथ ही बच्चे ईश्वर की ओर से उपहार हैं और हमारा कर्तव्य है कि उन्हें जीवन के सही उद्देश्य के बारे में बताएं । उचित शिक्षा देने के साथ-साथ उन्हें आध्यात्मिक श्रेष्ठा प्राप्त करने हेतु मदद करनी है । पहले ज़माने में शिक्षा के प्रति दृष्टिकोण और आज के दृष्टिकोण में काफ़ी हद तक अंतराल बढ़ा है ।

निर्णय स्वयं लेना

पहले बच्चे जो माता-पिता कहें उसी के अनुसार जीवन-यापन करते थे पर आज हरेक स्वतंत्र रूप से जीवन जीना चाहता है अपने जीवन के निर्णय स्वयं लेना चाहता है । यही कारण है कि पीढ़ियों का अंतराल बढ़ा है ।

विवाह के प्रति बदलता दृष्टिकोण

कभी ज़माना था कि मां-बाप जो चाहे, जहां चाहे, जब चाहे बच्चों का विवाह अपनी मर्ज़ी से कर देते थे, यहां तक कि गर्भवती महिलाएं बच्चे का जन्म होने से पहले ही कह देती थी कि यदि तेरा लड़का हुआ और मेरी लड़की तो रिश्ता पक्का, पर चाहे दोनों के बड़े होने तक मेल खाये या न खाये, चाहे अच्छे या बुरे किसी तरह के इन्सान बने पर

शादियां हो जाती थीं । पर आज विवाह के प्रति दृष्टिकोण बदल गया है । आज बच्चे समझने लगे हैं कि जीवन हमारा है अर्थात जीवन हम दोनों को बिताना है । जीवन साथी के चुनाव का दायित्व विवाह सूत्र में बंधने वाले दो प्राणियों का है और यह महत्वपूर्ण निर्णय है । आज के युवा एक-दूसरे के आचार व्यवहार और मूल्यों की जानकारी पाना चाहते हैं, एक-दूसरे के विचारों से परिचित होना चाहते हैं । यही कारण है कि पीढ़ियों का अंतराल बढ़ा है ।

बदलता दृष्टिकोण

पहले कभी समय था जब देहात के लोग सीधा-सादा जीवन व्यतीत करते थे और जो गांव का मुखिया कहे चाहे वह ग़लत हो या ठीक उसे पत्थर पर लकीर समझते थे । पर अब समय में परिवर्तन आया है । आम जनता अपनी आवाज़ उठाती है और सोचने-समझने की सलाहियत रखती है । ग़लत को ग़लत और ठीक को ठीक कहती है । दूसरे गांव के बच्चों में शिक्षा के माध्यम से बहुत अधिक परिवर्तन आया है । पहले बुज़ुर्ग अपने बच्चों को बड़ा होते ही खेती-बाड़ी में लगा देते थे और आज बच्चे बड़े होते ही शहरों की ओर रुख़ कर लेते हैं । वे समझते हैं कि खेती-बाड़ी बिना पैसे के करना आसान नहीं है । और बिना पैसे के जीवन-यापन करना मुश्किल है, पर बुज़ुर्गों को यह सब अच्छा नहीं लगता । उन्हें किसी बात से मतलब नहीं चाहे पैसा आये न आये, खेती-बाड़ी के काम से बच्चे मुख न मोड़ें । उनका यही एक लक्ष्य होता है । इन कारणों से भी पीढ़ियों का अंतराल बढ़ा है ।

मेरा विश्वास है कि यदि पीढ़ियों के अंतराल हटाने में ठोस क़दम न उठाया गया तो यह अंतर बढ़ता-बढ़ता बेहद बढ़ जाएगा और इससे समाज का स्थायित्व ख़त्म होने लगेगा । आपसी एकता छिन्न-भिन्न हो जाएगी ।

मानवजाति का स्थायित्व

मानवजाति का स्थायित्व रखने के लिए सबसे पहले कल्याण और मुक्ति का दुर्ग तैयार करना होगा अर्थात विवाह और परिवार का गठन करना होगा ।

शिक्षा के प्रति सजगता

पीढ़ियों का अंतराल मिटाने के लिए पिछली पीढ़ियों व आज की पीढ़ी के लोगों को बच्चों को उचित रूप से शिक्षा दिलाने के प्रति सजगता बरतनी होगी । बच्चे को प्रभु द्वारा प्रदत्त उपहार जानकर उनके प्रति अपने महत्वपूर्ण दायित्वों का निर्वाह करना होगा । उनके माली बनकर उन्हें अपने व प्रभु प्रेम के माध्यम से सींचना होगा, उनमें ज्ञान के बीज को अंकुरित करना होगा ताकि उनके चरित्र की रक्षा हो सके, उनका भविष्य उज्ज्वल बन सके । बच्चों को विकसित करने के बारे में पंडित जवाहर लाल नेहरू ने कहा था कि : ''बच्चों की सबसे बड़ी दौलत प्यार है ।''

यदि माता-पिता बच्चों के प्रति यह ध्यान रखते हुए कि बच्चों का मानसिक विकास सात वर्ष की उम्र तक पूर्णरूप से विकसित हो जाता है तथा धारणाएं एवं प्रवृतियों की जड़ें मज़बूत हो जाती है, उन्हें भौतिक एवं आध्यात्मिक शिक्षा देंगे तो निश्चय ही पीढ़ियों का अंतराल मिटाया जा सकेगा । बच्चे को उचित रूप से शिक्षित करना हमारा दायित्व है क्योंकि बच्चे ही भावी पीढ़ी के निर्माता हैं ।

विकासशील योजनाओं का चयन

टी०वी का होना पीढ़ियों का अंतराल बढ़ने में बहुत बड़ा हाथ है क्योंकि पहले कभी परिवार आपस में मिल-जुलकर बैठते थे । एक-दूसरे के दुख-सुख की बात सुनते थे, लेकिन अब तो ज़्यादातर परिवारों का समय टी०वी० देखने में बीत जाता है । यहां तक की परिवार जो मिल-बैठकर एक ही जगह खाना खाते थे वे अब टी०वी० देखते हुए खाना खाते हैं और जैसे-जैसे दृश्य आते हैं उनके मनोभाव पर असर करते हैं और जिस शान्ति की अवस्था में प्रभु को धन्यवाद देते हुए प्राणी भोजन करता था, अब कभी शांत, कभी



अशांत अवस्था में भोजन करता है इसका उसके शरीर पर गहरा प्रभाव पड़ता है अर्थात स्वास्थ्य पर असर पड़ता है ।

बुजुर्गों को हर समय टी०वी० देखना पसन्द नहीं है । उन्हें अपना वही जीवन पसन्द है कि दो वक़्त मेहनत-मज़दूरी करके रोज़ी-रोटी और जिस हाल में ईश्वर रखे उसी में संतुष्ट रहना और परामात्मा को याद करना । यही कारण है कि आज की पीढ़ी और पहले की पीढ़ियों के बीच अंतराल बढ़ा है । हमें इस अंतराल को मिटाने के लिए आपस में परिवार को मिल-जुलकर ऐसी योजनाओं का चयन करना होगा जिससे पीढ़ियों का अंतराल मिटाया जा सके ।

विनम्रता

पीढ़ियों का अंतराल मिटाने के लिए अर्थात मिथ्या सिद्ध करने के लिए बड़े हों या छोटे दोनों को एक-दूसरे के विचारों को नम्रभाव से सुनना चाहिए और कोई भी निष्कर्ष निकालना हो तो सहज भाव से परामर्श के माध्यम से निकालना चाहिए ।

बुजुर्गों का सम्मान तथा उनके अनुभवों का लाभ

अक्सर देखने को मिलता है कि बुजुर्गों को सम्मान नहीं दिया जाता । उनके साथ उपयोगहीन वस्तुओं की तरह व्यवहार किया जाता है जबकि वे हमारे लिए अनुभवों का ख़ज़ाना है । हमारी प्रत्येक समस्या का उनके पास समाधान है । उनके अनुभव उनकी लोकोक्तियां हमारे जीवन को सही दिशा दिखाने की शक्ति रखती हैं । उनके सुझाव हमारे लिए हितकर हैं । वे प्रत्येक काम का निष्कर्ष निकाल लेते हैं । बुजुर्गों के सुदृढ़ मार्गदर्शन के माध्यम से छोटे अपने मार्ग में अधिक भूल किये बिना ही समस्याएं हल कर सकते हैं । किसी ने सत्य कहा है कि जिसने दुनिया देखी है वह आदमी जीये दो ज़िन्दगानियां या बुढ़ों का साया हम पर छत के समान है । साथ ही हम इस सत्य को नकार नहीं सकते कि सोना जितना घिसता है उतना ही उसका रंग निखरता है । इस कहावत से यह सिद्ध हो जाता है कि इन्सान जितना बड़ा होता है उतना परिपक्व बनता है । पीढ़ियों का अंतराल मिटाने के लिए हमें उन्हें आदर व सम्मान की दृष्टि से देखना होगा उनके अनुभवों से लाभ उठाना होगा ।

सही दृष्टिकोण

पीढ़ियों का अंतराल को रद्द सिद्ध करने के लिए हम सभी को जीवन में सही दृष्टिकोण को अपनाना होगा । अब आप पूछेंगे कि सही दृष्टिकोण क्या है परिवार संयुक्त हों तो कैसे रहे ? विलग होकर कैसे रहें । अक्सर जो देखा गया है कि बुजुर्गों को दिक़्क़त संयुक्त परिवार में नहीं आती, विलग परिवारों में ज़्यादा आती है । क्योंकि बच्चे मां-बाप से दूर रहते हैं । उस समय ऐसे उपाय निकालने होंगे कि उनके अपने मां-बाप के साथ अच्छे संबंध बने रहें । उन्हें अपने मां-बाप की ज़रूरतों का ध्यान रखना होगा । संयुक्त परिवारों में भी दिक़्क़त आती है क्योंकि वे बहुत क़रीब क़रीब रहते हैं और दैनिक बातों में उलझे रहते हैं । तब आपस में काफ़ी तकरार होती है । ऐसे में मां-बाप को चाहिए कि परिवार में रहें पर निर्लिप्त होकर रहें ईश्वर का अपना पूरा भरोसा रखते हुए परिवार की मदद करते हुए सहनशील कार्यों को जारी रखते हुए अपनी परिपक्व अवस्था में वे सच्चे प्रेम व सम्मान के हक़दार बने रहें ।



इस्लाम का संदेश

❖ इस्लाम एक सिद्धान्त, एक आन्दोलन	मरयम जमीला	80.0 0
❖ इस्लाम का आरम्भ	मौलाना सय्यद अबुल आला मौदूदी	4.00
❖ इस्लाम का परिचय	मौलाना वहीदुद्दीन ख़ां	8.00
❖ इस्लाम का नैतिक दृष्टिकोण	मौलाना सय्यद अबुल आला मौदूदी	10.00
❖ इस्लाम का बुनियादी अक़ीदा (पाकेट साइज़)	मौलाना सय्यद अबुल आला मौदूदी	2.00
❖ इस्लाम का संदेश	मौलाना सय्यद अबुल आला मौदूदी	10.00
❖ इस्लाम की आध्यात्मिक व्यवस्था (पाकेट साइज़)	मौलाना सय्यद अबुल आला मौदूदी	3.00
❖ इस्लाम की आर्थिक व्यवस्था (पाकेट साइज़)	मौलाना सय्यद अबुल आला मौदूदी	3.00
❖ इस्लाम की गोद में	मुहम्मद असद(नव-मुस्लिम पूर्व लियोपोल्ड)	60.00
❖ इस्लाम की जीवन-व्यवस्था	मौलाना सय्यद अबुल आला मौदूदी	12.00
❖ इस्लाम की नैतिक व्यवस्था (पाकेट साइज़)	मौलाना सय्यद अबुल आला मौदूदी	3.00
❖ इस्लाम की पारिवारिक व्यवस्था और दहेज प्रथा	प्रो० उमर हयात ख़ां ग़ौरी	15.00
❖ इस्लाम की बुनियादी बातें	मौलाना अब्दुल हई	10.00
❖ इस्लाम की बुनियादी तालीमात (खुतबात मुकम्मल)	मौलाना सय्यद अबुल आला मौदूदी	75.00
❖ इस्लाम की राजनैतिक व्यवस्था (पाकेट साइज़)	मौलाना सय्यद अबुल आला मौदूदी	3.00
❖ इस्लाम की शीतल छाया	मौलाना सय्यद हामिद अली	10.00
❖ इस्लाम की सामाजिक व्यवस्था (पाकेट साइज़)	मौलाना सय्यद अबुल आला मौदूदी	3.00
❖ इस्लाम के चारों ओर	डॉ० कौसर यज़दानी नदवी	12.00
❖ इस्लाम क्या है?	मुहम्मद फ़ारूक़ ख़ां	5.00
❖ इस्लाम जिससे मुझे प्यार है	अब्दुल्लाह अडियार	25.00

MARKAZI MAKTABA ISLAMI PUBLISHERS

D-307, Dawat Nagar, Abul Fazl Enclave, Jamia Nagar, New Delhi-110025

Phone: 26971652, 26954341, 26946447(D) Fax: 26947858

E-mail: mmipublishers@gmail.com • **Website:** www.mmipublishers.net

इन्सानियत का पैग़ाम लेकर आया है रमज़ान

■ विद्या प्रकाश

अल्लाह तआला ने रमज़ान के रोज़े हर मोमिन के लिए फ़र्ज़ किये हैं । इस महीने में एक रात (क़द्र की रात) ऐसी है जो हज़ार महीनों से बेहतर है । यह वह महीना है जिसमें दुनिया में सर्वाधिक पढ़ी जाने वाली आसमानी किताब क़ुरआन शरीफ़ का अवतरण शुरू हुआ । रमज़ानुल मुबारक ग़मख़्वारी का महीना है यानी एक रोज़ेदार को रोज़ा रखने के मौक़े पर किसी लाचार, मजबूर, भूखे और प्यासे की तकलीफ़ का एहसास होता है तथा दिल में भूखे और प्यासे के साथ हमदर्दी का जज़्बा पैदा होता है । रोज़ा दरअस्ल ख़ुदा की रिज़ा, ईशभय और ईशपरायणता के मक़सद से रखा जाता है ।

मुसलमानों के लिए रमज़ानुल मुबारक का पूरा महीना बरकत, रहमत तथा बख़्शिश का बहुत बड़ा ज़रिया है । इस माह में रोज़े के साथ ही जितना और जहां तक मुमकिन हो सके, नेक काम और परवरदिगारे आलम की इबादत करें क्योंकि पता नहीं, अगले साल यह मुबारक महीना नसीब हो या न हो । मौत का कुछ पता नहीं और न ज़िन्दगी का कोई भरोसा है । पता नहीं, कब किस घड़ी मौत आ जाए ।

रमज़ान की आमद होते ही शैतानों को क़ैद कर लिया जाता है ताकि इन्सानों को बुरे कामों के लिए शैतान बहका-फुसला कर न ले जा सके और बन्दा अधिक से अधिक नेक काम तथा ख़ुदा की इबादत कर सके । वैसे तो हमेशा एक-दूसरे से अच्छा सलूक करने का हुक्म है ही, मगर रमज़ान में विशेषकर परस्पर अच्छा बर्ताव करने, किसी को तकलीफ़ न पहुंचाने और रोज़ा, नमाज़, तरावीह, एतिकाफ़ वग़ैरह की शक्ल में इबादत करने का ख़ास तौर पर हुक्म है । वैसे अल्लाह तआला ने अपनी तरफ़ से बन्दों को रहमत, बरकत, बख़्शिश और जन्नत में जाने का ज़रिया बता दिया है, लेकिन अब यह इन्सानों पर निर्भर है कि वह ख़ुदा की बतायी बातों पर कितनी ईमानदारी और अक़ीदत से अमल करता है और किस तरफ़ जाना पसन्द करता है ।

साल में एक बार आने वाला रमज़ान का महीना इन्द्रिय निग्रह, आत्मसंयम, आत्मशोधन तथा आत्मनियंत्रण का महीना है जिसमें हर रोज़ेदार की जीवनचर्या आत्मानुशासित और निर्दोष हो जाती है । वह इस दौरान न हाथ से किसी प्रकार की बुराई करता है, न आंख से कोई बुराई देखता है, न कान से किसी की निन्दा सुनता है, न जीभ से किसी की बुराई, चुग़ली और निन्दा करता है और न पैर का इस्तेमाल ग़लत कामों के लिए करता है । महीने भर के रोज़ों और आत्म संयम की कठिन तपस्या से रोज़ेदार का सम्पूर्ण व्यक्तित्व अग्नि में तपाये गये कुन्दन-सा निखर उठता है । उसके अन्दर आत्म बल तथा आत्म शान्ति बढ़ती है ।

वर्ष भर की विकल प्रतीक्षा के उपरांत पुनः रमज़ान का मुबारक महीना मानवता का पैग़ाम लेकर आया है । आइए, इस मौक़े पर हम अपना आमाल सुधारने, बुराइयों से परहेज़ करने और अच्छाइयों की राह पर चलने का संकल्पपूर्ण प्रयास करें ताकि मानवता का अधिकाधिक कल्याण हो सके ।

Niyaz Ahmed

Tel. : 2292062 (S)
M. : 98261-29877



Hosiery Centre

Wholesaler

Readymade & Handloom

B/43 Uttar Gangotri, Supela, Bhilai, Durg (C.G)

आतंकवाद का नया सत्य

■ विश्वप्रताप भारती
(बरला, अलीगढ़, उ०प्र०)

हम सब (हिन्दू, मुस्लिम, सिख, ईसाई, बौद्ध) भारत में रहते हैं और ख़ूब मिल-जुलकर रहते हैं । लेकिन इस सबके बावजूद आपसी वैमनस्यता भी सबसे अधिक हमारे ही बीच है । देश में हर बीतते दिन हिन्दू-मुसलमानों की वैचारिक द्वंद्वात्मकता किसी से छिपी नहीं है । हम सब एक ऐसी दुनिया में जी रहे हैं, जहां सिर्फ़ ताक़त का खेल चलता रहता है ।

भारत के इतिहास में मुसलमानों से ज़्यादा हिन्दू संख्या में बढ़ोतरी बनी रही है, लेकिन एक जुमला सुनने को मिलता रहता है कि मुसलमान बहुत तेज़ी से बढ़ रहे हैं और एक दिन भारत पर क़ब्ज़ा जमा लेंगे ।

दरअस्ल भारत में ऐसी लॉबी काम कर रही है जो मुसलमानों को बाहरी विदेशी हमलावर बता कर प्रताड़ित करना चाहती है । यदि हम इतिहास का ज़िक्र छोड़कर चंद पुराने दंगों की बात करें तो किसी की नज़र गुजरात में हुए 1969, 1985, 1989 और 2002 के दंगों पर क्योंकर नहीं जाती ? मुख्यमंत्री नरेन्द्र मोदी के कार्यकाल में नरोदा में 25 हज़ार की मुस्लिम आबादी को घेरकर एल०पी०जी० रसोई गैस के सिलेंडरों से बस्ती को फूंका गया । सिलेंडरों को दो ट्रकों में भरकर लाया गया जिससे साफ़ ज़ाहिर होता है कि दंगे सुनियोजित थे । ऐसी ही एक घटना सुन्दरम इलाक़े की थी, जहां 15 हज़ार मुस्लिम आबादी थी । दंगाइयों ने जाते समय एक मदरसे की दीवार पर नारे भी लिखे थे–

ये अन्दर की बात है
पुलिस हमारे साथ है
जान से मार देंगे
बजरंग दल ज़िन्दाबाद
नरेन्द्र मोदी ज़िन्दाबाद ।

गुजराज के बारदोली, डांग, सूरत के क़रीब दो दर्जन गांव के अल्पसंख्यकों पर हिन्दुत्व के नाम से हमले किये गये । 1998 की इन घटनाओं में 200 मुस्लिम परिवारों को गांव छोड़ना पड़ा, नौकरी गंवानी पड़ी ।

बड़े शर्म बात है कि गांधी जी के गुजरात को हिन्दू ताक़तों ने बार-बार बेइज़्ज़त किया है । गोधरा कांड पर ज़्यादा कहने की ज़रूरत नहीं है । आज पूरे देश में गोधरा कांड रेंगता नज़र आता है । इसी तरह ताक़त का खेल उड़ीसा में भी आज़माया गया था, जहां मस्जिदें तोड़ी गयीं, चर्च जलाएं गये ।

ग़ौर किया जाए तो आतंक हमारे यहां उतना ही पुराना है जितनी मानव सभ्यता और राजनीति । राजनीतिक तौर पर भारत में राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ की स्थापना के बाद आतंक राजनीति और धर्म किसी न कसी रूप में एक-दूसरे के पर्याय बने हुए हैं । अपनी स्थापना के बाद संघ ने हिन्दुओं (सिर्फ़ सवर्णों) को इकट्ठा कर 'हिन्दू ताक़त' और 'हिन्दू एकता' का नारा दिया । राम जन्मभूमि, कृष्ण जन्म-भूमि, हनुमान की मां अंजनी जन्मभूमि सहित देश की तमाम जगहों से मस्जिदें, ईदगाह तोड़कर या तोड़ने का प्रयास करके उन्हें विवादित बना दिया, जिससे देश की एकता, अखंडता का भारी नुक़सान हुआ । हिन्दू अलग ख़ेमे में बंट गये, मुसलमान अलग ख़ेमे में ।

यह कहना ग़लत न होगा कि संघ की तमाम ग़लतियों का फ़ायदा उठाया अमेरिका ने । अमेरिका ने चंद तथाकथित मुस्लिम संगठनों को सहारा देकर भारत की जड़ें खोखली करने में कोई कसर नहीं छोड़ी । कुछ ऐसे ही संगठनों को मज़हब के नाम पर गुमराह कर उन्हें ट्रेनिंग, हथियार, धन सब कुछ दिया अमेरिका ने । अर्से बाद यह संगठन अमेरिका सहित आज पूरे संसार के लिए नासूर बन गये हैं ।

बात-बात में मेरी एक शर्मा (जी) और ठाकुर (साहब) से इन मुद्दों पर बात हुई । कहने लगे–'जहां चार मुसलमान खड़े हों वहां देश की बात नहीं, इस्लाम की बात होती है, मदरसों की बात होती है, क़ौम की बात होती है, पाकिस्तान की बात होती है । तपाक से मैंने पूछा–जहां चार हिन्दू खड़े हों ?' शर्मा भी चुप, ठाकुर भी चुप । मैं अपने गुस्से को रोक न सका–जहां चार हिन्दू खड़े हों, वहां सबसे ज़्यादा जाति

की बात होती है । किसी के परिचय में जाति मन में सवार रहती है । (माफ़ करना) हिन्दुओं में पास से यदि कोई पढ़ा-लिखा जाटव, वाल्मीकि गुज़र जाए तो उसे नोटिस में नहीं लिया जाता । तरह-तरह के जुमले तो कसे ही जाते हैं–देखो चमार का जा रहा है । चाहे कलेक्टर बन जाए, रहेगा नीच ही । औरतों के अच्छे पहनने-ओढ़ने को किस तरह देखा जाता है यह किसी से छिपा नहीं है ।

हिन्दू आज भी नीची जाति का ही प्रयोग करते हैं जबकि मुसलमान एक साथ पढ़ सकता है, खा सकता है, नमाज़ पढ़ सकता है, लेकिन हिन्दू ! कहने की ज़रूरत नहीं है । देवी माता की पूजा करने वाले, हर साल महीने-छः महीने पर कन्याएं खिलाने वाले हिन्दू क्या ये बता सकते हैं कि भारतीय समाज में नारी पर सबसे ज़्यादा अत्याचार किसने किया है और उसे आतंकित किसने किया है ? रह-रहकर बातें याद आती है कि इस गांव में सवर्ण दबंगों ने दलित जाति की बहू को क़र्ज़ के चलते पूरे गांव में नंगा घुमाया । उस गांव में दलित किशोरी के साथ सवर्ण लड़कों ने सामूहिक बलात्कार किया । फूलन देवी बलात्कार कांड को कौन नहीं जानता । राजस्थान का दलित महिला भंवरी देवी बलात्कार कांड आज भी कहीं न कहीं ज़िंदा है जिस पर 'बवंडर' फिल्म बनी । ऐसी न जाने कितनी घटनाएं हैं जिनकी फ़ेहरिस्त बहुत लंबी है । इससे बड़ी शर्मनाक बात क्या हो सकती है कि जहां एक ओर नारी के पूजने की बात की जाती है वहीं उसे जाति, बदले की भावना, क़र्ज़ या वासना पूर्ति के लिए लगातार आतंकित किया जाता है ।

बावजूद इसके आतंक की परिभाषा मुसलमान के इर्द-गिर्द ही घुमायी जाती है । सीधी बात है यदि समाज में विघटन बढ़ाना है तो एक-दूसरे को निरीह-दयनीय बनाने में सिरफ़िरे लोगों की कमी नहीं है और ऐसे लोगों की कमी नहीं है जो सत्ता पर क़ाबिज़ होने के लिए लोकतंत्रीय व्यवस्था में अपनी गोट फिट करने के लालच में हिन्दू-मुसलमान को सामने खड़ा कर देते हैं ।

आज भारत जिस दो राहे पर खड़ा है, उससे उसकी लोकतांत्रिक व्यवस्था बिगड़ती जा रही है जिसमें सुधार की गुंजाइश कम ही दिखायी देती है । आज हम सबको अपने अन्दर झांकने की ज़रूरत है । अंधेरे के ख़िलाफ़ लड़ने की ज़रूरत है । एकजुट होने की ज़रूरत है । बिना इसके हम प्रश्नों को तो खड़ा कर सकते हैं, उत्तर कब आएंगे ! कहना संभव नहीं है ।

साहित्य समाचार

डॉ॰ यायावर को विद्यावाचस्पति

डॉ॰ रामसनेही लाल शर्मा यायावर को उनकी सुदीर्घ हिन्दी सेवा, साहित्य एवं कला के क्षेत्र में महत्वपूर्ण उपलब्धियों, शैक्षिक प्रदेयों एवं सराहनीय शोध कार्यों के आधार पर विक्रमशिला हिन्द विद्यापीठ ईशीपुर भागलपुर ने अपने 14वें महाधिवेशन में विद्यावाचस्पति की उपाधि से अलंकृत किया । यह उपाधि भागलपुर, बिहार में आयोजित विद्यापीठ के महाधिवेशन में प्रदान की गयी ।

दूसरी ओर अखिल भारतीय परिषद की राजस्थान शाखा ने उनके गीत संग्रह, मेले में यायावर पर उन्हें सेठ घनश्याम दास बंसल स्मृति हिन्दी काव्य संग्रह पुरस्कार भी प्रदान किया है । स्मरणीय है डॉ॰ यायावर के नौ काव्य संग्रह, एक समकालीन हिन्दी गीत काव्य, संवेदना और शुल्क एवं संस्कृति और साहित्य संबंधों में अंतः सूत्र प्रकाशित हो चुके हैं । उन्हें अनेक संस्थाएं पूर्व में भी सम्मानित कर चुकी हैं ।

प्रस्ताव आमंत्रित

विविध क्षेत्र में कार्य करने वाले व्यक्तियों को राष्ट्रीय स्तर पर लोकरत्न राष्ट्रीय पुरस्कार 2010 से सम्मानित किया जाएगा । यह सम्मान शिक्षा, समाज सेवा, साहित्य एवं कला आदि हरेक क्षेत्र में दिया जाएगा । पुरस्कार के लिए आवेदन के साथ अपने कार्य का विवरण, अख़बारों में छपे उसके विषय में समाचार की फोटो कॉपी के साथ शीघ्रता से इस पते पर भेजें–

अखिल भारतीय कला साहित्य संस्कृति अकादमी
युवा समूह, श्री बिछायत के सामने, शिवाजी चौक, वर्धा-442001 (महाराष्ट्र)

पुस्तक पुरस्कार स्पर्धा

राष्ट्रीय स्तर पर पुस्तक आइडियल स्पर्धा का आयोजन किया गया है, जिसमें हिन्दी, मराठी, अंग्रेज़ी, राजस्थानी या हिन्दी भाषा से जुड़ी देश की कोई अन्य भाषा की पुस्तक एवं पत्रिका की दो-दो प्रतियां आमंत्रित हैं । साहित्य की किसी भी विद्या एवं देश के किसी भी क्षेत्र से यह पुस्तक 1990 ई॰ 2010 ई॰ के बीच प्रकाशित हुई होनी चाहिए । अपनी कृतियां शीघ्र ही इस पते पर भेजें–

अग्रवाल पुस्तक पुरस्कार आइडियल स्पर्धा
युवा समूह, शिवाजी चौक, वर्धा-442001 (महाराष्ट्र)

इस्लामिक सेन्टर वेल्लोर

अपील

अल्हम्दुलिल्लाह, इस्लामिक सेन्टर वेल्लोर तमिलनाडु की सरज़मीन में पिछले 32 वर्षों से नवमुस्लिम पुरुषों, महिलाओं और बच्चों की शिक्षा एवं प्रशिक्षण के कर्तव्य निभा रहा है । 1978 से 2010 तक सेन्टर की सेवाओं का संक्षिप्त परिचय नीचे दिया जा रहा है ।

● 31 मार्च 2010 तक सेन्टर से लाभांवित होने वाले छात्र/छात्राओं की संख्या :

● छात्र–4776 ● छात्राएं–2872 ● कुल–7648

- 9 वर्ष पहले सेन्टर में 'कुल्लियतुल मआरिफ़' के नाम से एक दीनी दर्सगाह शुरू की गयी, जिसमें पढ़ी-लिखी (X से +2 तक) छात्राओं की इल्मे दीन सिखाया जाता है ताकि महिलाओं में दावती और इस्लाही काम अन्जाम दें । इस दर्सगाह से फ़ारिग़ होकर दीन की सेवा में लगी हुई छात्राओं की संख्या 28 है । तीन वर्ष पहले 'कुल्लियतुल इस्लाम' के नाम से इसी तरह का एक और इदारा छात्रों के लिए कायम किया गया । इस साल इस इदारे से तीन आलिम फ़ारिग़ हुए हैं ।
- सेन्टर से फ़ारिग़ 80 छात्रों ने दीनी दर्सगाहों से सनद हासिल की ।
- 100 छात्रों ने ITI की तकनीकी शिक्षा हासिल की । 10 छात्र अभी प्रशिक्षण हासिल कर रहे हैं ।
- छात्राओं को कंप्यूटर की बुनियादी तालीम और टेलरिंग सिखाने की व्यवस्था है ।
- सेन्टर ने वेल्लोर की क्षेत्रीय आबादी के बच्चों की शिक्षा एवं प्रशिक्षण के लिए एक इंग्लिश मीडिया स्कूल की व्यवस्था की है । इस स्कूल में तमिल, उर्दू और दीनियात की शिक्षा भी दी जाती है । इसमें पहली से पांचवीं, (नर्सरी व प्राइमरी) कक्षाओं को सरकार की मंज़ूरी हासिल है । 467 छात्र/छात्राएं शिक्षा हासिल कर रही हैं ।
- 18 नवमुस्लिम बस्तियों में मस्जिदों का निर्माण, उनकी देखभाल, इमामों की नियुक्ति, मक्तबों एवं वयस्क शिक्षा केन्द्रों आदि की व्यवस्था की गयी है । फ़िलहाल बिरादराने वतन के तीन गांवों को इस्लामिक सेन्टर ने दावती कामों के लिए चुना है । 6 पुरुषों और 4 महिलाओं की एक टीम वहां दावती कामों में व्यस्त है । उनकी दावती कोशिशों से अल्लाह के फ़ज़्ल से 60 भाइयों एवं बहनों को दीने हक़ की सआदत नसीब हुई है ।
- सेन्टर ने पोस्टल लाइब्रेरी की व्यवस्था भी की है । चुनी हुई तमिल और अंग्रेज़ी किताबें डाक से अपने ख़र्च पर भेजी जाती हैं । अब तक 23,337 देश-बंधुओं और मिल्लत के भाइयों ने इस लाइब्रेरी से लाभ उठाया है ।
- रमज़ान के मुबारक महीने की आमद पर हम आप से खुलूस के साथ अपील करते हैं कि आप अपनी बहुमूल्य सहयोग राशि, ज़कात व सदक़ात आदि हमें प्रेषित करें, इसके अलावा अपने दोस्तों एवं सगे-संबंधियों को इस कारेख़ैर के लिए ध्यान दिलाएं । अल्लाह तआला आपको और आपके घर वालों को इस कारेख़ैर का बेहतरीन बदला अता फ़रमाए और दारैन की सआदतों से नवाज़े । सेहत व आफ़ियत से नवाज़े ।

फ़क़त वस्सलाम

जनरल सेक्रेट्री : के॰ एम॰ सिराज॰ अहमद

ड्राफ़्ट व चेक इस नाम पर बनवाएं :

"ISLAMIC CENTRE VELLORE"

सदर : ए॰ शब्बीर अहमद अफ़ी॰ अन्हु

ऑन लाइन राशि इस खाते पर भेजें और डाक या फ़ोन से ख़बर कर दें ताकि रसीद भेजने में आसानी हो ।

Union Bank of India, Vellore, A/c No. 333001010019006

ISLAMIC CENTRE VELLORE

19/4, Madar Saheb Street, R.N. Palayam, Vellore-632001, Tamil Nadu (India)

Union Bank of India, Vellore, Phone : 0416-2223825

मानवाधिकार सुरक्षा गाइड

(ए०पी०सी०आर० (Association for Protection of Civil Rights) ने 'नागरिक एवं मानवाधिकार सुरक्षा गाइड' शीर्षक से हिन्दी में अपनी सद्य प्रकाशित पुस्तक में मौलिक अधिकार और मानवाधिकार से जुड़ी महत्वपूर्ण बातों को समाहित किया है । यह पुस्तक 'Human & Civil Rights : Defender's Resouree Manual' का हिन्दी अनुवाद है । इसके पांच भाग हैं । पहले भाग में मौलिक अधिकार और न्याय से जुड़े तथ्य दिये गये हैं ।

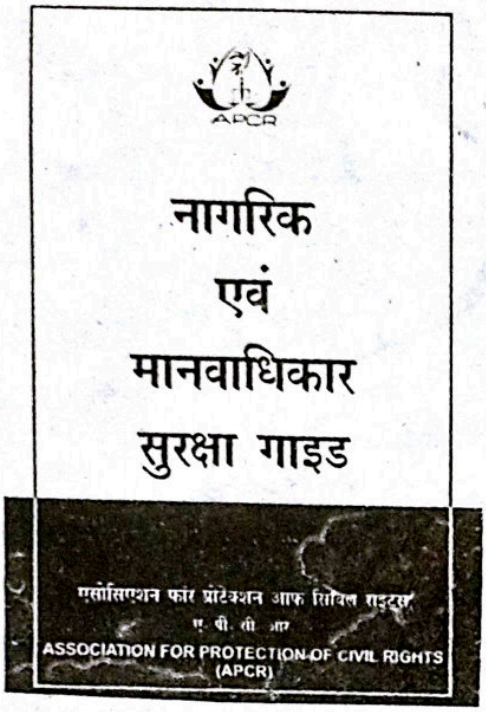

दूसरे भाग में भारत में फ़ौजदारी क़ानूनों और एफ०आई०आर० एवं जांच-ज़मानत आदि पर विस्तृत चर्चा की गयी है । तीसरा भाग आर०टी०आई० पर है । चौथे भाग में आयोगों का विवरण है, जबकि पांचवे भाग में प्रेस और मीडिया की 'मनमानी' पर रोक लगाने हेतु उचित प्रक्रिया अपनाने पर बल दिया गया है । इस सिलसिले में प्रेस कौंसिल ऑफ़ इंडिया के कामों का उल्लेख किया गया है । इस पुस्तक में अधिकार-हनन पर क़ानूनी प्रक्रिया अपनाने का तरीक़ा बताया है । 148 पृष्ठों वाली इस पुस्तक की क़ीमत प्रति कॉपी सौ रुपये है । अच्छे काग़ज़ पर बढ़िया छपाई से भी पुस्तक ख़ूबसूरत बन पड़ी है । पुस्तक निम्न पते से मंगा सकते हैं–Association for Protection of Civil Rights (APCR), 108, 3rd floor, Behind Living Style Mall, Pocket-1, Jasola, New Delhi-110025, E-mail : apcrindia@gmail.com

ग़ज़ल

लेकर समर गया, वो जिधर भी बशर गया,
पानी-हवा की करके सवारी शजर गया ।

जिसने किसी का दर्द बंटाया संवर गया,
दिल को किसी के जिसने दुखाया वो मर गया ।

दरिया ने रास्ता जो दिया 'मूसा'–'कृष्ण' को,
'फ़िरऔन' और 'कंस' का लश्कर बिखर गया ।

बेबस हैं हुक्मरां भी, नशा ज़र का है ख़राब,
दुनिया का हाल देख, मेरा दिल तो भर गया ।

नाकाम वो रहा जो मुसीबत में डर गया,
वो हो गया सफल जो भला काम कर गया ।

सैयद मुहम्मद असलम
142, अंधियारी बाग़, गोरखपुर-273001

एहतिशाम ख़ान मोबाइल : 09425842976

पब्लिक ट्रैवेल्स

सिवनी से मंडला	प्रातः 7:20
सिवनी से छिंदवाड़ा	प्रातः 7:55
छिंदवाड़ा से बालाघाट	प्रात:10:30
मंडला से सिवनी	दिन 12:50
बालाघाट से सिवनी	सायं 6:00
सिवनी से नैनपुर	सायं 5:40
नैनपुर से सिवनी	दिन 12:20

प्रतिदिन

नोट : शादी व पार्टियों के लिए 33, 40 एवं 50 सीटर बस उपलब्ध है संपर्क करें–

एहतिशाम ख़ान, बस स्टैंड, सिवनी (मध्य प्रदेश)

जिहाद, आतंकवाद और मुसलमान

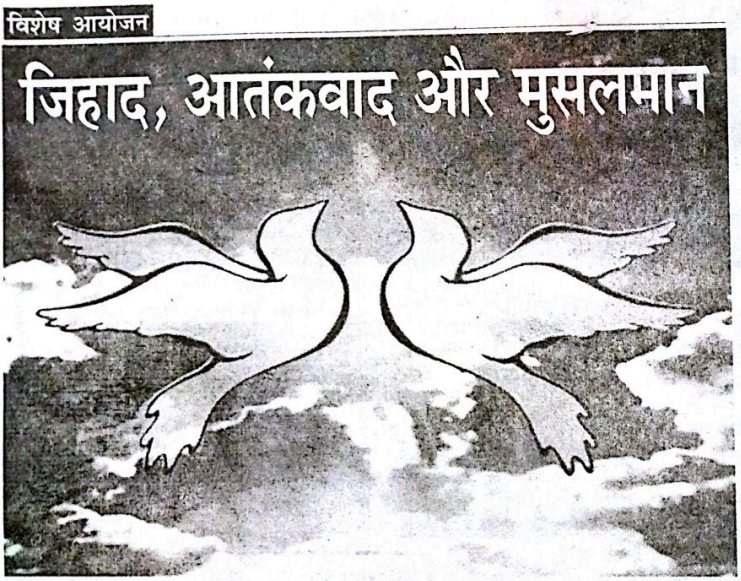

□ अब्दुल हन्नान नदवी

राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर कुछ वर्षों से होने वाले हंगामों, युद्ध और हिंसा के बाद अब कुछ क्षण ऐसे आये हैं जब इसकी आवश्यकता महसूस हो रही है कि बीते हालात पर दृष्टि डाली जाए और यह तय किया जाए कि कहां-कहां त्रुटियां हुई हैं और कहां-कहां हम सच्चाई को परखने में चूक गये हैं। अगर हम ऐसा नहीं करेंगे तो फिर हम स्थिति का सामना नहीं कर सकते और नयी रणनीति का निर्धारण नहीं कर सकते। भारत में सामान्य रूप से मुसलमान और उनका नेतृत्व जो न मज़बूत है और न ही कमज़ोर लेकिन चुप है। इसमें कोई सक्रियता और हलचल नहीं दिखायी पड़ती। ऐसा क्यों है यह बात समझ से परे है।

अमेरिका में होने वाला 9/11 और फिर उस समय के अमेरिकी राष्ट्रपति बुश का दो टूक जवाब 'हां' या 'नहीं' ने पूरी दुनिया के मुसलमानों की बुद्धि को ही शिथिल कर दिया था और ऐसा प्रतीत हो रहा था कि मुस्लिम नेतृत्वों, मुस्लिम शासनों और मुस्लिम समुदायों से सोचने-समझने की शक्ति ही छीन ली गयी हो। इसका प्रभाव यह हुआ कि दुनिया के लगभग सभी देशों में उलमा और विभिन्न दीनी विचारधाराओं की ओर से फ़तवे आना शुरू हो गये। कुरआन की आयतों और हदीसों के हवाले से पूरी दुनिया को यह समझाने का प्रयास किया गया कि इस्लाम में आतंकवाद निषिद्ध है और जो लोग ऐसा कर रहे हैं वे इस्लाम से बाहर हैं या वैचारिक रूप से पथभ्रष्ट हैं या उनका भटके हुए वर्गों से संबंध है और ऐसे लोगों के साथ सख़्त से सख़्त कार्रवाई होनी चाहिए, आदि-आदि।

भारत में भी बड़े पैमाने पर रैलियां निकाली गयीं, प्रदर्शन हुए, आतंकवाद के पुतले जले और यह प्रयास भी हुआ कि इसे नेशनल मीडिया में अधिक से अधिक दिखाया जाए, लेकिन इन सबके बावजूद भारत में भी और दुनिया के

शान्ति-धर्म इस्लाम



दूसरे भागों में भी धमाके होते रहे और बेगुनाह मरते रहे और आरोप लगा इस्लाम और मुसलमानों पर। भारत में भी मुस्लिम नवजवानों की गिरफ़्तारियों का सिलसिला चलता रहा और आज भी उनमें से अधिकतर का जीवन जेलों में बरबाद हो रहा है या वे अदालतों के चक्कर काट रहे हैं और यह आशा किये बैठे हैं कि शायद उन्हें न्याय मिल जाए।

इन सबका कारण यह था कि हमारा मुस्लिम नेतृत्व चाहे वह राष्ट्रीय स्तर पर हो या अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर मानसिक और सामाजिक दबाव का शिकार हो गया और रक्षात्मक मुद्रा में चला गया। उसे महसूस हुआ कि मुस्लिम नवजवानों की गिरफ़्तारियों पर रोक और इस्लाम और मुसलमानों पर लगाये जाने वाले आरोपों को कुरआन की आयतों के हवाले से यह सिद्ध किया जाए कि मुसलमानों की इसमें कोई भूमिका नहीं है। लेकिन इसका प्रभाव न पड़ना था न पड़ा। इसका मुख्य कारण था हमारा रक्षात्मक मुद्रा में आ जाना और कुरआन की आयतों की व्याख्या को मुसलमानों तक सीमित रखना।

इन दो ग़लतियों का प्रभाव आज हमारे सामने है और वे नवजवान भी हैं जो जेलों में हमारी ग़लतियों की सज़ा भुगत रहे हैं। सफ़ाई देने और रक्षात्मक मुद्रा में जाने का प्रभाव यह हुआ कि हमारे फ़तवों, कुरआनी आयतों के हवालों और उपदेशों को कोई महत्व नहीं दिया गया। हमारा नेतृत्व स्थिति को परख नहीं सका और अपनी क़ौम का बचाव भी नहीं कर सका। आज भी मुस्लिम जनता का एक वर्ग बार-बार यही कहता है कि निर्दोषों का ख़ून बहाना आतंकवाद है, जिहाद नहीं, हालांकि दोनों दो अलग-अलग विषय हैं और इन्हें इसलिए एक किया गया है कि हम शब्दों के ही फेर में उलझ कर रह जाएं और सच्चाई तक न पहुंच सकें।

हमारे देश में पिछले कुछ वर्षों में हुए धमाकों में

मुस्लिम नवजवानों पर आरोप लगाये जाते रहे और मीडिया और देश को धर्म के आधार पर बांटने वालों ने मुस्लिम नेतृत्व पर यह आरोप लगाया कि वे आतंकवाद का समर्थन करते हैं और फिर हुआ यह कि बम धमाके भी होते रहे, मुस्लिम नवजवान गिरफ़्तार भी होते रहे और हमारा एक वर्ग देश के विभिन्न क्षेत्रों में आतंकवाद विरोधी सेमीनार आयोजित कराता रहा, जिसमें यह संदेश दिया गया कि अगर मुस्लिम नवजवानों ने यह काम किया है तो उन्हें ज़रूर सज़ा मिले, क्योंकि इस्लाम निर्दोषों की हत्या का समर्थन नहीं करता ।

अब यह पता चला है कि ये सारे धमाके उन लोगों की करतूतें हैं जो अपने आपको अकेला देशभक्त कहते हैं । जांच एजेंसियां इस दिशा में काम तो कर रही हैं, लेकिन उनकी चाल बहुत मन्द है, मीडिया को भी कोई रुचि इसलिए नहीं है कि पकड़े जाने वाले लोग मुसलमान नहीं हैं । मामला कहां तक पहुंचा है, किसी को ख़बर नहीं । जांच एजेंसियां क्या परदा उठाती हैं और किस प्रकार सारे मामले को हल करती हैं यह केवल उनकी ईमानदारी पर ही निर्भर है ।

अब यह पता चला है कि ये सारे धमाके उन लोगों की करतूतें हैं जो अपने आपको अकेला देशभक्त कहते हैं । जांच एजेंसियां इस दिशा में काम तो कर रही हैं, लेकिन उनकी चाल बहुत मन्द है, मीडिया को भी कोई रुचि इसलिए नहीं है कि पकड़े जाने वाले लोग मुसलमान नहीं हैं । मामला कहां तक पहुंचा है, किसी को ख़बर नहीं । जांच एजेंसियां क्या परदा उठाती हैं और किस प्रकार सारे मामले को हल करती हैं यह केवल उनकी ईमानदारी पर ही निर्भर है ।

इसी परिप्रेक्ष्य में इस पर विचार करने की बहुत आवश्यकता है कि भारत में कुछ मुस्लिम संगठनों की ओर से हर धमाके को जिहाद से जोड़कर देखने का दृष्टिकोण कितना सही और कितना ग़लत है । अगर हम अपना दृष्टिकोण नहीं बदलेंगे तो हमारे शिक्षित नवजवान यूं ही जेलों में बन्द किये जाते रहेंगे । इसी प्रकार कुछ दिनों पूर्व मुंबई में जिहाद और आतंकवाद के विषय पर एक कांफ्रेंस हुई । मुंबई हमले पर बोलते हुए डॉ॰ मुहम्मद शाह इदरीसी ने कहा कि जिन लोगों ने मुंबई पर हमला किया, वे न ही मुसलमान हैं और न ही कुरआन के मानने वाले हैं, अब प्रश्न यह है कि मुंबई पर होने वाले हमले में हमलावर अगर मुसलमान ही थे, जैसा कि कहा जाता है तो फिर उसका कुरआन से क्या सरोकार या जिहाद से क्या सरोकार, बल्कि इस्लाम से भी क्या सरोकार ? क्या मात्र इसलिए कि ऐसा करने वाले मुसलमान थे, तो फिर मुसलमानों में भी बहुत से ऐसे होते हैं जो पैसों के लिए हत्या करते हैं, चोरियां करते हैं, डाके डालते हैं, इज़्ज़त लूटते हैं, वेश्यावृति का काम करते हैं और भी बहुत कुछ करते हैं । लेकिन इस सबके बावजूद जब ऐसे मुसलमान की बात होती है तो फिर उनका रिश्ता इस्लाम, कुरआन और जिहाद से क्यों नहीं जोड़ा जाता, केवल आतंकवाद में ही क्यों ? और फिर अगर एक मुसलमान ऐसा करता है तो इसमें जिहाद आदि की बात कहां से आयी ?

बात सिर्फ़ इतनी-सी है कि अगर मुसलमानों में यह बीमारी आ गयी है तो यह स्पष्ट है कि एक बीमारी जो समाज में रहने वाले दूसरे लोगों में मौजूद थी अब उसके लक्षण मुसलमानों में भी नज़र आने लगे हैं । यह एक बहुत आसान तरीक़ा है मामले को समझने-समझाने का, जिसे इतना बढ़ाया जा रहा है कि पूरी मुस्लिम क़ौम संदेह के घेरे में आ गयी है, हालांकि गुंडागर्दी और आतंकवाद तो हर जगह है ।

पिछले कुछ वर्षों में नक्सलियों ने जितने सैनिक मार डाले हैं और देश की सम्पत्ति का जो नुक़सान किया है, उसकी सूची इतनी लंबी है कि उसे पढ़ने के लिए समय निकालना पड़ेगा । इराक़ पर अमेरिकी आक्रमण से पहले तमिल सबसे ख़तरनाक थे और आत्मघाती हमलों के लिए

जाने जाते थे । अब प्रश्न यह है कि हम इन हमलों और हमलावरों को किस दृष्टिकोण से देखते हैं, क्या हम भी उनके धर्मों को निशाना बनाएं । क्या हम यह कह सकते हैं कि उनके धर्म ग्रंथों में आतंकवाद के विरुद्ध क्या लिखा है और क्या नहीं ? लेकिन ऐसा नहीं होता, केवल इस्लाम के बारे में ही ऐसा क्यों होता है ?

इस्लाम के बारे में हम क्यों बचाव की मुद्रा में चले गये हैं, आख़िर यह नौबत ही क्यों आयी कि मुस्लिम नवजवान अदालतों में और मुस्लिम नेतृत्व खुले आकाश के नीचे यह सफ़ाई देने में लगे हुए हैं कि इस्लाम आतंकवाद का धर्म नहीं है और क़ुरआन एवं जिहाद का इससे कोई संबंध नहीं है । जब आप बचाव की मुद्रा में जाएंगे तो फिर आपकी सोच भी रक्षात्मक हो जाती है और फिर एक समय ऐसा आता है कि हमें कोई बड़ी आसानी से उचक लेता है और हम देखते रह जाते हैं और यही आजकल पूरी दुनिया में हो रहा है ।

पिछले कुछ वर्षों में नक्सलियों ने जितने सैनिक मार डाले हैं और देश की सम्पत्ति का जो नुक़सान किया है, उसकी सूची इतनी लंबी है कि उसे पढ़ने के लिए समय निकालना पड़ेगा । इराक़ पर अमेरिकी आक्रमण से पहले तमिल सबसे ख़तरनाक थे और आत्मघाती हमलों के लिए जाने जाते थे । अब प्रश्न यह है कि हम इन हमलों और हमलावरों को किस दृष्टिकोण से देखते हैं, क्या हम भी उनके धर्मों को निशाना बनाएं । क्या हम यह कह सकते हैं कि उनके धर्म ग्रंथों में आतंकवाद के विरुद्ध क्या लिखा है और क्या नहीं ? लेकिन ऐसा नहीं होता, केवल इस्लाम के बारे में ही ऐसा क्यों होता है ?

क़ुरआन की आयतों का हवाला देकर यह सिद्ध करने की कोई आवश्यकता नहीं है कि इस्लाम में आतंकवाद नहीं है, इस क़ुरआन को समझने उसकी व्याख्या करने और इसकी शिक्षाओं को दूसरों तक पहुंचाने में भी हम बचाव की मुद्रा में चले गये, और हम यह भूल गये कि क़ुरआन का अवतरण सारी मानवता के लिए हुआ है । जब क़ुरआन यह कहता है कि एक निर्दोष की हत्या समस्त मानवता की हत्या है तो क्या इससे केवल वही लोग समझे जाएंगे जो कुछ मुस्लिम नवजवानों के द्वारा मारे गये ? क्या यह आयत उन लोगों के लिए नहीं है जो फ़िलिस्तीन में मारे जा रहे हैं या इराक़ और अफ़ग़ानिस्तान पर अमेरिकी हमले में मारे गये । क्या ये शिक्षाएं अमेरिका, इसराईल, ब्रिटेन आदि दुनिया की आक्रामक क़ौमों के लिए नहीं हैं । फिर यह क्या बात हुई कि इस अप्रमाणित दुष्प्रचार पर कि मुसलमानों द्वारा निर्दोष लोग मारे गये, हम क़ुरआन की आयतों का हवाला दें और जब बेगुनाह मुसलमान उनके हाथों मारे जाएं तो हमारी जुबान ही गूंगी हो जाए । हमारे ऐसा करने से यही सिद्ध होता है कि हमने क़ुरआन को केवल मुसलमानों की एक धार्मिक पुस्तक समझ लिया है ।

पवित्र क़ुरआन पूरी मानवता के लिए अवतरित हुआ है और आवश्यक है कि इसे पूरी दुनिया में फैलाया जाए और दुनिया को यह बताया जाए कि निर्दोष मनुष्यों की हत्या इसे नरक बनाने का प्रयास है । दुनिया में रहने वाले विभिन्न समुदायों के बीच नफ़रत पैदा करने की कोशिश है । किसी को मारना, किसी की ज़मीन हथियाना, किसी के देश पर आक्रमण करना । बिना किसी कारण के या झूठ का सहारा लेकर मानवता की हत्या करना और सारे संसार में हत्या एवं रक्तपात मचाना क़ुरआन की रोशनी में सब ग़लत है, इसे करने वाले चाहे मुसलमान हों या ग़ैर-मुस्लिम । लेकिन इस क्षेत्र में मुसलमानों की रक्षात्मक मुद्रा ने अन्य समुदायों को खुली छूट दे रखी है और वे मुसलमानों की बिना किसी अपराध के हत्या कर रहे हैं ।

देश में होने वाले बम धमाकों में मुसलमानों के लिप्त होने पर विचार करने की आवश्यकता है । अधिकतर नवजवानों को अदालत ने यह कहकर छोड़ दिया कि इनके ख़िलाफ़ कोई सबूत है ही नहीं और यह कि यह पुलिस की शरारत थी । दूसरी बात यह कि सुरक्षा एजेंसियां इसके दूसरे

पहलू पर भी काम कर रही हैं अगर वे ईमानदारी से काम लें तो आशा है कि बहुत से रहस्यों से परदा उठेगा ।

इस समय इराक़, अफ़ग़ानिस्तान, फ़िलिस्तीन आदि युद्ध की हालत में हैं और वे दूसरों के क़ब्ज़े में हैं । जब तक इन देशों पर क़ब्ज़ा बना रहेगा हालात सामान्य नहीं होंगे और बेगुनाहों की जानें जाती रहेंगीं । पाकिस्तान में भी लगातार बम धमाके हो रहे हैं । सोमालिया में भी लंबे समय से गृह युद्ध की स्थिति है । सोमालिया के राष्ट्रपति शरीफ़ अहमद अमेरिकी सहयोग से वहां की सत्ता पर क़ाबिज़ हैं । वहां सेना और दूसरे ग्रुपों के बीच लगातार संघर्ष चलता रहता है और इसमें मारी जाती हैं ग़रीब और बेगुनाह जनता । यह गृह युद्ध तब तक समाप्त नहीं हो सकता, जब तक अमेरिका वहां के आंतरिक मामलों में हस्तक्षेप करना बन्द न कर दे ।

यमन में भी कुछ ऐसी ही परिस्थिति है । वहां जो ग्रुप विरोध करते हैं, उनके लोग शीआ हैं, इसलिए अमेरिका और अन्य देश यह शोर मचाते हैं कि उसे ईरान से सहायता मिल रही है । अमेरिकी दुष्प्रचार तो यह है कि अलक़ायदा के अधिकतर लोग पाकिस्तान और अफ़ग़ानिस्तान से भाग-भाग कर यहां आकर बस गये हैं ।

जहां तक बेगुनाहों के मरने का सवाल है तो हमेशा से यह होता आया है कि जनता ही युद्ध की क़ीमत चुकाती है । पहले युद्ध खुले मैदान में हुआ करता था और अब हर घर युद्ध भूमि बना हुआ है । पैसा देकर किसी व्यक्ति का ख़ून पहले भी किया जाता था अब भी किया जाता है । अब तो पैसे देकर बम धमाके भी कराये जाते हैं, ताकि चुनाव जीता जा सके । दूसरे समुदाय को बदनाम करने के लिए भी ऐसा किया जाता है । ऐसे में हम एक ही बात सबके बारे में कैसे कह सकते हैं । अगर मुसलमानों में आतंकी पाये जाते हैं तो फिर यह एक सांसारिक व्यवस्था है, जहां प्रत्येक समुदाय और प्रत्येक धर्म के मानने वालों में कुछ लोग ग़लत होते हैं । अगर कुछ मुस्लिम युवक हिंसा में लिप्त भी हैं तो उसे इस्लाम या क़ुरआन से क्यों जोड़ा जाए । दूसरी जगहों पर तो ख़ुद सरकारें ऐसे काम कर रही हैं । जैसे इसराईल, अमेरिका, ब्रिटेन ये सब बेगुनाहों का ख़ून ही तो बहा रहे हैं ।



ऐसी स्थिति में इस बात का तो प्रश्न ही नहीं उठता कि हम इस पर बहस करें कि इस्लाम एक ईमानदार और न्याय प्रिय धर्म है । इस्लाम हिंसा का समर्थन नहीं करता, वह बेगुनाहों की हत्या से रोकता है । ऐसे में मुस्लिम नेतृत्व को बहुत सोच-समझकर क़दम उठाने की ज़रूरत है । हालात को ख़ूब अच्छी तरह समझने की ज़रूरत है ।

आवश्यकता है कि हमारे धार्मिक और सामाजिक नेतृत्व इस साज़िश को समझें और यह जानें कि इस्लाम के दुश्मन किन-किन तरीक़ों और रास्तों से हमें शब्दों के जाल में उलझा कर अपना लक्ष्य पूरा कर रहे हैं । हम अपने अध्ययन को विस्तार देकर ही इस्लाम और मुसलमानों के विरुद्ध किये जाने वाले इस दुष्प्रचार अभियान को तोड़ सकेंगे और अपने आपको रक्षात्मक मुद्रा से बाहर निकालेंगे । हमें हालात का डटकर मुक़ाबला करना चाहिए, इस विश्वास के साथ कि कोई भी हमारे प्रमाणों के सामने टिक नहीं सकता है । अगर हम रक्षात्मक मुद्रा में आकर सामना करना चाहेंगे तो इसमें हमारा नुक़सान ही होगा ।

80 फ़ीसदी कर्मचारी भ्रष्ट

नेता भ्रष्ट इस वजह से होते हैं क्योंकि भ्रष्टाचार में उनका साथ देने के लिए सरकारी अफ़सर हमेशा तैयार रहते हैं । कार्मिक मंत्रालय की ओर से कराये गये एक सर्वेक्षण में यह बात सामने आयी है । हैदराबाद की संस्था 'सेन्टर फॉर गुड गवर्नेंस' ने 'एसी नेल्सन ओआरजी मार्ग' के सहयोग से यह सर्वेक्षण कराया है ।

इस सर्वेक्षण के तहत आई॰ए॰एस॰, आई॰एफ॰एस॰, आई॰पी॰एस॰, आई॰आर॰एस॰ और छह अन्य शीर्ष केन्द्रीय सेवाओं के 4,808 अधिकारियों से सवाल पूछे गये । अस्सी फ़ीसदी अधिकारी इस बात से सहमत थे कि राजनेता भ्रष्टाचार में इस वजह से कामयाब हो जाते हैं क्योंकि सिविल सेवा के अधिकारियों का एक वर्ग उनका साथ देने के लिए हमेशा तत्पर रहता है ।

चंगेज़ ख़ान और मुसलमान

● एहसान शौक़

चंगेज़ ख़ान से कई युद्ध में हार का सामना करने के बाद अपने रक्षादल के साथ सुल्तान ख़्वारिज़्म शाह ने बग़दाद जाने का इरादा किया । अभी सुल्तान ख़्वारिज़्म शाह का क़ाफ़िला हमदान के हरे-भरे मैदानों में था कि सोबदाई बहादुर ने उत्तर के पहाड़ी इलाक़े से निकल कर और ज़बी नोयान ने दक्षिण के जंगलों को रौंदते हुए फिर सुल्तान ख़्वारिज़्म शाह पर भीषण आक्रमण किया । इस जंग में भी ख़्वारिज़्म शाह के रक्षक दस्तों के सिपाही मैदाने जंग से भाग निकले और भागने के बाद वे दोबारा ख़्वारिज़्म शाह को क़त्ल करने की योजना बनाने लगे । जब ख़्वारिज़्म शाह को अपने वफ़ादार साथियों से इस क़त्ल की योजना के बारे में पता चला, तो रात में सुल्तान ने अपना ख़ेमा छोड़कर एक-दूसरे साधारण ख़ेमे में चला गया, जहां वह अपने मुहाफ़िज़ दस्ते के बाग़ी सिपाहियों के तीरों से बचा रहा ।

अगले दिन सुल्तान ख़्वारिज़्म शाह ने अपना शाही वस्त्र उतारा और वह पहाड़ी रास्ते से गुज़रता हुआ ख़िज़्र सागर (कैस्पियन सागर) के किनारे एक छोटे से क़स्बे में पहुंचा जहां मल्लाहों की बस्ती थी । क़स्बे के ग़द्दारों और विश्वासघातियों को मस्जिद में नमाज़ की अदायगी के दौरान ज्यों ही सुल्तान ख़्वारिज़्म शाह की मौजूदगी का पता चला, तो उन्होंने सुल्तान को गिरफ़्तार कराने के लिए अपने जासूस चंगेज़ ख़ान के पास भेज दिये । अत: मंगोल सेना जब क़स्बे में दाख़िल हुई, तो सुल्तान ख़्वारिज़्म शाह फ़ौरन नाव में सवार होकर ख़िज़्र सागर के एक द्वीप में चला गया । उसी द्वीप पर सुल्तान ख़्वारिज़्म शाह ने शेष जीवन व्यतीत किया । और यहीं पर मायूसी, नाउम्मीदी और बीमारी की ऐसी हालत में वफ़ात (मृत्यु) पायी कि सुल्तान ख़्वारिज़्म शाह की लाश को कफ़न तक नसीब न हुआ ।

सुल्तान ख़्वारिज़्म शाह की मृत्यु के बाद सोबदाई बहादुर उत्तर की ओर बढ़ते हुए तबरेज़ और मूसल से होता हुआ हिन्दूकुश की बर्फ़ीली चोटियों के नीचे-नीचे क़फ़क़ाज़ के पर्वतीय शृंखला के क्षेत्रीय भू-भाग में दाख़िल हुआ और उसने जंगजू गिरजिस्तान के पहाड़ी क़बीलों पर आक्रमण कर दिया । गिरजिस्तानी क़बीले के लोगों ने बड़ी बहादुरी से सामना किया, मगर हार गये । क़फ़क़ाज़ पर्वत (यह पर्वत काकेशिया, यूरोपीय रूस के प्रदेश में स्थित है।) के तंग दर्रों में से गुज़र कर मंगोल सेना उत्तर के पहाड़ी ढलानों पर पहुंची तो तुफ़लिस के स्थान पर अलान, चरकस और कुबचाक क़बीलों ने एक जुट होकर मंगोलों पर आक्रमण कर दिया । इस जंग में सोबदाई बहादुर ने बड़ी चालाकी से इन क़बीलों को हराया और उन्हें ख़िज़्र सागर के पार उन उत्तरीय रूसी प्रदेशों में भगा दिया, जहां रूसी फ़ौज मंगोलों से लड़ने के लिए तैयार खड़ी थी । दोनों सेनाओं के बीच एक सप्ताह तक झड़पें होती रहीं । दूसरे सप्ताह जब जबी नोयान, सोबदाई बहादुर की सहायता के लिए आ पहुंचा तो मंगोलों ने पूरी तरह जंग की शुरुआत करते हुए अनगिनत रूसी सेनानायकों को मौत के घाट उतार दिया ।

रूसी फ़ौज को हराने के बाद मंगोल सेना जनेवा, क़रम और पारगीफ़ में दाख़िल होकर करीमिया पर आक्रमण करने के लिए पूर्वी यूरोप की ओर बढ़ी तो चंगेज़ ख़ान ने मंगोलों को उत्तरीय प्रदेशों से रोक कर पूर्व की ओर वापस होने का आदेश दिया । अत: चंगेज़ ख़ान का आदेश मिलते ही दोनों सेनाएं वापसी की राह पकड़ीं । रास्ते में मंगोल सेनानायक जबी नोयान की मृत्यु हो गयी । इस तरह उसकी सेना का भी सेनानायक सोबदाई बहादुर ही बना । मंगोल सेना उत्तर की ओर दौलगा नदी के किनारे पर बसे हुए बल्ग़ारियों और मुतक़ाई तुर्कों को यूराल पर्वत के पर्वतीय क्षेत्रों में तहस-नहस करके सीहूं नदी के किनारे पड़ाव डाला, जहां चंगेज़ ख़ान मिल्लते इस्लामिया के उत्तराधिकारी शहज़ादा जलालुद्दीन ख़्वारिज़्म शाह की खोज में हेरात, ख़ुरासान और अरगिंज (मिल्लते इस्लामिया की राजधानी) का नामोनिशान इस दुनिया से मिटाकर यूरोप को अपने पैरों तले रौंदने का इरादा कर चुका था ।

पतझड़ के मौसम के शुरुआत में बल्ख़, हेरात, ख़ुरासान के शहरों और मिल्लते इस्लामिया के अन्य विजित इलाक़ों में जब ख़्वारिज़्मियों ने जलालुद्दीन ख़्वारिज़्म शाह के ईमा पर मंगोलों के विरुद्ध विद्रोह का झंडा ऊंचा किया, तो चंगेज़ ख़ान ने आमू नदी का बांध तोड़कर जलालुद्दीन ख़्वारिज़्म शाह को कुचलने के लिए अपने छोटे बेटे तोलाई ख़ान को भेजा, जिसने रास्ते में बाबा नामक पर्वत के पर्वतीय क्षेत्र के बीच बामियान के शहर का घेराव कर लिया । इस अवसर पर जलालुद्दीन ख़्वारिज़्म शाह और बामियान का एक अमीर अलग़बेग ने अफ़ग़ान बहादुरों की ताज़ादम फ़ौज के साथ हस्तक्षेप किया, मगर मंगोल बहादुर सफ़ों (पंक्तियों) को चीरते हुए आगे बढ़े और क़िले पर अधिकार करके शहर में प्रवेश कर गये । मंगोलों ने यहां भी इमारत और मकानों में आग लगा दी । बाग़ों और खेतों को उजाड़ दिये और शहर के सारे निवासियों को घरों से बाहर निकाल कर उनको दो अलग-अलग भागों में विभाजित कर दिया और आदेश दिया कि तुम एक-दूसरे की मुश्कें कसो । जब मुश्कें कसी जा चुकीं तो मंगोलों ने अपने तीरों, तलवारों, नेज़ों और कुल्हाड़ियों से मर्दों, औरतों, बच्चों और बूढ़ों को इस तरह क़त्ल किया कि गलियों-बाज़ारों में घुटनों तक ख़ून जमा हो गया । मंगोल दरिन्दे रोती-बिलख़ती औरतों के बाल पकड़कर आगे झुका देते, ताकि आसानी से उनकी रीढ़ की हड्डी पर कुल्हाड़ी से चोट करके तोड़ा जा सके, जो मर्द थोड़ा-बहुत हस्तक्षेप करते तो मंगोल वहशी दरिन्दे उनका सिर तोड़ डालते और नारा-ए-तकबीर का मज़ाक़ भी उड़ाते । यह हालत कई वर्ष तक रही । इस तरह इस उथल-पुथल वाले समय में जो मुसलमान जीवित बचे, वे जंगलों में भाग गये । शहर केवल कुत्तों और गिद्धों का घर बन गया, जिनकी ख़ुराक़ इन्सान की लाशें थीं ।

बामियान को क़त्लों-ग़ारत और तबाही व बर्बादी का मरघट बनाने के बाद चंगेज़ ख़ान ने अपने बिखरे हुए लश्कर को एकजुट करके ग़ज़नी के पूर्व में सारे मुख्य दर्रों और मुख्य नाकों पर अधिकार करके सिंध घाटी के पहाड़ों की ओर बढ़ना शुरू कर दिया, ताकि यहां भी जलालुद्दीन ख़्वारिज़्म शाह को हराकर भगाया जा सके और वह दिल्ली के सुल्तान शमशुद्दीन अल्तमिश की ओर से फ़ौजी सहायता प्राप्त न कर सके । अत: नदी के दाएं किनारे पर मंगोलों की गतिविधियों और पेशक़दमी को देखकर ख़्वारिज़्मी सेना जलालुद्दीन ख़्वारिज़्म के नेतृत्व में मंगोलों के विरुद्ध आमने-सामने आ गयी और ख़्वारिज़्मियों ने पहले हमले की शुरुआत करके मंगोलों को नदी के किनारे से मार भगाया । इस लड़ाई में स्वयं चंगेज़ ख़ान बुरी तरह घायल हुआ और उसका घोड़ा भी मर गया, तो चंगेज़ ख़ान ने दूसरी बार जंग का पांसा अपने हक़ में पलटने के लिए मंगोल लश्कर के कुछ दस्तों के साथ दुश्वार गुज़ार पहाड़ी घाटियों और चट्टानों पर चढ़कर ख़्वारिज़्मियों के पीछे की ओर से अचानक आक्रमण कर दिया, जिससे ख़्वारिज़्मी फ़ौज के पांव उखड़ गये और ख़्वारिज़्मी सेना हारकर तितर-बितर हो गयी ।

शहज़ादा जलालुद्दीन ख़्वारिज़्म शाह अपनी जान बचाने के लिए मैदाने जंग से भाग गया, और वह नदी पार करके दूसरे दूर-दराज़ इलाक़ों में ग़ायब हो गया । चंगेज़ ख़ान ने

SHATABDI FOUNDATION, GAYA

- Started Shatabdi Public School in 200 I with primary classes, has now developed into a 10+2 CBSE affiliated educational institution with quality education in modern subjects with moral orientation.
- Presently there are around 1000 students who are provided modern teaching facilities. The Foundation also adopts poor/ orphan students
- Under Upwardbound .scheme, another project has been launched for preparation of +2 students to compete in Entrance Test for Engineering, Medical and other professional & technical courses.
- Our immediate needs are Construction of Prayer Hall & Purchase one more school bus, Purchase of 30 Computers.

Ahle Khair Hazrat are Requested to Donate.

Kindly send your cheque/draft in favour of "Shatabdi Foundation, Gaya".

(Prof Z.H.Khan) Chairman

(Prof M. B. Zaman) Secretary

Shatabdi Public School, Katari Hill Road, Gaya-823001 (Bihar) INDIA

जलालुद्दीन ख़्वारिज़्म शाह का पीछा करने के लिए मंगोल दस्तों के कुछ लश्कर को भेजा, मगर जब जलालुद्दीन ख़्वारिज़्म शाह का कुछ पता न चला तो चंगेज़ ख़ान ने नदी के दूसरे इलाक़ों में बिखर कर मुल्तान और लाहौर में ख़ूब तबाही मचायी । चूंकि मंगोल सेना और चंगेज़ ख़ान गोबी मरुस्थल के ठंडे इलाक़े के रहने वाले थे, इसलिए वे मुल्तान और लाहौर की गर्मी को सह न सके । अत: सिंधु नदी के किनारे पर लड़ी जाने वाली निर्णायक लड़ाई जीतने के बाद चंगेज़ ख़ान ने अपने लश्कर को वापसी का आदेश दिया, क्योंकि चीन में मकोली बहादुर मर चुका था और गोबी मरुस्थल में सरदारों के मतभेद के कारण वहां के हालात नाज़ुक थे । रास्ते में मंगोल लश्कर पेशावर को लूटता हुआ समरकन्द जा पहुंचा ।

चंगेज़ ख़ान के आगमन पर समरकन्द के आश्रितों ने मंगोलों के लिए बहुमूल्य उपहार लेकर आये, तो चंगेज़ ख़ान ने मिल्लते इस्लामिया के विजित राज्यों पर यासा का क़ानून लागू कर दिया । समरकन्द के लोगों में से ही एक को समरकन्द का गवर्नर व सूबेदार नियुक्त किया । बसंत ऋतु के प्रारंभ में चंगेज़ ख़ान के आदेश पर सीहूं नदी के किनारे ''कुरुलताई'' (मजलिसे शूरा) का आयोजन हुआ, तो जीते हुए राज्यों व इलाक़ों से सारे सरदार, सेनानायक, दूर-दराज़ इलाक़ों के गवर्नर, क़िलेदार, सूबेदार और राजदूत बड़ी शानो-शौकत के साथ कुरुलताई की सभा में पहुंचे । उन्होंने आधी दुनिया से जितनी माल-दौलत लूटी थी सब चंगेज़ ख़ान को पेश किया । कुरुलताई का जश्न एक माह तक चलता रहा । इस दौरान सारे मेहमान घोड़ी का दूध और भूने हुए बाजरे या अधपके गोश्त के बजाय अच्छे और स्वादिष्ट खाना खाते रहे । जश्न के ख़ात्मे से पहले चंगेज़ ख़ान ने सारे मेहमानों की मौजूदगी में अपने चारों बेटों (जोची, ओग़दाई, चुग़ताई और तोलाई) को यासा नामक क़ानून का पाबन्द रहने की हिदायत की ।

फिर ओग़दाई ख़ान को अपना उत्तराधिकारी नियुक्त किया, क्योंकि चंगेज़ ख़ान का शरीर अब बूढ़ापे के कारण कमज़ोर होता जा रहा था । चंगेज़ ख़ान ने अपने बेटों से अपने भविष्य के बारे में बात करके अपने राज्य के पश्चिमी मध्य के दूर-दराज़ इलाक़ों की शासन व्यवस्था जोची ख़ान को सौंपी और उसे सेना का मुख़्तार भी बनाया । चंगेज़ ख़ान के इस निर्णय पर उसके अन्य तीनों बेटों ने नाराज़गी प्रकट की और कहा-''जोची का ख़ून मरकीत है । यह राज्य के शासन प्रबंध और राज्य के बागडोर में हमारे बराबर भागीदार कैसे हो सकता है ।''

चंगेज़ ख़ान ने अपने बेटों की यह बात बड़ी ख़ामोशी से सुनी और फिर उसने जोची ख़ान को उर्दू-ए-माला के रास्ते से निकल कर पश्चिम के मध्यवर्ती क्षेत्र में जाने की विधिवत आज्ञा दे दी । बहरहाल इस घटना के बाद जब पहाड़ी झीलों में दूसरे वर्ष फिर चंगेज़ ख़ान के आदेश से कुरुलताई की सभा का आयोजन हुआ, तो इस कुरुलताई में जोची ख़ान ने बीमारी का बहाना बनाकर इस जश्न में शिरकत करने से मना कर दिया । अत: चंगेज़ ख़ान ने जोची

प्रो॰ मुहम्मद क़मरुज़्ज़मा

9826809922
9826689853

पापुलर ट्रेवल्स

लग्जरी बस सेवा 2/2 (स्लीपर) के लिए सम्पर्क करें ।

अम्बिकापुर से बिलासपुर	रात्रि	23:20
अम्बिकापुर से रायपुर	प्रात:	03:00
अम्बिकापुर से डाल्टेनगंज	रात्रि	21:30
अम्बिकापुर से डाल्टेनगंज	रात्रि	22:25
अम्बिकापुर से डाल्टेनगंज	रात्रि	22:30
मननगढ़ से डाल्टेनगंज	रात्रि	19:10
अम्बिकापुर से मननगढ़	संध्या	05:00
अम्बिकापुर से चीरमीरी	प्रात:	06:30
अम्बिकापुर से मननगढ़	संध्या	16:10
रायगढ़ से डाल्टेनगंज	रात्रि	21:40

राम मंदिर के पास, अम्बिकापुर, सरगुजा (छत्तीसगढ़)

ख़ान के इन्कार को अपने आदेश का उल्लंघन समझा और फिर अपने दूसरे बेटों को जोची ख़ान को कुचलने का आदेश देकर हया के इलाक़ों में पेशक़दमी शुरू कर दी, ताकि हया क़ौम को उसकी उदंडता का मज़ा चखाया जा सके ।

सर्दियों के मौसम में जमे हुए दलदलों और नदियों को पार करके जब चंगेज़ ख़ान हया के इलाक़े में पहुंचा, तो चंगेज़ ख़ान के दुश्मन क़बाइल (बाग़ी चीनवासी, पश्चिमी चीनी फ़ौज, बाग़ी तुर्क, और हया के ख़ानाबदोश) ने एकजुट होकर मंगोल सेना पर भीषण आक्रमण कर दिया । बाग़ी वहशियों का यह आक्रमण बहुत ख़तरनाक था, मगर इस आक्रमण में भी चंगेज़ ख़ान ने बड़ी होशियारी के साथ बाग़ी क़बाइल को हरा दिया । हया का बादशाह अपनी जान बचाने के लिए एक पहाड़ी खोह में जा छिपा । वहां से उसने चंगेज़ ख़ान से माफ़ी मांगी । चंगेज़ ख़ान ने हया के बादशाह को माफ़ करके प्राचीन चीन की सुंग हुकूमत के इलाक़ों की ओर लश्करकशी शुरू कर दी । अभी मंगोल सेना कूच भी न कर पायी थी कि चंगेज़ ख़ान को जोची ख़ान की (जिसे जोजी और तौस भी कहा जाता था) मौत की ख़बर मिली ।

चंगेज़ ख़ान ने फ़ौजी पेशक़दमी रोक दी । उसने सफ़र में शिकार खेलना बिल्कुल छोड़ दिया । पड़ाव के दौरान चंगेज़ ख़ान बहुत ज़्यादा बीमार हो गया । पुजारियों की भविष्यवाणियों पर अपने अन्तिम समय (अर्थात मृत्यु का समय) का यक़ीन होते ही उसने अपने सारे अरख़ूनों, तुरख़ानों और अन्य सरदारों को अपने पास बुलवाया और फिर अपनी नयी सल्तनत को अपने उन तीन बेटों में बांट दिया, जो बोरताई से पैदा हुए थे ।

सन 1227 ई० में सुंग के इलाक़े में चंगेज़ ख़ान की मृत्यु हुई, तो उसकी लाश को एक झकड़े (ख़ानाबदोशों की बैलगाड़ी) में लादा गया । चंगेज़ ख़ान के बेटे अपने बाप की वसीयत के अनुसार अपने पुराने दुश्मन हया के नये बादशाह ''शैदूरगो'' को मौत के घाट उतारने के बाद ज़ागान, नोयान के नेतृत्व में चंगेज़ ख़ान की ताबूत वाली गाड़ी गुज़री । ताबूत के साथ-साथ चलने वाले मंगोल सिपाहियों ने रास्ते में हर व्यक्ति को बेदर्दी से क़त्ल कर दिया । इन्सान तो क्या हैवान, चरिन्दे, परिन्दे और सांप तक ढूंढ़-ढूंढ़कर ख़त्म कर दिये गये, ताकि और किसी दूसरे प्राणी को चंगेज़ ख़ान की मौत का पता चला सके ।

चंगेज़ ख़ान की लाश जब उसके पैतृक गृह में लायी गयी, तो दूर-दूर तक चंगेज़ ख़ान के मौत की ख़बर फैल गयी । चंगेज़ ख़ान के पोते, पड़ोस के क़बाइली सरदार और फ़ौजी दस्ते गिरोह के गिरोह उसी जगह पर पहुंच गये, जहां मातम करने वालों में चंगेज़ ख़ान की पांचों बीवियां, पांच सौ क़नीज़ें और नौकरानियां जमा थीं । क़बाइली परम्परा के अनुसार चंगेज़ ख़ान की लाश को हर बीवी के ख़ेमे में बारी-बारी रखा गया, ताकि वह मातम कर सकें । जब सारे रस्मो-रिवाज पूरे हो गये तो, चंगेज़ ख़ान की लाश को दफ़नाने के लिए ऊंचे-ऊंचे सनोवर के पेड़ों में एक क़बर खोदी गयी ।

जड़ों के नीचे जो क़ब्र खोदी गयी थी, उसमें एक छोटा-सा ख़ेमा लगाया गया, जिसमें चंगेज़ ख़ान की पसन्दीदा ख़ुराक गोश्त, पका हुआ अनाज और शराब और उसके हथियार सब रख दिये गये और फिर क़ब्र बन्द कर दी गयी । कच्ची मिट्टी की लेप करने के बाद सनोवरों के झुंड में मुश्क और काफ़ूर जलाया गया और ''यूरियान गोत'' के उन ख़ानाबदोशों को क़ब्र की हिफ़ाज़त पर नियुक्त किया गया, जो रूहों को बुलाने, तूफ़ान बरपा करने और गहरे नीले आसमान से बिजली गिराने का दावा करते थें । यहां तक कि सनोवर का यह जंगल इतना घना हो गया कि इस जंगल में चंगेज़ ख़ान की क़ब्र का नामोनिशान सदैव के लिए मिट कर रह गया ।

अनु० : **इरशाद अली ख़ान**

POSTAL LIBERARY

जीवन ज्योति केन्द्र

पोस्टल लाइब्रेरी



Bainy Singh Ki Talaiya
Gohalpur, Jabalpur-482002
Mob. : 930092747, 9300101373

उस्तरा

■ विपिन बिहारी

मंसूर और सौरभ की निकटता बढ़ रही थी जैसे दो ध्रुव क्रमशः एक-दूसरे की तरफ़ खिसक रहे थे । उनकी रफ़्तार में किसी तरह का विघ्न न पड़े तो दोनों एक-दूसरे से मिल भी सकते हैं, ऐसी उम्मीद की जा रही थी क्योंकि एक-दूसरे के निकट आना निर्विघ्न था अब तक । क्या ध्रुवीय जलवायु में समानता होगी और पता भी नहीं चल पाएगा कि दोनों दो अस्तित्व रहे कभी ।

दोनों ने मुस्कराते हुए हाथ मिलाये ।

"कैसे हो ?" औपचारिकता का बोझ ढोते हुए सौरभ ने पहले सवाल किया था ।

"ठीक हूं ।" मंसूर ने जवाब दिया था ये अफ़सोस ज़ाहिर करते हुए कि औपचारिकता निभाने में वह कैसे पिछड़ गया ।

"मैंने कभी नहीं सोचा था कि दो ध्रुवीय प्राणी कभी इस रूप में दिखेंगे ।" सौरभ जैसे किसी हादसे का ज़िक्र कर रहा था ।

"धर्म अलग हो सकते हैं दोनों के, लेकिन आख़िर हम इन्सान हैं मांस-मज्जा के । से सब तो लौकिकता का अभिशाप है कि धर्म के नाम पर जुदा हैं हम सब । यूं कहा जाए, इन्सानी नासमझी के नतीजे में जी रहे हैं । मंसूर की बातें गंभीर-सी थीं, लेकिन उसके कहने का लहजा हास्यस्पद था, "यदि ये ठेकेदार धर्म-झंडा नहीं लहराएंगे तो उनकी हुकूमत कैसे क़ायम रहेगी और कैसे खेलेंगे करोड़ों-अरबों में, जिसका हिसाब सरकार भी लेने से कतराती रही है ।"

"ऐसा हो सकता है ।" सौरभ इतनी-सी बात कहने में गड़बड़ा गया था मंसूर की बातें सुनकर, "मैंने कभी ऐसा अनुभव नहीं किया ।"

"मैंने भी नहीं किया, लेकिन जो देखता-सुनता आया हूं, यह भी एक सच है ।"

"तुम्हारे धर्म में होता होगा ऐसा ।"

"नहीं, ये सिर्फ़ मेरे धर्म की परिपाटी नहीं रही है । सभी धर्मों की एक जैसी ही परिपार्टी है...ईश्वर...

अल्लाह में लोगों को आस्थावान बनाना । फिर उनका मानसिक, आर्थिक और कहीं-कहीं शारीरिक शोषण करना । लोग धर्मभीरू होते हैं । धर्मभीरू इसलिए होते हैं कि वे भाग्यवादी होते हैं क्योंकि उन्हें अपने कर्मों पर यक़ीन नहीं होता । और ये धर्म के ठेकेदार भाग्यवादी बनाने के लिए उनके बीच तरह-तरह के डर फैलाते रहते हैं । और लोग भी काहिल की अपनी प्रगति धर्म की आस्थाओं में देखते हैं । एक तरह से वे धर्म के नाम पर कम से कम मेहनत करना चाहते हैं यानी कि प्रगति का शार्टकर्ट रास्ता है धर्म भक्ति ।" मंसूर इस बार मुस्करा नहीं रहा था बल्कि उसकी गंभीरता मारक हो गयी थी ।

"चलो, मानते हैं तुम्हारी बात,"

"ऐसा मत कहो, यह बहस का विषय भी हो सकता है ।"

कुछ पल के लिए ऐसा भी लगा था, दोनों के बीच एक वैचारिक मतभेद होने वाला है और इसका असर उनके व्यवहारों पर पड़ने वाला है । लेकिन ऐसा कुछ दिखा नहीं । दोनों कॉफी हाउस गये । समोसे खाये, चाय पी । पैसे मंसूर को चुकाने नहीं दिया सौरभ ने, "आज मेरी तरफ़ से ।"

"चलो, ये भी ठीक है ।" मंसूर मुस्करा कर रह गया था ।

ध्रुवों में प्रगाढ़ता दिन प्रति बढ़ती ही जा रही थी । किसी भी बात को दोनों ही गंभीरता से सुनते थे । किसी मुद्दे पर विमर्श चल रहा था । दोनों खुलकर अपनी बातें रख रहे थे । इसी दौरान सौरभ बोल पड़ा था, "तुम चुड़ीदार पाजामे और दाढ़ी में जरा भी नहीं फबते । हम दोनों भिन्न धर्मों से हैं दूर से ही चिन्हित हो जाता है । मुझे तो यह धार्मिकता कम, प्रदर्शन अधिक लगता है ।"

"तुम भी तो जनेऊ धारण करते हो । टीका-चंदन और पूजा की घंटियां...आरती...वग़ैरह...वग़ैरह ।" मंसूर

प्रतिक्रियास्वरूप बोल पड़ा था ।

''मैं जनेऊ धारण करता हूं लेकिन कोई नहीं कह सकता मेरे जनेऊ पर कुछ । वैसे जनेऊ की वैज्ञानिकता है ।''

''क्या तुम अपने धर्म के प्रतिआस्थावान नहीं हो ?'' सौरभ ने मंसूर की बोलती बंद करने के ख़्याल से सवाल उछाला था ।

''मैं अपने धर्म के प्रति कितना आस्थावान हूं, ये समझ सकते हो तुम ।'' मंसूर मुस्करा रहा था ।

दोनों के बीच के बहसों से ऐसा लगने लगा था कि दो ध्रुव अपनी-अपनी जगह चले जाएंगे धर्म जैसे पेचीदा मुद्दे पर । लेकिन ऐसी गुजाइश नज़र नहीं आयी थी । उन्होंने ध र्म भाव से अधिक मित्र भाव को तरज़ीह दी थी, सौरभ ने अपने शब्दों की वैदिकता देते हुए कहा था, ''धर्म अपनी जगह है और हम दोनों अपनी जगह, धर्म से इतर । आलोचनाएं होनी चाहिए जो अपेक्षित हैं । इससे ख़ामियां पकड़ में ही नहीं आतीं बल्कि उनके सुधार की गुंजाइशें भी पनपती हैं, लेकिन आलोचनाएं पूर्वाग्रह से परे होनी चाहिए. ..तथ्यात्मक ।'' वह जैसे समझौतावादी हो गया था ।

ऐसी बहसें रोज़ नहीं हुआ करती थीं दोनों के बीच । यदा-कदा ही भिड़ते थे और हर बार बराबर पर छूटते थे । अंतिम समय में दोनों समझदारी से काम लेते थे, धर्म के नाम पर उलझना एक निकृष्ट कार्य है ।

दोनों की मित्रता सौरभ के घर तक आ गयी थी । सौरभ के एक तरह से ज़बरदस्ती ही की थी मंसूर के साथ अपने घर ले जाने के लिए । मंसूर इतनी ही कहता रहा था, ''देखो भाई, बाहर की बात कुछ और है और घर की कुछ और । इतना तो मैं समझ ही सकता हूं कि तुम्हारा घर पौराणिक क़िस्म का होगा, पांडित्यपूर्ण वातावरण । आरती भी गाई जाती होगी । टीका-चंदन का महात्म्य होगा । वहां पर मैं सिर्फ़ मुसलमान बनकर रह जाऊंगा ।

''तुम्हारी बात ही सही, लेकिन मैं ऐसा नहीं समझता कि तुम्हारे साथ कोई भेदभाव बरता जाएगा । एक बार चलकर तो देखो, फिर जैसा समझना करना ।''

मंसूर सकुचाते ही सौरभ के घर आया था । घर से लगा एक बड़ा दालान था, दोनों वहीं बैठे । सौरभ की मां शकुंतला देवी आयी थी । मंसूर को देखकर कई सवाल उमड़ पड़े थे उसकी आंखों में । सौरभ अपनी मां का चेहरा देखने लगा था । फिर उसके मुंह से इठात् निकल गया था, ''मां मेरा दोस्त है ।''

मंसूर मुसलमान है, उसका हुलिया ही बता रहा था । शकुंतला देवी ने सौरभ की बात पर कोई उत्साह ज़ाहिर नहीं किया था । वह भीतर चली गयी थी । उसके पीछे सौरभ भी गया था । उसे देखकर वह कहने लगी थी, ''तुम्हें कोई और नहीं मिला था दोस्ती करने के लिए ? वह गाय का मांस भी खाता होगा, नमाज़ भी पढ़ता होगा और उसके साथ तुम...ब्राह्मण धर्म का बंटाधार कर दोगे इस तरह । फिर कभी उसे घर मत लाना ।''

''मां, उसे ऐसा मत समझो, मुसलमान है लेकिन मांस नहीं खाता ।'' सौरभ ने मंसूर का पक्ष रखा था ।

''तुम कैसे कह सकते हो, कभी उसके घर गये हो ?''

''नहीं...।''

''फिर...?''

''वह मांसाहार के ख़िलाफ़ है ।''

''झूठ भी तो बोल सकता है ।''

''नहीं, उसके चाल-व्यवहार से अंदाज़ा लगाया जा सकता है ।''

''मुझे विश्वास नहीं है ।''

सौरभ को भी चाय-नाश्ता लाना पड़ा था मंसूर के लिए । मंसूर ने जैसे टोह ली थी भीतर की सरगर्मी, ''इसकी ज़रूरत ही क्या थी, मां कुछ कह रही थी तुम से ?''

''नहीं...।'' सौरभ साफ़ झूठ बोल गया था ।

''ये हो नहीं सकता ।''

''जब तुमने कुछ सुना ही नहीं तब कैसे कह सकते हो कि मां कह रही थी कुछ मुझ से ?''

''देखो, मैं बुरा नहीं मान रहा हूं । किसी की धार्मिकता...

''दोड़ो ये सब, हम लोग यहां आकर बहस लड़ाने नहीं आये हैं । बातें करने का दूसरा विषय भी हो सकता है । पता नहीं क्यों हम दोनों अक्सर धर्म के मामले में उलझते रहते हैं ।''

''हालात ही कुछ ऐसे हो जाते हैं तो इसमें क्या किया जा सकता है ?''

चाय-नाश्ते की औपचारिकता पूरी हुई थी । मंसूर थोड़ी

देर के बाद उठ खड़ा हुआ था, ''मैं इजाज़त चाहता हूं ।''

''बैठो न यार, क्या करोगे घर जाकर, खाना-खाकर जाना ।''

''तुम क्यों अपने घर के बर्तन अलग करवाना चाहते हो ?''

''ऐसा कुछ भी नहीं होने वाला है, तुम्हारी ग़लतफ़हमी है ।''

''चलो, अपनी ग़लतफ़हमी ही मानता हूं । फिर कभी...।''

मंसूर को अक्सर बुला लाता था घर सौभ । शकुंतला देवी ने सौरभ की ज़िद्द मान ली थी । वह भी मंसूर के सामने ठहर जाती थी चाय लाने के वक़्त । इसी कड़ी में वह बोल पड़ी थी,''दाढ़ी बढ़ाकर अपना अच्छा-खासा चेहरा बिगाड़े हुए हो । ज़रा भी नहीं फबती तुम्हारे चेहरे पर दाढ़ी । धर्म की अभिव्यक्ति दाढ़ी रखकर ही की जा सकती है और पोशाक से पक्का मौलवी लगते हो ।''

सौरभ हंस पड़ा था मां की बात पर, ''मां, अपनी-अपनी मान्यताएं हैं ।''

''अपना हुलिया बदलो मंसूर । फिर देखना हम में और तुम में कोई फ़र्क़ नहीं रह जाएगा ।'' शकुंतला देवी इतना बकार कर मंसूर के सामने से हट गयी थी ।

''तुम क्या समझते हो ?''

''तुम्हारी मां ने अपनी राय ज़ाहिर की है ।''

''तब...?''

''अकेले में सोचूंगा, तुम्हारी मां का कहना कितना औचित्यपूर्ण है ।''

''वह एक ब्राह्मणी बोल रही है । लेकिन इतना तो ज़रूर समझते होगे कि मेरी मां तुम से कोई भेद नहीं रखती ।

मंसूर और सौरभ के बीच अब कोई भेद नहीं रह गया था । सिर्फ़ धर्म के मामले में अलग-अलग रह गये थे ।

मंसूर कुछ दिनों तक नहीं आ पाया था सौरभ के घर । शकुंतला देवी पूछने लगी थी, ''मंसूर कहां रहता है आजकल ?''

''मुझे भी नहीं मिल पा रहा है ।''

''पता लगाओ, वह है कहां ?'' मंसूर के न आने से चिंतित लगी थी शकुंतला देवी ।

''देखता हूं ।'' सौरभ ने मां को आश्वस्त किया था ।

सौरभ अभी घर से निकलने वाला ही था कि मंसूर आ धमका था । सौरभ ने उसे देखा तो हकबका गया...ये क्या, दाढ़ी एकदम छोटी और चूड़ीदार पाजामे की जगह पैंट-शर्ट ।

''मां, देखो मंसूर आया है बिल्कुल नये मॉडल में ।

सौरभ की आवाज़ सुनकर शकुंतला देवी लपकी हुई आयी थी ।

''कौन है ?'' एक बारगी नहीं पहचान पायी थी मंसूर को शकुंतला देवी, ''अरे, मंसूर, तुम हो ?'' ऐसा भी लगा था, वह खुशी के आवेग में मंसूर को गले लगा लेगी, लेकिन ऐसा उसने नहीं किया जैसे कोई अप्रत्यक्ष दीवार उसके सामने आ खड़ी हुई थी । फिर भी वह खुश थी । वह इतना कह गई, ''अब देखना, हम और तुम का कोई भी फ़र्क़ नहीं माप पाएगा, हम दोनों एक हैं ।'' उसकी मुस्कराहट रहस्यमय हो गयी थी, ''तुम दोनों गप्पे मारो, मैं कुछ लाती हूं ।'' शकुंतला देवी बीच में आ गयी । दोनों की बातचीत रुक गयी ।

सौरभ के घर की छत पर एक छोटा-सा मंदिर बना हुआ था । शकुंतला देवी जब सारे काम निबट लेती थी तब स्नानादि कर पूरी तैयारी के साथ हाथ में पूजा की थाली लिए और घंटी बजाते हुए छत पर जाती और मनोयोग से पूजा करती । आरती बड़े ही सुर में गाती थी । सौरभ के पिता नहीं थे । एक बहन थी अनुष्का, जो किसी कॉलेज में पढ़ रही थी । घर में होती तो वह भी शकुंतला देवी के पीछे लग जाती और उसके सुर में सुर मिलाती । घर का वातावरण बड़ा ही भक्तिमय था । बात-बात पर 'राम नाम' की जाप की जाती । कभी दीवार से रगड़ हो जाती तो 'राम नाम' । अनुष्का का भी यही हाल था । सौरभ थोड़ा परे लगता था । लेकिन जब भी वह घर से कहीं जाने के लिए निकलता था तो शकुंतला देवी उसके ललाट पर लोरी का टीका लगाना नहीं भूलती थी । वह जनेऊ भी धारण किये हुए था । लेकिन ऐसा लगता था जब से उसकी दोस्ती मंसूर से हुई थी इन कर्मकांडों से होशियारी बरतता था और वह जो भी करता था एक साज़िशन । उसका व्यवहार किसी को भी धोखे में डाल सकता था । उसके विचार जगहों के मिज़ाज से अभिव्यक्त होते थे । आवश्यकता पड़ने पर वह पुरोहितवाद, कर्मकांड और पोंगापंथ के सख़्त ख़िलाफ़ हो

जाता था या फिर उसके समर्थन में सख़्त हो जाता था ।

जहां पवित्रता-अपवित्रता की धारणा होगी, वहां छूतछात, ऊंच-नीच का भेदभाव ज़रूर होगा । मंसूर जब पहली बार सौरभ के घर आया था तब उसके जाने के बाद, जहां वह बैठा था, वहां रगड़-रगड़कर धोया गया था । धोने वाली थी शकुंतला देवी । वह बुदबुदाती भी जा रही थी...ले आया एक मुसलमान को...और कोई नहीं मिला था दोस्ती के लिए ? अपनी जाति का अकाल पड़ गया है क्या ? जब उसकी दोस्ती के बिना काम नहीं चल सकता था तब यहां बिठाया क्यों, बाहर ही कुर्सियां निकाल देता । सबको भ्रष्ट कर देगा ये लड़का । आज के बाद वह आया तो उसे बाहर ही बिठाना ।

अनुष्का ने शकुंतला देवी की बुदबुदाहट सुन ली थी । उसने टोक दिया, ''मां, क्या बुदबुदा रही हो ?''

''क्या बुदबुदाऊंगी, अपने भाई को समझाना, कम से कम घर की पवित्रता का ख़याल रखे ।''

अनुष्का भंवर में फंस गयी थी जैसे ।

लेकिन सौरभ फिर भी नहीं माना था ।

मंसूर शकुंतला देवी के मन मुताबिक़ ढल रहा था । ऐसा लगने लगा था, वह घर का सदस्य हो गया था ।

शकुंतला देवी छत पर पूजा कर रही थी । अनुष्का उसके पीछे थी । सौरभ भी आ खड़ा हुआ था । उसके हाथ जुड़े हुए थे जैसे मंदिर के भगवान को वह साक्षात् देख रहा था । इसी समय मंसूर आ गया था, घर में किसी को नहीं देखा तो वह अनायास ही छत की सीढ़ियां चढ़ गया । छत पर जो स्थिति थी, उसके हिसाब से वह भी सबके पीछे खड़ा हो गया था । पूजा की समाप्ति के बाद प्रसाद देने की रस्म निभाने के लिए मुड़ी थी शकुंतला देवी तो उसकी नज़र मंसूर पर पड़ गयी थी, ''तुम, कब आये, कब से खड़े हो यहां पर ?'' वह चेहाई आवाज़ में बोली थी । उसकी आवाज़ के साथ सौरभ और अनुष्का भी मुड़े थे मंसूर की तरफ़ जैसे कोई बड़ी घटना घट गयी थी । सौरभ मुस्कराने लगा था । अनुष्का सामान्य बनी रही थी ।

''तुम यहां तक आ गये ?'' शकुंतला देवी गंभीरता ओढ़ते हुए बोली थी ।

''मैं समझता हूं इन्सानों को धर्म को बाधा के रूप में नहीं देखना चाहिए ।'' मंसूर हल्के तौर पर ही बोला था ।

''सवाल पवित्रता-अपवित्रता का है ।'' शकुंतला देवी कहते-कहते रुक गयी थी । सौरभ ने देखा था शकुंतला देवी की तरफ़ जैसे वह कुछ ऐसा ही बोलने वाली थी और उसने मनाकर दिया था, ''ऐसा मत बोलो मां कि मेरी दोस्ती ख़तरे में पड़ जाए ।''

शकुंतला देवी प्रसाद दे रही थी सौरभ को । सौरभ ने हाथ को चुल्लू बनाकर प्रसाद लिया था । प्रसाद लीलने के बाद उसने अपनी दाहिनी तलहथी को सिर पर फिराया था जैसे बाल से अपने जूठे हाथ साफ़ कर रहा था । अनुष्का ने भी ऐसा ही किया था । जब मंसूर के पास आयी थी शकुंतला देवी तो उसके प्रसाद बांटने वाले हाथ की गतिविधियां असामान्य हो गयी थी जैसे कांप रहा था या फिर एक संकोच या फिर असमंजस्य ।

''तुम्हें आ जाने मुझे कोई दिक़्क़त नहीं हुई ।'' सौरभ हंसा था, नीचे आने पर उसने मंसूर से पूछा ।

''तुम्हारी मां को ज़रूर दिक़्क़त हुई होगी, उसका आश्चर्य...!''

हिन्दू धर्म हमेशा ही प्रवेश वर्जित रहा इसलिए कि उसे श्रेष्ठ होने का भ्रम है ।''

''शायद दूसरे धर्मों में भी कुछ दूरी बंदिशें हों । धर्म बग़ैर बंदिश हो नहीं सकता ।''

''ऐसा भी हो सकता है । लेकिन जितना क़रीब से अपने धर्म को समझा है मैंने, उतना अन्य धर्म को नहीं ।''

''श्रेष्ठता की बुलंदियों पर सवार होने पर शायद दूसरे पर नज़र ही नहीं जाती ।''

''हो सकता है, संस्कारित ही मुझे इस तरह किया गया होगा ।''

रमज़ान का महीना चल रहा था । मंसूर रोज़ेदार हो गया था । सौरभ पूछ रहा था उससे, ''तुम रोज़ा रख रहे हो तो नमाज़ भी अदा करते होगे ?''

नमाज़ तो हमेशा अदा करता हूं, जब रमज़ान नहीं होता भी ।

रमज़ान के महीने में ही मंसूर ने इफ़्तार के नाम पर अपने घर बुलाया था सौरभ को पहली बार । सौरभ ने उसकी बुलाहट टाल नहीं सका था । जब वह मंसूर के घर जाने लगा था इस तरह जैसे वह बारूदी सुरंगों से बचता हुआ चल रहा था, कहीं उसके पैर इधर-उधर न पड़ जाए ।

शकुंतला देवी आगाह कर गयी थी, ''संभलकर कुछ खाना, कहीं उसके घर वाले गाय का मांस न खिला डालें तुम्हें ?''

सौरभ के आने की बाबत जानकर मंसूर की अम्मा जमीला ने कई पकवान बनाए थे । उसने हिदायत दे रखी थी कि मंसूर और सौरभ के अलावा आज के दिन कोई नहीं आएगा दूसरा और किसी तरह की कमी नहीं होनी चाहिए । पहली बार कोई हिन्दू उसके घर आ रहा है ।

सौरभ गंभीर था जैसे उसे गाय का मांस ही खिलाया जाने वाला था । जबकि ब्राह्मण भी बौद्धकालीन इतिहास से पूर्व क्या नहीं भक्षण करते थे और अब गाय 'माता' हो गयी थी ।

जमीला ने खाने की चीज़ें रखते वक़्त सौरभ से पूछा था, ''कैसे हो बेटे, पहली बार आये हो । आया करो हमारे भी घर । दोस्ती अलग चीज़ होती है और धर्म अलग । शक ये न करना कि हम तुम्हारे धर्म को भ्रष्ट कर देंगे । यदि तुम्हारा धर्म मज़बूत है तो ऐसा डर तुम्हें नहीं होना चाहिए, ये समझने और सोचने की चीज़ है । मैं इतना जानती हूं कि जैसे तुम हो, वैसा मंसूर भी है । जितने भी पकवान तुम्हारे आगे परोसे हैं सभी के सभी हिन्दू धर्म के रीति-रिवाजों की कसौटी पर पकाये हुए हैं ।'' वह हंस पड़ी थी । मंसूर सिर्फ़ मुस्कराकर रह गया था । और सौरभ को लग रहा था जैसे उसके पाखंड को आहत किया जा जा रहा है । उसका धर्म चोर पकड़ा गया था सार्वजनिक रूप से । उसकी अक्षुण्णता कीचड़ के तालाब में डूबने को हो गयी थी ।

जब खाने का वक़्त आया तो सौरभ के हाथ उठ नहीं पा रहे थे । मंसूर उसकी हरकतों पर पैनी नज़र रखे हुए था, ''बेख़ौफ़ खाओ यार, गाय का गोश्त हम नहीं खिला रहे हैं ।

''ऐसा मत कहो ।'' सौरभ ठिसुआया-सा लग रहा था ।

''तुम्हारी हरकत तुम्हारी ज़बान का साथ नहीं दे पा रही है । मैं धोखा नहीं दे सकता ।''

सौरभ खाना निगल रहा था । मंसूर उसका साथ दे रहा था । जमीला सौरभ के पीछे खड़ी । उसके ठीक पीछे अस्मा खड़ी थी, मंसूर की बहन जमीला की तत्काल मदद के लिए । लेकिन ऐसी नौबत नहीं आयी थी, जमीला ने तजवीज़ कर ही खाने की चीज़ें परोसी थीं, परोसे गये चीज़ से अधिक खा नहीं सकते थे ।

जब जाने लगा सौरभ तो जमीला बोलने लगी थी, ''बेटा, आते रहना, बड़ी अच्छी बात है कि तुम मंसूर के दोस्त हो । दो धर्म एक साथ दिखते हैं तो मुझे बेहद ख़ुशी होती है ।'' वह विदु षी-सी लगी थी ।

सौरभ ने एक शब्द भी नहीं कहा था, लेकिन उसकी गर्दन हिलती हुई लग रही थी । जब वह अपने घर पहुंचा था, शकुंतला देवी को मंसूर के घर का हाल कह सुनाया था । वह घबरा रही थी । उसने साफ़ कहा था, मुसलमान विश्वसनीय नहीं हो सकते ।

सौरभ ने नाराज़गी ज़ाहिर की थी, लेकिन इसने मां से कहा कुछ नहीं । जब हम हिन्दू होकर उसे अपने प्रभाव में ले सकते हैं तब क्या एक मुसलमान एक हिन्दू को अपने प्रभाव में नहीं ले सकता ? तुम्हारी बात सच ही साबित होती है तो इसमें बुराई क्या है ? तुम ने भी मंसूर को अपने ईश्वर का प्रसाद खिला दिया । टीका भी लगाते-लगाते रह गयी । लगा भी देती तो वह मना भी नहीं करता । लेकिन तुम्हारे हाथ रुक गये । शायद अपने धर्म की श्रेष्ठता उसके ललाट पर चिपकाना नहीं चाहती थी । तुम उस समय डर गयी थी ।

सौरभ के घर का मंसूर कब हिस्सा बनता चला गया, उसे भी पता नहीं चल पाया था । शकुंतला देवी कुछ ज़्यादा ही ख़ुश थी । सौरभ और अनुष्का कितनी मात्रा में ख़ुश थे, ये कहना ज़रा मुश्किल था । शायद इसी का नतीजा था अनुष्का का मंसूर की तरफ़ झुकाव । मंसूर उसकी हरकतें समझ नहीं पा रहा था ।

पहली बार मंसूर और अनुष्का एकांत हुए थे तब अनुष्का अपनी बातें जल्दी में पूरी करने की कोशिश कर रही थी, ''मैं समझ नहीं पा रही हूं ।''

''सौरभ मेरा दोस्त है ।''

''मैं नहीं हूं ?''

''दोस्ती में भी रिश्ते होते हैं ।''

''मैं अलग मैटर हूं ।''

मंसूर दोस्ती निभाना चाह रहा था । लेकिन अनुष्का उससे पार जाना चाहती थी । शकुंतला देवी ने देख लिया था अनुष्का का सलूक मंसूर के साथ । उसने ही बताया था सौरभ को । सौरभ को नया कुछ नहीं लगा था जैसे वह दो विपरीत लिंगी के मनोविज्ञान से परिचित था । यहां दो धर्म अपनी भिन्नता के साथ खड़े थे ।

अनाथ लड़कियों की पुकार

VOICE OF ORPHAN GIRLS

मुस्लिम लड़कियों का यतीमख़ाना (गया)

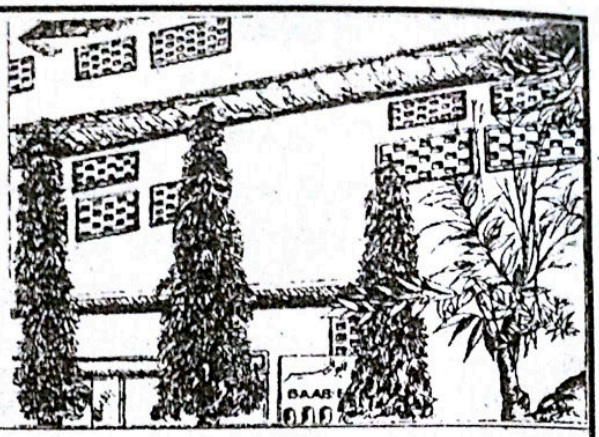

संक्षिप्त परिचय

लड़कियों के लिए आधुनिक और इस्लामी तालीम से लैस राष्ट्रीय स्तर का एक आदर्श रिहाइशी इदारा • 24 वर्षीय सेवाएं • 19 विभाग • शिक्षा : प्राथमिक से मैट्रिक तक • पत्राचार शिक्षा • 6 छात्राओं ने हिफ़्ज़ के साथ मैट्रिक पास किया • प्रौढ़ शिक्षा • वोकेशनल सेन्टर • कटिंग और सिलाई : 6 बैच 70 छात्राएं • ज़री वर्क्स : 3 बैच 40 छात्राएं • 1993 ई० से 2010 ई० तक 63 अनाथ बच्चियों और 37 मां-बाप वाली बच्चियों ने मैट्रिक पास किया • वार्षिक ख़र्च : 13 लाख रुपये से अधिक • आमदनी का स्रोत : मुस्लिम अवाम के चन्दे • इदारा 120 अनाथ बच्चियों का सारा ख़र्च पूरा करता है • किफ़ाला स्कीम के तहत एक यतीम बच्ची का वार्षिक ख़र्च 8000/- रुपये है–आप भी एक अनाथ बच्ची का ख़र्च उठा कर सवाब में शरीक हों ।

सहायता के विभिन्न रूप : • ज़कात • सदक़े • अतिया • पैदावार की ज़कात • दीनी किताबें • ज़मीन की ख़रीदारी और क़र्ज़ की अदायगी • स्टाफ़ की मासिक आय के लिए 73000/- रुपये • मां-बाप या रिश्तेदारों के नाम कमरा या हॉल बनवाना और निर्माण कार्यों के लिए ईंटें, सीमेंट, सरिया और अन्य सामग्री या उसका मूल्य देना • यहां प्रतिवर्ष हिसाब चेक किये जाते हैं और ऑडिट होता है । • इदारा में ख़ुद आकर बराबरी का नमूना देखें कि अनाथ बच्चियां और वे बच्चियां जिनके मां-बाप हैं किस तरह मिलकर रहा करती हैं ।

यह इदारा आप से उदार सहायता की अपील करता है ।

विदेशी चन्दा देने वाले : भारत सरकार से "मुस्लिम लड़कियों का यतीमख़ाना (गया) को विदेशों से चन्दा लेने का इजाज़तनामा प्राप्त हो गया है ।

विदेशों में रहने वाले अब BANK A/c No. 300402010009042

BANK CODE NO. UBININBBJAM में अपनी रक़म भेज सकते हैं ।

चेक या ड्राफ्ट पर केवल यह लिखें–"THE GAYA MUSLIM GIRLS ORPHANAGE"

.....पता.....

GENERAL SECRETARY, THE GAYA MUSLIM GIRLS' ORPHANAGE

At : KOLOWNA, P.O.: CHERKI-824237, Distt.: GAYA (BIHAR) INDIA

☎ 0631-2734437 • Mobile : 9934480190

E-mail : thegayamuslimgirlsorphanage@gmail.com, Website : www.gmgo.org

BANK A/C NO.: 7752 UNION BANK OF INDIA (MAIN BRANCH, GAYA)

CORE BANKING A/C NO.: 300402010007752

संस्थापक महासचिव

इक़बाल अहमद ख़ां

धार्मिक आस्था के सार्वजनिक प्रदर्शन के नाम पर प्रदूषण

❑ विद्या प्रकाश

धार्मिक आस्था तथा श्रद्धा का सार्वजनिक प्रदर्शन नियम विरुद्ध, अनैतिक एवं अवैधानिक नहीं है मगर जब धर्म के नाम पर किये जाने वाले इस प्रकार के सार्वजनिक प्रदर्शनों का प्राकृतिक पर्यावरण पर प्रतिकूल, हानिकारक तथा असन्तुलनकारीं प्रभाव पड़ने लगता है तो स्थिति गंभीर, चिन्ताजनक, विकट तथा विचारणीय हो जाया करती है ।

हमारे देश में यूं तो जनवरी से लेकर दिसम्बर तक बारहो मास विभिन्न धर्मावलंबियों द्वारा अनेकानेक पर्व परम्परागत रूप से हर्षोल्लासपूर्वक मनाए जाते हैं, मगर सितम्बर से लेकर नवम्बर तक त्योहारों पर विशेष धूमधाम और रौनक रहती है । इस दौरान हिन्दू धर्मावलंबियों द्वारा भिन्न-भिन्न पर्वायोजन किये जाते हैं ।

एक मोटे अनुमान के अनुसार इन सालाना त्योहारों के मौक़ों पर प्रति वर्ष लगभग दस लाख से ज़्यादा मूर्तियां विसर्जन के नाम पर जलधाराओं में समारोहपूर्वक प्रवाहित कर दी जाया करती है तथा उन पर लगे वस्त्र तथा आभूषण भी गंगा, सरयू, यमुना, नर्मदा, गोमती, सई, घाघरा आदि नदियों में चले जाते हैं । चूंकि अधिकतर मूर्तियां प्लास्टर ऑफ़ पेरिस से बनी होती हैं जो पानी में अधुलनशील होता है, इसलिए हर साल उनके विसर्जनोपरांत पानी की बायोलॉजिकल आक्सीजन डिमांड काफ़ी घट जाती है, जो जलीय जन्तुओं के लिए मौत बनकर आती है । कुछ साल पूर्व मुंबई में मूर्ति विसर्जन के पश्चात लाखों की तादाद में मछलियां मृत अवस्था में पायी गयी थी ।

केन्द्रीय प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड द्वारा दिल्ली में यमुना नदी का अध्ययन इस संबंध में हमारी आंख खोलने वाला है, जिसमें बताया गया है कि किस प्रकार प्रदूषण के चलते यमुना का दम घुट रहा है । बोर्ड के निष्कर्ष के अनुसार सामान्य काल तथा परिस्थिति में नदी के पानी में पारे की मात्रा नहीं के बराबर होती है लेकिन उत्सव के दौरान वह अचानक बढ़ जाती है । पांच वर्ष पूर्व उसने अनुमान किया था कि दिल्ली के विभिन्न इलाक़ों में हर साल लगभग 1700 देवप्रतिमाओं को प्रवाहित तथा विसर्जित किया जाता है जिनसे नदी में प्रदूषण बढ़ रहा है ।

यह संतोषजनक विषय है कि मूर्तियों से होने वाले जल प्रदूषण को लेकर इस बीच समाज में जनजागरूकता बढ़ी है । कहीं-कहीं मूर्ति विसर्जन के लिए कृत्रिम जलाशयों का भी निर्माण किया जाने लगा है । पुणे नगरपालिका ने पिछले दिनों पूजा समितियों के पदाधिकारियों तथा कार्यकर्ताओं से अनुरोध किया था कि वे एक विशिष्ट प्रकार की चिकनी मिट्टी शाडू की मूर्तियां रखें जो जलाशयों में आसानी से घुलनशील होती हैं । उसने यह भी कहा कि चूंकि मूर्तियों के वस्त्राभूषण भी प्रदूषणवर्द्धक हैं । इसलिए इन्हें जलाशयों में न डाला जाए । गणेश चतुर्थी के मद्देनज़र मूर्तियों के विसर्जन के संबंध में केन्द्रीय प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड द्वारा जारी दिशा-निर्देश में विषैले रंग से बचाव तथा कृत्रिम जलाशयों के निर्माण की आवश्यकता पर बल दिया गया है ।

चार वर्ष पूर्व आंध्र प्रदेश उच्च न्यायालय ने पर्यावरण प्रेमी समूहों की याचिका पर जब मूर्ति विसर्जन की वैकल्पिक व्यवस्था हेतु विभिन्न विभागों को आदेशित किया था तो कुछ पार्टियों ने इसका विरोध करते हुए कहा था कि यह आदेश बहुसंख्यकों के धार्मिक अधिकारों का हनन है जबकि उन्हीं दिनों गुजरात सरकार ने मूर्तियों से उत्पन्न होने वाले प्रदूषण को चिंताजनक मानते हुए आवश्यक तथा पालनीय दिशा-निर्देश जारी किये थे ।

हालांकि समाज के एक वर्ग में इस संबंध में बढ़ रही जनजागरूकता का अभिप्राय यह नहीं कि त्योहारों के समय में सब कुछ विधिसम्मत, औचित्यानुसार तथा पर्यावरणानुकूल ही होगा । इसके लिए जनसाधारण को न केवल जागरूक बनना होगा बल्कि सार्थक स्वत: स्फूर्त हस्तक्षेप भी करना होगा ।

यह एक शुभ तथा आशाजनक संकेत है कि हाल के वर्षों में देश के अनेक इलाक़ों में पर्यावरणीय सुरक्षा की दृष्टि से सामूहिक क़दम उठाये जा रहे हैं । विगत वर्ष हैदराबाद तथा पुणे के पर्यावरणप्रेमियों ने उन तमाम स्थानों पर जहां मूर्ति विसर्जन होना था स्वयंसेवकों की तैनाती की थी तथा उन्हें यह ज़िम्मेदारी सौंपी गयी थी कि मूर्तियों के साथ जो कुछ हानिकारक तथा प्रदूषणकारी वस्तुएं पानी में बेसोचे-समझे बहायी जाती हैं, वे उसे एकत्र करें । मगर सिर्फ़ इतना ही पर्याप्त नहीं है । इस दिशा में अभी और व्यापक प्रयास करने की आवश्यकता है ।

न्याय की समानता

❖ अबू मुहम्मद इमामुद्दीन रामनगरी

न्याय के संबंध में इस्लाम मुस्लिम और ग़ैर-मुस्लिम जनता के बीच कोई अन्तर नहीं करता है । हज़रत सईद बिन मुसय्यिब (रज़ि०) कहते हैं कि एक मुसलमान और एक यहूदी में झगड़ा हो गया । दोनों फ़ैसले के लिए हज़रत उमर (रज़ि०) की सेवा में उपस्थित हुए । हज़रत उमर (रज़ि०) के निकट यहूदी हक़ पर था । इसलिए आपने उसी के अनुसार निर्णय दे दिया ।

इस पर यहूदी ने कहा–''अल्लाह की क़सम ! आपने बिल्कुल सच्चा फ़ैसला कर दिया ।''

हज़रत उमर (रज़ि०) ने यहूदी से पूछा–''तुमको यह बात कैसे मालूम हुई ?''

यहूदी ने कहा–''खुदा की क़सम ! हम तौरात में लिखा हुआ देखते हैं कि जो न्यायिक सच्चाई के साथ निर्णय देता है, उसके दाएं-बाएं एक-एक फ़रिश्ता नियुक्त कर दिया जाता है । ये दोनों फ़रिश्ते उसके कथन एवं कर्म को ठीक रखते हैं और वे न्यायिक जब तक सच्चाई पर स्थित रहता है, सच्चाई के संबंध में उसकी सहायता करते रहते हैं और जब वह सच्चाई को छोड़ देता है, तो वे दोनों फ़रिश्ते भी उसे छोड़कर ऊपर चढ़ जाते हैं ।''

हज़रत उमर (रज़ि०) के शासनकाल में एक मुसलमान ने एक ग़ैर-मुस्लिम की हत्या कर दी । मुक़दमा हज़रत अली (रज़ि०) के न्यायालय में पेश हुआ । आपने निर्णय दिया कि हत्यारे को मृतक के वारिसों के सुपुर्द कर दिया जाए और वे उसे मार डालें । मृतक के भाई ने हज़रत अली (रज़ि०) की सेवा में उपस्थित होकर कहा–''हमने हत्यारे को क्षमा कर दिया ।''

हज़रत अली (रज़ि०) ने फ़रमाया–''तुम्हें किसी प्रकार की धमकी तो नहीं दी गयी ?''

उसने कहा–''नहीं, हत्यारे को मार देने से मेरा भाई तो पुन: जीवित नहीं हो सकता और उसने मुझे प्राण-मूल्य भी दे दिया है ।''

हज़रत अली (रज़ि०) ने फ़रमाया–

''तुम जानो ! किन्तु जो ग़ैर-मुस्लिम हमारी प्रजा है और जिनकी रक्षा की ज़िम्मेदारी हमने स्वीकार की है, क़ानून के अनुसार उनका रक्त हमारे रक्त के बराबर है ।''

हज़रत उमर (रज़ि०) के शासनकाल में क़ाज़ी शुरैह बिन हारिस (रज़ि०) इस्लामी राज्य के अति प्रसिद्ध और प्रमुख जज थे । वह 60 वर्ष तक इस पद पर आसीन रहे । हज़रत अली (रज़ि०) जो स्वयं विवेक-बुद्धि और मुक़दमे के फ़ैसले में असाधारण योग्यता एवं क्षमता रखते थे, हज़रत क़ाज़ी शुरैह को अरब का सर्वोच्च न्यायाधीश कहा करते थे ।

इस्लामी विधान के अनुसार एक संबंधी के मुक़दमे में दूसरे संबंधी की 4गवाही स्वीकार नहीं होती । अत: क़ाज़ी शुरैह सावधानी की दृष्टि से बाप के समर्थन में पुत्र की और पुत्र के समर्थन में बाप की, पति के समर्थन में पत्नी की और पत्नी के समर्थन में पति की, मालिक के समर्थन में दास की और दास के समर्थन में मालिक की गवाही स्वीकार नहीं करते थे । आप इस नियम का बड़ी कड़ाई के साथ पालन करते थे ।

अत: एक बार हज़रत अली (रज़ि०) की ज़िरह (कवच) कहीं गिर पड़ी, जो एक ग़ैर-मुस्लिम यहूदी को मिल गयी । हज़रत अली (रज़ि०) ने क़ाज़ी शुरैह की अदालत में यहूदी पर दावा किया । वादी-प्रतिवादी दोनों पक्ष अदालत में उपस्थित हुए । हज़रत अली (रज़ि०) ने अपना दावा पेश किया ।

क़ाज़ी शुरैह ने यहूदी से कहा–''तुम्हें इस दावे के संबंध में क्या कहना है ?''

यहूदी ने कहा–''ज़िरह मेरी है और इसका प्रमाण यह है कि मेरे क़ब्ज़े में है ।''

क़ाज़ी शुरैह ने हज़रत अली (रज़ि०) से दावे की गवाही तलब की । हज़रत अली (रज़ि०) ने अपने दास क़म्बर और अपने पुत्र हज़रत हसन को गवाह के तौर पर पेश किया । क़ाज़ी शुरैह ने कहा–''मैं आपके दास की गवाही तो स्वीकार कर लूंगा, किन्तु आपके पुत्र की गवाही स्वीकार नहीं कर सकता ।''

हज़रत अली (रज़ि०) ने फ़रमाया–''क्यों क्या आपने हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) का यह कथन नहीं सुना है कि हसन और हुसैन जन्नत के नवयुवकों के सरदार हैं ।''

क़ाज़ी शुरैह ने कहा–"मुझे हज़रत के उच्च पद एवं सम्मान से इन्कार नहीं, किन्तु मेरा नियम यह है कि बाप के समर्थन में पुत्र की गवाही स्वीकार नहीं करता।" इस प्रकार क़ाज़ी शुरैह ने हज़रत अली (रज़ि॰) का दावा रद्द कर दिया।

क़ाज़ी शुरैह के न्याय और हज़रत अली (रज़ि॰) की सत्यप्रियता का यहूदी पर इतना प्रभाव हुआ कि उसने स्वीकार कर लिया कि सचमुच ज़िरह आप ही की है। मुसलमानों का धर्म सच्चा है। मुसलमानों के क़ाज़ी (न्यायाधीश) अमीरुल मोमिनीन (राष्ट्राध्यक्ष) के विरुद्ध निर्णय देता है और वह सिर झुकाकर निर्णय को स्वीकार करता है। मैं गवाही देता हूं कि मुहम्मद (सल्ल॰) अल्लाह के सच्चे रसूल हैं।

हज़रत अली (रज़ि॰) को यहूदी के मुसलमान हो जाने से बड़ी प्रसन्नता हुई और आपने ज़िरह उसे प्रदान कर दी। हज़रत उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ (रज़ि॰) उमवी ख़लीफ़ाओं में से ऐसे ख़लीफ़ा गुज़रे हैं, जो स्वयं भी अपने कर्म और स्वभाव की दृष्टि से भूतपूर्व आदर्श ख़लीफ़ाओं के समान थे और उनका शासन भी उन्हीं ख़लीफ़ाओं के आदर्श के अनुरूप था। उनके शासनकाल में एक बार हीरा के एक मुसलमान ने एक ग़ैर-मुस्लिम व्यक्ति की हत्या कर दी। हज़रत उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ (रज़ि॰) ने वहां के गवर्नर को लिखा कि हत्यारे को मृतक के वारिसों के सुपुर्द कर दिया जाए। वे चाहें तो उसे मार दें और चाहें तो क्षमा कर दें। अत: हत्यारा पीड़ित ग़ैर-मुस्लिम उत्तराधिकारियों के हवाले कर दिया गया और उन्होंने उसे मार डाला।

ऊपर जो घटनाएं लिखी गयी हैं, उनसे यह बात भी स्पष्ट हो जाती है कि इस्लामी राज्य अपनी मुसलमान और ग़ैर-मुस्लिम प्रजा में किसी प्रकार का भेदभाव उचित नहीं समझता, बल्कि वह अपनी राज्य-सीमा में बसने वाले सभी मनुष्यों.....चाहे वे किसी भी धर्म और सिद्धांत से संबंध रखते हों, एक दृष्टि से देखता है।

परिचय और सहयोग की अपील

इक़रा एजूकेशनल ट्रस्ट : तमिलनाडु के वेल्लोर ज़िले के जाने-माने शहर तिरुपत्तूर में मुसलमानों की एक बड़ी आबादी रहती है। जिसका आम पेशा बिड़ी बनाना है। आर्थिक दृष्टिकोण से ये मुसलमान बहुत पिछड़े हुए हैं और यही कारण है कि उनकी नयी पीढ़ी शिक्षा के क्षेत्र में पीछे रह जाती है। अत: वहां के बच्चों को दीनी और आधुनिक शिक्षा दिलाने के लिए इक़रा एजूकेशनल ट्रस्ट की ओर से 1983 में "नूरुल हुदा प्राइमरी स्कूल" की स्थापना की गयी थी। यह स्कूल पिछले 25 वर्षों से वहां बिना फ़ीस लिए ग़रीब बच्चों और बच्चियों को शिक्षा देने का काम कर रहा है।

स्कूल का योगदान : इस स्कूल से अब तक 1500 छात्र और छात्राएं शिक्षा प्राप्त कर माध्यमिक स्कूलों में प्रवेश ले चुके हैं। इस समय पहली से पांचवीं कक्षा तक 166 छात्र-छात्राएं शिक्षा प्राप्त कर रही हैं। इसके अलावा सुबह और शाम 40 छात्राओं को अरबी भाषा, क़ुरआन मजीद नाज़िरा और दीनियात की शिक्षा दी जाती है।

● सभी बच्चों को स्कूल यूनीफार्म निशुल्क दिया जाता है। ● सभी बच्चों को पाठ्य-पुस्तकें सरकार की ओर से उपलब्ध करायी जाती हैं।

ट्रस्ट की अन्य सेवाएं : ● मुस्लिम महिलाओं से व्यक्तिगत मुलाक़ातें ● महिलाओं के लिए सभाओं का आयोजन ● शिक्षा के प्रति जागरूकता ● समाज सुधार के प्रयास।

इन कार्यक्रमों के द्वारा उन्हें दीनी और नैतिक दृष्टि से ऊंचा उठाने का प्रयास किया जाता है। अल्लाह का शुक्र है कि समाज में इसके अच्छे प्रभाव पड़े हैं, लेकिन लक्ष्य की प्राप्ति के लिए अभी बहुत कुछ करना है।

समस्याएं एवं आवश्यकताएं : 17 व्यक्तियों पर आधारित टीचिंग और नॉन टीचिंग स्टाफ़ और बिजली, स्टेशनरी और अन्य आवश्यकताओं की पूर्ति पर 2.5 से 3 लाख रुपये वार्षिक ख़र्च आता है। यह सभी ख़र्च आप जैसे अह्ले ख़ैर हज़रात के ज़कात, सदक़े और अतिये से पूरे किये जाते हैं।

शुक्रिया और दुआ-ए-ख़ैर : हम उन सारे मददकर्ताओं की सेवा में शुक्रिया का हदिया पेश करते हैं और दुआ करते हैं कि अल्लाह उन्हें दुनिया में भी सफलता दे और आख़िरत में भी सफलता दे।

एम॰ ए॰ शफ़ीक़ अहमद (सेक्रेट्री इक़रा एजूकेशनल ट्रस्ट)

नोट : चेक या ड्राफ़्ट इस नाम से बनवाएं :

IQRA EDUCATIONAL TRUST, TIRUPATTUR

IQRA EDUCATIONAL TRUST

Sikandar Baig Street, Fort, Tirupattur, Ph. : 04179228399, Mob. : 09425502191

मदद के लिए अपील

जामिया मिस्बाहुल उलूम चौकोनियां, पूर्वी उत्तर प्रदेश का एक जाना-माना तालीमी इदारा है। यह इदारा सिद्धार्थ नगर ज़िला के ग्रामीण क्षेत्र में है। यहां लगभग सभी राज्यों और पड़ोसी देश नेपाल के छात्र तालीम हासिल कर रहे हैं। यह इदारा आधी सदी से तालीम व तर्बियत के मोर्चे पर मुस्लिम समाज की सेवा कर रहा है। यहां प्राइमरी से लेकर आलिमीयत तक की तालीम का पूरा इंन्तिज़ाम है। यहां दीनी और अस्री उलूम को एक ख़ास इम्तिज़ाज के साथ सिमोया गया है, जिसके कारण जामिया को तालीमी मैदान में एक अलग और प्रतिष्ठित स्थान प्राप्त है। यहां क़याम और तआम की सारी सहूलतें उपलब्ध हैं। जामिया मिस्बाहुल उलूम की विशेषता तालीम के साथ इस्लामी बुनियादों पर छात्रों की मिसाली तर्बियत करना है।

जामिया के मंसूबे

● मर्कज़ी लाइब्रेरी की तामीर ● जामिया की मस्जिद के अधूरे कामों को पूरा करना ● लड़कियों के लिए अलग दर्सगाह की तामीर ● टेक्निकल सेन्टर का क़याम ● होस्टल की तामीर ● अनाथालय की तामीर ● फैमिली क्वार्टर्स की तामीर

अह्ले ख़ैर हज़रात से दरख़्वास्त है कि जामिया की दिल खोलकर मदद करें और अल्लाह के यहां उसका बदला पाएं।

–: भेजने का पता :–

जामिया मिस्बाहुल उलूम

चौकोनियां भारत भारी, सिद्धार्थनगर-272191

फ़ोन : 09450587737, 09793424547

जामिया का बैंक खाता नं॰

A/c No. 30290663653 S.B.I. डुमरियागंज, कोड-1250

सम्मान के नाम पर हत्या

भारत के गृहमंत्री ने सम्मान के नाम पर युवा लड़के-लड़कियों को मारने को जघन्य अपराध मानते हुए कहा कि शीघ्र ही इसके लिए क़ानून लाया जाएगा । संसद में एक ध्यानाकर्षण प्रस्ताव का जवाब देते हुए पी॰ चिदम्बरम ने कहा कि इस तरह की घटनाएं परिवारों, समुदायों व देश का असम्मान है । खाप (जाति) पंचायत का नाम लिए बिना उन्होंने कहा कि चाहे व्यक्ति या सामूहिक रूप से समुदाय इस तरह की घटनाओं के लिए जो भी ज़िम्मेदार होगा उन्हें कड़ी सज़ा दी जाएगी । मंत्रियों का एक समूह इस ड्राफ़्ट बिल पर अभी काम कर रहा है । जल्दी ही यह ड्राफ़्ट तैयार करके इसी सत्र में पेश कर दिया जाएगा ।

विभिन्न जातियों में विवाह करने वाले नवविवाहितों की हत्या करना या उन्हें आत्महत्या के लिए प्रेरित करना जघन्य अपराध है । अलग क़ानून बने, आपराधिक क़ानून में नयी धारा जुड़े या भारतीय दंड संहिता को संशोधित किया जाए इस पर मंत्रिमंडल विचार करेगा । संसद में सभी प्रमुख दलों ने इसके लिए कड़े क़ानूनी प्रावधान की मांग की और इसे शर्मनाक बताया । परिवार वाले ही अपने प्रिय बच्चों को मारते हैं या मरने को मजबूर करते हैं इससे गंभीर बात क्या हो सकती है । दूसरी तरफ़ सत्ताधारी दल कांग्रेस के सांसद वीरेंद्र सिंह ऑनर किलिंग में खाप पंचायत को साफ़ बचाने के बयान दे रहे हैं । प्रमुख जाट नेता राज्यसभा के सांसद का कहना है इस तरह की किलिंग में खाप पंचायत की कोई भूमिका नहीं है । उनका कहना है कि इसके लिए लड़के-लड़कियों के परिवार ज़िम्मेदार हैं ।

मज़ेदार बात है कि खाप पंचायत द्वारा इस तरह के विवाहों को अवैध घोषित करने, लड़के-लड़कियों के परिवार को जाति या गांव से बाहर करने व धर्मादेश जारी करके विवाहित जोड़ों को अलग करने, उन्हें भाई-बहन की तरह रहने जैसे आदेशों के कारण नवविवाहित जोड़ों द्वारा आत्महत्या या परिवार द्वारा हत्या में वे अपने आपको साफ़ बचा लेना चाहते हैं जो संभव नहीं है । मारना व मरने के लिए प्रेरित करने में ज़्यादा फ़र्क़ नहीं है । मनोज-बबली की हत्या के मामले में अभी कुछ दिन पहले करनाल की अदालत ने जाति पंचायत के तीन लोगों को आजीवन कारावास की सज़ा सुनायी थी । कोई सीधे-सीधे हत्या न करे या आदेश न दे पर दूसरी तरह की प्रताड़ना देकर वे हत्या के भागीदार बन जाते हैं ।

दूसरी तरफ़ सर्व जाट महापंचायत ने केन्द्र को ऑनर किलिंग के लिए नया क़ानून बनाने के ख़िलाफ़ चेतावनी दी है । उसके बजाए उन्होंने मांग की है कि हिन्दू विवाह अधिनियम 1955 में संशोधन करके सगोत्र विवाहों पर रोक लगाई जाए । रोहतक में 180 खाप पंचायतों के नेताओं ने घोषणा की कि यदि केन्द्र 7 नवम्बर तक यह संशोधन नहीं लाएगा तो विरोध प्रदर्शन किये जाएंगे । यह भी कहा कि जो लोग ऑनर के लिए मार रहे हैं उन्हें सज़ा देना ग़लत है । जनवादी महिला समिति का कहना है कि केवल संशोधन से काम नहीं चलेगा । इस तरह की हत्याओं को रोकने के लिए अलग क़ानून लाना होगा । उन्होंने इस संदर्भ में एक ज्ञापन क़ानून मंत्री वीरप्पा मोइली को दिया और एक विस्तृत ड्राफ्ट बिल बनाकर दिया । इस क़ानून में सब तरह की प्रताड़ना इच्छा से शादी को दबाना, उनके इधर-उधर जाने पर रोक आदि को अपराध मानकर क़ानून के दायरे में लाने की बात कही । जो अपराधी हैं वे ही सिद्ध करेंगे कि उन्होंने अपराध नहीं किया । जो नवयुगल सरकारी अधिकारी के समक्ष घोषणा करें कि वे शादी करना चाहते हैं उनकी रक्षा करनी होगी । क़ानून में सारे समुदाय या खाप पंचायत को दोषी मानकर सज़ा देने की बात को लागू करना बहुत मुश्किल है । अभी इन सब मुद्दों पर कमेटी विचार कर रही है । अंतिम ड्राफ्ट क्या बनता है उसके बाद पता लगेगा कि इसमें कितनी ताक़त है । इस बीच 4 अगस्त को सर्वोच्च न्यायालय ने 1991 में ऑनर के नाम पर परिवार के 6 व्यक्तियों की मौत के लिए ज़िम्मेदार तीन आरोपियों को आजीवन कारावास की सज़ा सुनायी है । उन्होंने इलाहाबाद उच्च न्यायालय के निर्णय को पलट दिया जबकि ट्रायल कोर्ट ने मृत्युदंड की सज़ा सुनायी थी, परन्तु 2002 में हाईकोर्ट ने उन्हें छोड़ दिया इस कारण अब 2010 में उन्हें मृत्युदंड देना ठीक नहीं है । हालांकि यह अपराध जघन्य है । प्रत्येक व्यक्ति पर 25000 रुपये का जुर्माना लगाया ।

(विविधा फीचर्स)

एंटीबायोटिक दवाओं के प्रति सावधानी बरतें

पूरी दुनिया में एलोपैथी में एंटीबायोटिक दवाएं हकीम लुक़मान का नुस्ख़ा बन गयी हैं । ज़्यादातर डॉक्टर आंख मूंद कर इनका इस्तेमाल कर रहे हैं । वे सिर्फ़ संदेह या अनुमान के आधार पर, बीमारी की पहचान किये बग़ैर अंधेरे में ही तीर छोड़ते हैं और अपने नुस्ख़े में कुछ एंटीबायोटिक दवाएं लिख देते हैं ।

इनके अंधाधुंध इस्तेमाल के कारण आज दो तरह के ख़तरे पैदा हो गये हैं । सटीक इस्तेमाल नहीं करने पर ये दवाएं लाभ की बजाय नुक़सान पहुंचाने लगी हैं । दूसरी तरफ़ कई गंभीर बीमारियों के रोगाणुओं ने इनके प्रति प्रतिरोधक क्षमता विकसित कर ली है । न्यू डेलही मेटालो-1 (एन॰डी॰एम॰-1) का मामला इसकी मिसाल है कि किस तरह कोई बैक्टीरिया (या कोई और माइक्रोऑर्गनिज़्म) अपने भीतर दवाओं से लड़ने की ताक़त पैदा कर लेता है । फ़िलहाल दुनिया में ऐसे कई बैक्टीरिया चिन्हित किये जा चुके हैं, जिन पर किसी एंटीबायोटिक का कोई असर नहीं होता । तो क्या मॉडर्न मेडिसिन का आधार कहे जाने वाले एंटीबायोटिक्स का दौर ख़त्म हो रहा है ?

आधुनिक चिकित्सा कही जाने वाली एलोपैथी में एंटीबायोटिक दवाओं का अतीत सौ साल से ज़्यादा पुराना नहीं है । 1928 में स्कॉटिश साइंटिस्ट अलेक्जेंडर फ्लेमिंग द्वारा सिफ़लिस के इंफैक्शन को ख़त्म करने वाली दवा पेंसिलिन की खोज के साथ चिकित्सा का एक नया अध्याय शुरू हुआ था । 1942 में अमेरिकन माइक्रोबायलॉजिस्ट सेल्मान वाक्समैन ने उन पदार्थों को, जो बैक्टीरिया को मारते हैं और उनकी बढ़वार रोकते हैं, एंटीबायोटिक नाम दिया । इसके बाद डॉक्टर इन्हें अपने प्रेस्टिप्शन में बाक़ायदा सुझाने लगे थे । उस समय ये दवाएं किसी चमत्कार से कम नहीं मानी गयी थीं । आज दुनिया में सालाना 25 अरब डॉलर से ज़्यादा की एंटीबायोटिक और एंटीफंगल दवाएं बिकती हैं । इनमें मरीज़ों को दी जाने वाली दवाओं के अलावा टूथपेस्ट, घर की साफ़-सफ़ाई के लिए, सेब जैसी क़ीमती फ़सलों पर छिड़काव में इस्तेमाल होने वाले और जानवरों को चारे से पैदा होने वाले इशरिचिया कोलाई जैसे इंफैक्शनों से बचाने वाले एंटीबायोटिक्स भी शामिल हैं । बीसवीं सदी के छठे दशक से एंटीबायोटिक के इस्तेमाल ने पूरी दुनिया में काफ़ी ज़ोर पकड़ा और धीरे-धीरे डॉक्टर अपने आले से ज़्यादा भरोसा एंटीबायोटिक्स पर करने लगे । दूसरी तरफ़ बीमारियों के बैक्टीरिया ने भी विभिन्न कारणों से इन दवाओं के ख़िलाफ़ प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाकर अपने दांत पैने कर लिए ।

इन दवाओं के ख़िलाफ़ बैक्टीरिया के ताक़तवर होते जाने के कुछ कारण तो साफ़ दिखायी देते हैं । पहली वजह डॉक्टरों द्वारा इनके अंधाधुंध इस्तेमाल की है । योग्य डॉक्टर सामान्य सर्दी-ज़ुकाम में एंटीबायोटिक की सलाह हरगिज़ नहीं देते, पर मरीज़ के आग्रह पर कुछ डॉक्टर ऐसी ग़लती कर बैठते हैं । कुछ डॉक्टर फ़ार्मा कंपनियों के प्रलोभन में कई बार नये, महंगे और ज़्यादा ताक़त वाले एंटीबायोटिक अपने मरीज़ों को सुझाते हैं । मामूली इंफैक्शनों के लिए जब ज़्यादा ताक़त वाले एंटीबायोटिक बार-बार दोहराये जाते हैं, तो उनके ख़िलाफ़ प्रतिरोधी क्षमता आसानी से विकसित हो जाती है ।

ब्रिटिश हेल्थ प्रोटेक्शन एज़ेंसी (एच॰पी॰ए॰) के डॉक्टर लिवरमूर का कहना है कि अगर किसी मरीज़ की बीमारी की सही जांच हुए बग़ैर कोई डॉक्टर उसे 48 घंटे तक एंटीबायोटिक दवाएं देता है, तो यह बेहद ख़तरनाक बात है । इससे संबंधित शोध अध्ययनों में बताया गया है कि न्यूमोनिया जैसी बीमारी में सही कारण जाने बग़ैर ऐसे किसी इलाज से अस्पताल में ही मरीज़ की मृत्यु का ख़तरा दोगुना तक बढ़ जाता है ।

अमेरिका की रॉकफेलर यूनीवर्सिटी के माइक्रोबायलॉजिस्ट अलेक्जेंडर टोमाज इसे 'मेडिकल डिजास्टर' कहते हैं । वे बताते हैं कि 1992 में अमेरिकी अस्पतालों में 19 हज़ार और अस्पतालों के बाहर 58 हज़ार मौतें ऐसी ही लापरवाहियों के

कारण हुईं । इसी तरह का एक आंकड़ा थॉमस हुसलर ने भी अपनी किताब 'वायरसेज वर्सस सुपरबग्स' में दिया है कि 2005 में अमेरिका में 20 लाख लोग इंफैक्शनों की चपेट में आये, जिनमें से 90 हज़ार की मौत हो गयी । एंटीबायोटिक दवाओं की असफलता का यह ज्वलंत उदाहरण है ।

तो किया क्या जाए ? क्या एंटीबायोटिक दवाओं के इस्तेमाल पर तुरंत रोक लगायी जाए ? शायद ऐसा करना ठीक न हो, क्योंकि ऐसा करके हम प्री-पेंसिलिन एज में पहुंच जाएंगे जहां इंफैक्शन से लड़ने की कोई युक्ति हमारे हाथ में नहीं होगी । डॉ॰ लिवरमूर के अनुसार ज़्यादा बेहतर तरीक़ा हायजीन यानी स्वच्छता को एक हथियार के रूप में अपनाने का हो सकता है । लोग संक्रमणों को लेकर जागरूक बनें, हाथ धोने को लेकर संजीदा हों और सिर्फ़ दफ़्तर और अस्पताल में ही नहीं, खाना बनाते समय अपने किचन में और कहीं भी खाना खाते समय साफ़-सफ़ाई का पूरा ख़याल रखें । जब इंफैक्शन ही नहीं होगा, तो एंटीबायोटिक लेने की नौबत भी नहीं आएगी ।

दूसरी अहम बात एंटीबायोटिक दवाओं के सजग इस्तेमाल की नीति बनाना है । लैंसेट में एन॰डी॰एम॰-1 की चेतावनी देने वाले लेख से जुड़े रिसर्चरों में से एक यूनीवर्सिटी ऑफ़ मद्रास के कार्तिकेयन कुमारस्वामी ने भी यूनिफार्म एंटीबायोटिक पॉलिसी बनाने की बात कही है । उनके अनुसार, जब तक नये एंटीबायोटिक नहीं बना लिए जाते हैं (जिसमें कई साल लग सकते हैं) तब तक इन दवाओं के सही इस्तेमाल के तौर-तरीक़े बनाने की ज़रूरत है ।

यह भी ज़रूरी है कि समय-समय पर इन दवाओं के ख़िलाफ़ संबंधित बैक्टीरिया में प्रतिरोधी क्षमता के विकास का स्तर जांचा जाए । एक सावधानी यह भी रखी जाए कि केमिस्ट की दुकानों पर ये दवाएं डॉक्टर की पर्ची के बग़ैर न मिलें । डॉक्टरों को इस बारे में सचेत किया जाए कि वे मरीज़ की हालत, उसकी टेस्ट रिपोर्टों के अध्ययन, उसकी बीमारी के इतिहास और उसे दी जा चुकी दवाओं की जानकारी लिए बग़ैर कोई भी एंटीबायोटिक हरगिज़ प्रेस्क्राइब न करें ।

–संजय वर्मा

(साभार : नभाटा)

कैरियर

इंटरव्यू के समय ध्यान रखें

❖ **ज़िल्ले रहमान**

● इंटरव्यू में सवालों का उत्तर देते समय इन बातों का ध्यान रखिये कि आपको अपनी बात सीमित वक़्त में साफ़ व कम से कम शब्दों में कहनी होती हैं । अपनी बातों को ज़्यादा घुमाएं-फिराएं नहीं, क्योंकि ऐसा करने से आप अपना फोकस खो सकते हैं । साथ ही अपने आपको संतुलित रखें व दूसरों को देखकर घबराएं नहीं ।

● अपना होमवर्क पूरा करके जाएं । मसलन, आपको कोर्स के बारे में पूरी जानकारी होनी चाहिए । बेहतर होगा कि आप पहले से ही इस कोर्स को कर रहे किसी छात्र से बात कर लें ।

● अपने पहनावे और बातचीत के अंदाज़ पर ध्यान दीजिए । चूंकि अब आप कॉलेज में पढ़ने जा रहे हैं, इसलिए आपके हाव-भाव से बचपना नहीं झलकना चाहिए ।

● बात करते समय 'लाइक' 'यू नो' जैसे शब्दों से बचिए ।

● अपनी बॉडी लैंग्वेज में भी प्रोफेशनल अंदाज़ रखिए ।

● अपनी बात को सही तरीक़े से रखिए यह ज़रूरी नहीं कि इंटरव्यू लेने वाला जो कहेगा, वही सही होगा । कई बार आपकी नॉलेज को परखने के लिए आपके सामने ग़लत तथ्य भी रख दिये जाते हैं ।

● अपनी जनरल नॉलेज को अप-टू-डेट रखिए ।

● अगर आपको कोई जवाब नहीं आता या आप कुछ ग़लत कह गये हैं, तो सभ्य तरीक़े से कह दीजिए या माफ़ी मांग लीजिए ।

● इंटरव्यू के समय आप से भी कुछ पूछने को कहा जा सकता है, इसलिए इसके लिए भी तैयार रहें ।

डॉ॰ ज़ाकिर हुसैन

● संपादन प्रभाग

डॉ॰ ज़ाकिर हुसैन का जन्म 8 फ़रवरी 1897 ई॰ को उत्तर प्रदेश के फ़र्रूख़ाबाद ज़िले में हुआ था । उनके पिता फ़िदा हुसैन ख़ान वकालत की पढ़ाई पूरी करके हैदराबाद चले गये थे । दुर्भाग्य से जल्द ही उनकी मृत्यु हो गयी । मृत्यु के समय ज़ाकिर हुसैन की उम्र केवल 10 वर्ष थी ।

डॉ॰ ज़ाकिर हुसैन ने इस्लामिया हाईस्कूल इटावा (उ॰प्र॰) से फ़ारिग़ होने के बाद एम॰ए॰ओ॰ कॉलेज, अलीगढ़ से एम॰ए॰ किया और वहीं शिक्षक भी बन गये । यह वही ज़माना था, जब इंडियन नेशनल कांग्रेस और ऑल इंडिया ख़िलाफ़त कमेटी आपस में मिलकर गांधी जी के असहयोग आन्दोलन को हवा दे रहे थे । छात्रों और शिक्षकों की एक बड़ी संख्या इस आन्दोलन में शरीक हो रही थी । डॉ॰ ज़ाकिर हुसैन जो कि छात्रों एवं शिक्षकों दोनों में काफ़ी लोकप्रिय थे इस आन्दोलन में कूद पड़े ।

इन्हीं दिनों डॉ॰ ज़ाकिर हुसैन साहब हकीम अजमल ख़ान को यह समझाने में सफल रहे कि राष्ट्रीय स्तर पर भी अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय जैसा कोई शैक्षणिक संस्थान बनाया जाना चाहिए और इस तरह 29 अक्तूबर 1920 को जामिया मिल्लिया इस्लामिया, नयी दिल्ली अस्तित्व में आया । 1923 में अपनी आगे की पढ़ाई के लिए वे जर्मनी के यूनीवर्सिटी ऑफ़ बर्लिन चले गये । मार्च 1926 में वे डॉक्टर बनकर वापस हुए और जामिया के उपकुलपति (Vice-Chancellor) बने । 1938 में वे हिन्दुस्तानी तालीमी संघ, सेवाग्राम के अध्यक्ष चुने गये । इस पद पर वे 1948 तक रहे ।

नवम्बर 1948 में वे अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय के उपकुलपति बने । वे इंडियन यूनीवर्सिटीज़ कमीशन के सदस्य भी मनोनीत किये गये । वर्ल्ड यूनीवर्सिटी सर्विस ने उन्हें इंडियन नेशनल कमेटी का चेयरमैन नियुक्त किया । 1954 में वे अन्तर्राष्ट्रीय अध्यक्ष चुन लिए गये । इसी साल वे राज्यसभा के सदस्य चुने गये । 1957 में वे बिहार के राज्यपाल बने । 1962 में वे देश के तीसरे राष्ट्रपति चुने गये । इसी पद पर रहते हुए 3 मई 1969 में उनकी मृत्यु हो गयी ।

डॉ॰ ज़ाकिर हुसैन को 1954 में पद्म विभूषण अवार्ड से सम्मानित किया गया । 1963 में वे भारत रत्न बने । उन्हें दिल्ली, कलकत्ता, इलाहाबाद और कायरो विश्व- विद्यालय ने उन्हें डी॰ लिट्ट की उपाधि से नवाज़ा ।

डॉ॰ ज़ाकिर हुसैन को भारतीय सभ्यता एवं संस्कृति से गहरा लगाव था । सूफ़ीवाद का उन पर अच्छा असर था । वे एक धार्मिक व्यक्ति थे ।

धार्मिक व्यक्ति होते हुए भी वे पक्के सेक्युलर कहलाए । उनका मानना था कि एक धार्मिक व्यक्ति ही अस्ल में सेक्युलर हो सकता है । नास्तिक कभी सेक्युलर नहीं हो सकता । हर धर्म के मानने वालों में वे लोकप्रिय थे ।

वे शिक्षा को जीवन-ज्योति मानते थे । वे कहा करते थे, "इल्म एक रौशनी है जिससे ज़ेहन में व्यापकता आती है । तंगनज़री दूर होती है और ज़िन्दगी में निखार आता है ।"



NEW EMPRESS MILLS

1st Phase Industrial Area BALOTRA-344022 (Raj.)

Visit us. www.Empress. com. E-mail : empresspoplin@hotmail.com

(M) SAYED PARWAN ALI 09214408133

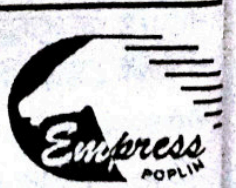

LILLY लिली गोल्ड GOLD

Superior Nighty

KAJAL काजल गोल्ड GOLD

MFG. OF : HIGHCLASS STANDARD POPLIN & NIGHTY PRINTS

गन्ना कितना लाभदायक ?

गर्मी के दिनों में पिये जाने वाले पेय पदार्थों में गन्ने का रस भी एक है । प्राकृतिक मिठास के स्रोत के रूप में शहद के बाद गन्ने को ही समझा जाता है । गन्ने के अभाव में तो हम मीठे की कल्पना ही नहीं कर सकते, हम अगर विचार करें तो गुड़, चीनी, शकर, बूरा, खांड, मिश्री और बताशे आदि सब इसी से बनते हैं और इनका मूल स्रोत गन्ने का रस है । यह कितने ही नामों से जाना जाता है परन्तु ईख और गन्ना इसका प्रचलित नाम है ।

इसके अतिरिक्त मीठी वस्तुओं के दूसरे स्रोत भी हैं जैसे मधुमक्खियों द्वारा तैयार किया शहद, ताड़ के रस से तैयार गुड़, अरब देशों में खजूर तथा कई देशों में शकरकंद से भी चीनी तैयार की जाती है । आजकल तो रासायनिक क्रिया के द्वारा ''सैकरिन'' भी तैयार की जा रही है । परन्तु जो स्वाद गन्ने के रस में है वह किसी दूसरे पदार्थ से प्राप्त नहीं होता ।

हमारे देश में यूनानी और आयुर्वेद में मीठे रसों से भोजन को शुरू करना और मीठे पदार्थों से ही भोजन का समापन करने का प्रचलन भी पाया जाता है । ऐसी ही अनेक प्रथाएं गुड़ के रस के महत्व को उजागर करती हैं ।

गन्ना पोटेशियम का अच्छा स्रोत है जो हमारे स्वास्थ्य के लिए अति आवश्यक है । गन्ने का रस पितनाशक तथा ठंडक (शीतलता) प्रदान करता है । यह क्षय रोग को नष्ट करता है । कच्चा गन्ना मस्तिष्क (दिमाग़) तेज़ करता है और यह कफ़ को बढ़ाता है । यह घाव को जल्दी अच्छा करता है । यह बुद्धि और बल प्रदान करता है ।

इसके रस को पका कर कई पदार्थ बनाये जा सकते हैं जैसे गुड़, राब, शकर, चीनी, मिश्री आदि इन पदार्थों के गुणों में भी अंतर होता है और स्वाद भी अलग-अलग होता है । जैसे पुराना गुड़ हल्का होता है यह ख़ून को साफ़ (स्वच्छ) करता है । अगर आप प्रतिदिन गुड़ और अदरक के रस का सेवन करें तो कफ़ समाप्त हो जाता है । गुड़ और हरड़ मिलाकर खाने से पित जाता रहता है । इस तरह गुड़ के खाने से कई बीमारी जाती रहती है । गर्मी के मौसम में शकर और चावल उत्तम माना जाता है । चीनी शरीर को ठंडक पहुंचाती है । यह रक्त को साफ़ करती है । खांड नेत्रों को लाभ पहुंचाती है, उल्टी होने पर लाभदायक है ।

पीलिया के रोग में गन्ने का रस लाभदायक है और पीलिया की अचूक दवा समझी जाती है । गन्ना चूसने से दांतों की कसरत होती है । इसके रस से तैयार सिरका गुणकारी होता है । गन्ने से रस निकालने के बाद जो फुज़ला (भाग) बच रहता है वह पशुओं के चारे के काम आता है । दैनिक जीवन में गर्मी के दिनों में गन्ने के रस के कई प्रकार से प्रयोग कर सकते हैं जैसे गन्ने के ताज़ा रस में नींबू और अदरक का रस, नमक, काली मिर्च मिलाकर एक स्वादिष्ट पेय आप बना सकते हैं इसका स्वाद अच्छे कोल्ड ड्रिंक से कहीं अच्छा होता है और इसके सेवन करने का लाभ तो होता ही है । फिर वह कहावत तो आपने सुनी ही है कि गुड़ खाइये और गुड़ जैसी बात कीजिए ।

मुहम्मद ख़लील

नयी दिल्ली

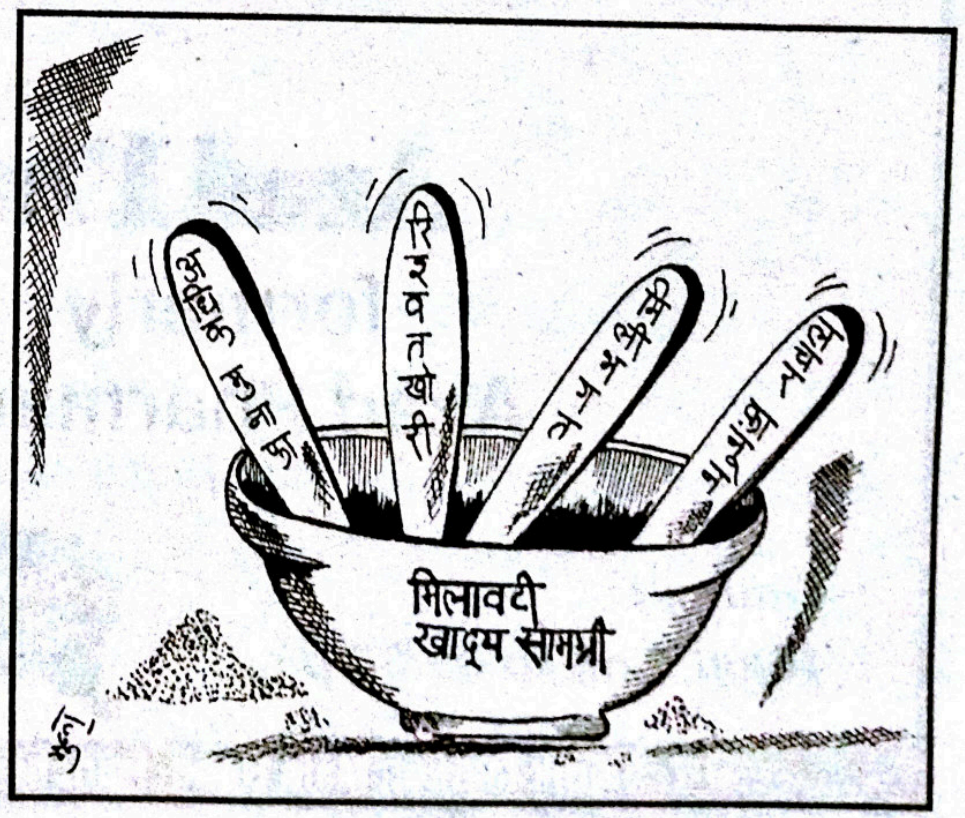

तरह-तरह के पौधे

कमल का फूल सूर्योदय के साथ खिलता है और सायंकाल होते-होते मुरझा जाता है तथा उसकी पंखुड़ियां स्वयं बन्द हो जाया करती हैं ।

सूरजमुखी के फूल का मुंह प्रातःकाल सूर्य की ओर होता है । दिन बीतने के साथ ही उसका मुंह दोपहर में ऊपर तथा सायंकाल पश्चिम दिशा में सूर्योन्मुख होता है ।

अफ़्रीका के आइवरी कोस्ट के जंगलों में एक ऐसा वृक्ष पाया जाता है, जिसके पत्ते दिन में फैलते और रात को सिकुड़ जाया करते हैं । रात में बन्द पत्तों वाला यह वृक्ष एक फुटबाल की तरह दिखायी पड़ता है ।

अमेरिका में एक ऐसा वृक्ष पाया जाता है जो हिलने पर मनुष्य के हंसने के समान आवाज़ उत्पन्न करता है ।

भारत में छुई-मुई नामक एक आश्चर्यजनक पौधा पाया जाता है । इसे छूते ही इसकी पत्तियां सिकुड़कर अपने आप सिमट जाया करती हैं तथा हाथ दूर करते ही इसकी पत्तियां पुनः खुल जाया करती हैं । इन पत्तियों का आकार इमली की पत्तियों जैसा होता है । एक ही समय में अलग-अलग जाति तथा प्रकार के 14 फूल देने वाला वृक्ष आश्चर्यजनक है जो देश के अनेक हिस्सों में पाया जाता है । इन फूलों के रंग, आकार तथा प्रकार भी भिन्न-भिन्न होते हैं ।

• विद्या प्रकाश

मुद्रक एवं प्रकाशक ख़लील अहमद द्वारा दावत ट्रस्ट (रजि०), D-314, दावत नगर, अबुल फ़ज़्ल इन्कलेव, जामिया नगर, नयी दिल्ली-110025 से प्रकाशित एवं भारत ऑफ़सेट, गली क़ासिम जान, बल्लीमारान, दिल्ली-6 से मुद्रित । फोन: 011-26949430

संपादक : डॉ० मुहम्मद अहमद

संस्था की लिखित अनुमति के बिना सम्पूर्ण या आंशिक पुनर्प्रकाशन पूर्णतः प्रतिबंधित है ।

With best compliments from:

Ph: 0651-2330144, 2330604
Mo. 09334706965

Azad Pharma
formerly
Azad Pharmacy

Timing :
10:00 a.m. to 09:00 p.m.

Sunday Closed

B-7, Sainik Market, Main Road, Ranchi-834001 (Jharkhand)

"और जब बीमार हो जाता हूं तो वही मुझे अच्छा करता है।" (क़ुरआन)

मेडिकेयर नर्सिंग एवं रिसर्च इंस्टीच्यूट

जवाहरनगर, ख़ान कॉम्प्लेक्स, मेन रोड, मानगो, जमशेदपुर

- डॉ॰ हामिद रज़ा ख़ान
  M.B.B.S. M.S. Leproscopy Surgery
- डॉ॰ अजय मिश्रा
  M.D. (Medicine) D.C.H.
- डॉ॰ वनीता सहाय (स्त्री रोग विशेषज्ञ)
- डॉ॰ ज्ञान प्रकाश जायसवाल
  M.S. Ortho
- डॉ॰ सैयद काशिफ़ अहमद
  B.D.S. Dental Surgeon
- डॉ॰ रीता कुमारी
  (स्त्री रोग विशेषज्ञ)
- डॉ॰ सुमित कुमार
  M.B.B.S. (RU)
- डॉ॰ मुहम्मद शकील अहमद
  M.B.B.S. M.D., AIIMS

❖ ओ॰पी॰डी॰ एवं इंडोर

❖ 24 घंटे दवा की दुकान खुली रहती है ।

❖ एक्सरे एवं ई॰सी॰जी॰

❖ ऑपरेशन थियेटर (सभी तरह के ऑपरेशन के लिए)

❖ अल्ट्रा सोनोग्राफ़ी मैटरनिटी-डिलेवरी सुविधाएं

❖ कम ख़र्च में बेहतरीन इलाज

❖ 24 घंटे डॉक्टर की सेवा उपलब्ध

Posted on 20-21 August 2010
September 2010
E-mail: kantidelhi@rediffmail.com
Publishing Date: 18.08.2010

हिन्दी मासिकों की मासिक पत्रिका
कान्ति

RNI 53372/91
DL(S)-01/3147/2009-2011
LICENSED TO POST WITHOUT PREPAYMENT
License No. U (SE)-73/2009-11



''पहुंचा दो मेरी ओर से चाहे एक ही आयत क्यों न हो''

—हज़रत मुहम्मद सल्ल०

कुरआन के महीने में कुरआन पहुंचाएं !

आइये ! अपने फ़र्ज़ मंसबी को अदा करें !!

आइये ! अल्लाह के रसूल (सल्ल०) की अज़ीम सुन्नत को अदा करें !!!

कुरआन और हदीस से यह बात साबित है कि अब क़ियामत तक कोई नबी या रसूल आने वाला नहीं है । क़ियामत तक आने वाले इन्सानों के लिए अल्लाह तआला मुकम्मल हिदायतनामा ''कुरआन मजीद'' के तौर पर दे चुका है । अब इस हिदायतनामा यानी कुरआन मजीद को पूरी इन्सानियत तक पहुंचाने की ज़िम्मेदारी मुस्लिम उम्मत की है । क्या हम इस ज़िम्मेदारी को अदा कर रहे हैं ? यदि नहीं तो तुरंत इसकी चिंता करें, इससे पहले कि अल्लाह हम से हिसाब ले।

अत: प्रत्येक मुसलमान यह प्रोग्राम बनाए कि

- वह अपने ग़ैर-मुस्लिम दोस्त या पड़ोसी या जिन ग़ैर-मुस्लिमों से ताल्लुक़ात हों, उन्हें अपने घर आमंत्रित करे और कुरआन मजीद का अज़ीम तोहफ़ा पेश करे ।
- यदि उन्हें घर नहीं बुला सकते हों तो उनके पास जाए और उनकी सेवा में कुरआन मजीद का तोहफ़ा पेश करे ।

SALAAM Centre
Head Office: # 65/1, 1st Main Road, S.R.K. Garden, JAYANAGAR EAST, Bangalore - 41
Branch: G.C., RICH HOMES, RICHMOND ROAD, Bangalore - 25, Cell: 99451 88488, 99451 77477
Email: salaamcentrebangalore@gmail.com www.salaamcentre.org